यू-ट्यूब पर HINDIBHASHAVANI को सब्स्क्राइब करें और
देखें विविध कार्यक्रम एवं वृत्तचित्र

ইউ-টিউব-এ HINDIBHASHAVANI চ্যানেল-এ সবস্ক্রাইব করুন
এবং দেখুন বিভিন্ন কার্যক্রম ও তথ্যচিত্র

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
उच्चतर शिक्षा विभाग
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली - 110066

Department of Correspondence Courses

CENTRAL HINDI DIRECTORATE

(Ministry of Education, Government of India)
Department of Higher Education,
West Block-7, R.K. Puram, New Delhi - 110066
Phone: 011-26105211
Website: www.chdpublication.mhrd.gov.in
www.chd.mhrd.gov.in

सत्यमेव जयते

हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम
(बांग्ला माध्यम)

হিন্দী ডিপ্লোমা পাঠ্যক্রম
(বাংলা মাধ্যম)

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
उच्चतर शिक्षा विभाग

পত্রাচার পাঠ্যক্রম বিভাগ

কেন্দ্রীয় হিন্দী নিদেশালয়

(শিক্ষা মন্ত্রালয়, ভারত সরকার)
উচ্চতর শিক্ষা বিভাগ

हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम

(बांग्ला माध्यम)

হিন্দী ডিপ্লোমা পাঠ্যক্রম

(বাংলা মাধ্যম)

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

पश्चिमी खंड-7, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली-110066

পত্রাচার পাঠ্যক্রম বিভাগ

কেন্দ্রীয় হিন্দী নিদেশালয়

শিক্ষা মন্ত্রালয়, ভারত সরকার

পশ্চিমী খন্ড-7, রামকৃষ্ণপুরম, নয়া দিল্লী-110066

© भारत सरकार

नया संस्करण - 2022

हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम (बांग्ला माध्यम)

प्रकाशक
पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
पश्चिमी खंड-7
रामकृष्ण पुरम
नई दिल्ली - 110066

© ভারত সরকার

নতুন সংস্করন – 2022

হিন্দী ডিপ্লোমা পাঠ্যক্রম (বাংলা মাধ্যম)

প্রকাশক
পত্রাচার পাঠ্যক্রম বিভাগ
কেন্দ্রীয় হিন্দী নিদেশালয়
পশ্চিম ব্লগু-7
রামকৃষ্ণপুরম
নয়া দিল্লী – 110066

দূরভাষ / দূরভাষ
91-11-26178454, 26105211/13/14

ফৈক্স / ফ্যাক্স
91-11-26100758, 26103160

বেবসাइट / ওয়েবসাইট
www.chd.educaton.gov.in
www.chdpublication.education.gov.in

संपादन मंडल

अध्यक्ष

प्रोफेसर नागेश्वर राव
निदेशक

मुख्य संपादक

श्रीमती मधु संदलेश
उप निदेशक एवं ब्यूरो प्रमुख

संपादक

डॉ. एस.एम. नूर अहमद
सहायक निदेशक

श्री आर. कन्दसामी
तकनीकी सहायक

भाषा विशेषज्ञ

डॉ. सुब्रत्त लाहिड़ी
प्रो. सुधा सिंह
डॉ. श्रीपर्णा तरफदार
श्रीमती सुलेखा बैनर्जी
श्रीमती मौमिता बसाक

मुद्रण व्यवस्था

श्री आर.एस. मीणा
उप निदेशक
श्री अमरजीत सिंह गुलाटी
सहायक निदेशक

সম্পাদক মণ্ডল

অধ্যক্ষ

প্রো. নাগেশ্বর রাও
নিদেশক

মুখ্য সম্পাদক

শ্রীমতী মধু সন্দলেস
উপ নিদেশক এবং ব্যূরো প্রমুখ

সম্পাদক

ড: এস.এম. নূর অহমদ
সহায়ক নিদেশক

শ্রী আর. কন্দসামী
প্রযুক্তি সহায়ক

ভাষা বিশেষজ্ঞ

ড: সুব্রত লাহিরী
প্রো. সুধা সিং
ড: শ্রীপর্ণা তরফদার
শ্রীমতী সুলেখা বানর্জী
শ্রীমতী মৌমিতা বসাক

মুদ্রণ ব্যবস্থা

শ্রী আর.এস. মীণা
উপ নিদেশক
শ্রী অমরজিত সিং গুলাটী
সহায়ক নিদেশক

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

उच्चतर शिक्षा विभाग

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

पश्चिमी खंड-7, रामकृष्ण पुरम
नई दिल्ली-110066 (भारत)

प्रिय छात्र / छात्रा,

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग के हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम में हम आपका स्वागत करते हैं। इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य आपको हिंदी भाषा, साहित्य तथा भारतीय संस्कृति से परिचित कराना है। हमें पूर्ण आशा और विश्वास है कि इस पाठ्यक्रम द्वारा आप हिंदी भाषा और साहित्य के बारे में पर्याप्त ज्ञान अर्जित कर सकेंगे।

हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम में कुल बीस पाठ एवं उनसे संबंधित बीस उत्तर पत्र (Response Sheets) हैं। पाठों का सम्यक अध्ययन करने के पश्चात आप उससे संबंधित उत्तर पत्र को पूरा करके यथाशीघ्र हमारे कार्यालय में मूल्यांकन के लिए भेजें, जिनका निदेशालय द्वारा मूल्यांकन किया जाएगा। आपके उत्तर पत्रों के द्वारा ही हम आपके सम्मुख आनेवाली कठिनाइयों को समझ सकेंगे और उनको दूर करने के लिए समय समय पर आपको आवश्यक सहायक सामग्री तथा उचित मार्गदर्शन भी देते रहेंगे।

हिंदी ज्ञानार्जन में आपको सफलता प्राप्त हो,

इसी शुभकामना के साथ,

प्रो. नागेश्वर राव
निदेशक

পত্রাচার পাঠ্যক্রম বিভাগ

কেন্দ্রীয় হিন্দী নির্দেশালয়

উচ্চতর শিক্ষা বিভাগ

শিক্ষা মন্ত্রালয়, ভারত সরকার

পশ্চিমী খন্ড-7, রামকৃষ্ণপুরম

নয়া দিল্লি-110066 (ভারত)

প্রিয় ছাত্র/ছাত্রী,

হিন্দী ডিপ্লোমা পাঠক্রমে আপনাদের স্বাগত জানাই। এই পাঠ্যক্রমের মাধ্যমে হিন্দী ভাষা, সাহিত্য ও ভারতীয় সংস্কৃতির সঙ্গে আপনাদের পরিচয় করানোই একমাত্র উদ্দেশ্য। আমার দৃঢ় বিশ্বাস যে এই পাঠ্যক্রম শেষ করার পর আপনারা হিন্দী ভাষা ও সাহিত্য সম্পর্কে যথেষ্ট জ্ঞান অর্জনে সক্ষম হয়ে উঠবেন।

হিন্দী ডিপ্লোমা পাঠ্যক্রমে 20টি পাঠ ও 20টি উত্তরপত্র আছে। পাঠগুলি অধ্যয়ন করে উত্তরপত্রগুলি যথাযথ ভাবে পূরণ করে নির্দেশালয়ে মূল্যায়নের জন্য পাঠাবেন। উত্তরপত্র নির্দেশালয় দ্বারা মূল্যায়ন করা হবে। এগুলির ভিত্তিতেই আমরা আপনাদের সমস্যাগুলো বুঝতে পারব এবং সেইমতো প্রয়োজনীয় নির্দেশাদি দিয়ে আবশ্যক সহায়ক সামগ্রী পাঠাতে পারব।

আশা করি যে হিন্দী বিষয়ে জ্ঞান অর্জনে আপনারা সাফল্য লাভ করবেন।

শুভেচ্ছা সহ,

প্রো. নাগেশ্বর রাও
নিদেশক

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

उच्चतर शिक्षा विभाग

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

पश्चिमी खंड-7, रामकृष्ण पुरम
नई दिल्ली-110066 (भारत)

प्रिय छात्र / छात्रा,

हिंदी के डिप्लोमा पाठयक्रम में आपका स्वागत है। इस पाठ्यक्रम में कुल बीस पाठ और उनके उत्तर पत्र हैं। इस पाठयक्रम में हम विभिन्न शैलियों में हिंदी के व्यावहारिक स्वरूप से आपको परिचित कराना चाहते हैं। यह विभिन्न स्थितियों में भाषा के प्रयोजनपरक पक्ष को समझने में आपकी सहायता करेगा। इसके लिए विविध विधाओं के पाठ और हिंदी व्याकरण की जानकारी दी गई है। हमारा यह प्रयास रहेगा कि इन बीस पाठों के माध्यम से उक्त बिंदुओं को आप भली-भाँति समझ सकें।

आपसे अपेक्षा है कि आप अपने अध्ययन की कार्य योजना स्वयं निर्धारित करें, उत्तर पत्र पूरे करें और उन्हें निम्नलिखित विवरणानुसार वापस निदेशालय भेज दें -

1. उत्तर पत्र 1 से 4 तक 31 अक्तूबर तक
2. उत्तर पत्र 5 से 8 तक 30 नवंबर तक
3. उत्तर पत्र 9 से 12 तक 31 दिसंबर तक
4. उत्तर पत्र 13 से 16 तक 31 जनवरी तक
5. उत्तर पत्र 17 से 20 तक फरवरी के अंतिम सप्ताह तक

(हर हाल में उत्तर पत्रों की अंतिम खेप निदेशालय में 31 मार्च से पूर्व अवश्य पहुँच जानी चाहिए।)

कृपया ध्यान दें कि उत्तर पत्रों में आपके प्रदर्शन के आधार पर ही हम आपको उपयोगी निर्देश, टिप्पणियाँ और सुधारात्मक सुझाव दे सकेंगे।

डिब्लोमा पाठ्यक्रम की परीक्षाएँ विभिन्न केंद्रों पर प्रतिवर्ष मई के महीने में आयोजित की जाती हैं। परीक्षा में दो प्रश्न पत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा। उत्तर पत्रों (ऊत्तर पत्र) में आपके अर्जित अंक का प्रतिशत डिप्लोमा की मुख्य परीक्षा परिणाम के साथ जोड़े जाएँगे ।

श्रीमती मधु संदलेश
उप निदेशक एवं ब्यूरो प्रमुख
पत्राचार पाठयक्रम विभाग

পত্রাচার পাঠ্যত্র ম বিভাগ

কেন্দ্রীয় হিন্দী নির্দেশালয়

উচ্চতর শিক্ষা বিভাগ

শিক্ষা মন্ত্রালয়, ভারত সরকার

পশ্চিমী খন্ড-7, রামকৃষ্ণপুরম,
নয়া দিল্লী-110066 (ভারত)

প্রিয় ছাত্র/ছাত্রী,

হিন্দী ডিপ্লোমা পাঠ্যত্র মে আপনাদের সবাইকে স্বাগত জানাই। এই পাঠ্যত্র মে মোট কুড়িটি পাঠ ও তার উত্তরপত্র আছে। এই পাঠ্যত্র মের মাধ্যমে বিভিন্ন শৈলীতে হিন্দীর ব্যবহারিক রূপের সাথে আপনাদের পরিচয় করাতে চাই। ফলে, বিভিন্ন পরিস্থিতিতে ভাষার প্রয়োজনমূলক দিক বুঝতে আপনাদের সাহায্য করবে। সেজন্য বিভিন্ন বিধার পাঠ ও হিন্দী ব্যকরণ সম্পর্কে শেখান হয়েছে। এই কুড়িটি পাঠের মাধ্যমে উক্ত বিষয়গুলি আরো ভালভাবে যাতে আপারা জানতে পারেন, সেই চেষ্টাই করা হয়েছে।

আপনাদের কাছে একান্ত আশা যে আপনারা নিজেদের কর্মসূচী নিজেরাই নির্ধারিত করে উত্তরপত্র সম্পূর্ণ করবেন এবং নির্দেশ অনুসারে নির্দেশালয় পাঠিয়ে দেবেন :–

উত্তরপত্র সংখ্যা	সময়সীমা
1. উত্তরপত্র ১ থেকে ৪	(৩১ অক্টোবরের মধ্যে)
2. উত্তরপত্র ৫ থেকে ৮	(৩০ নভেম্বরের মধ্যে)
3. উত্তরপত্র ৯ থেকে ১২	(৩১ ডিসেম্বরের মধ্যে)
4. উত্তরপত্র ১৩ থেকে ১৬	(৩১ জানুয়ারীর মধ্যে)
5. উত্তরপত্র ১৭ থেকে ২০	(২৮ ফেব্রুয়ারীর মধ্যে)

(অপরিহার্য পরিস্থিতিতে 31শে মার্চের আগে উত্তরপত্রের শেষ ভাগ অবশ্যই পাঠিয়ে দিতে হবে।)

মনে রাখবেন যে, উত্তরপত্রে আপনার প্রদত্ত উত্তর অনুসারে আমরা আপনাদের উপযুক্ত নির্দেশ, মন্তব্য ও সংশোধনের পরামর্শ দিতে পারবো।

প্রতি বছর মে মাসের মধ্যে বিভিন্ন কেন্দ্রে ডিপ্লোমা পাঠ্যক্রমের পরীক্ষা আয়োজিত হয়। প্রতিটি প্রশ্নপত্র 100 নম্বরের হয়। উত্তরপত্রের অর্জিত প্রাপ্তাংকের শতকরা নম্বর মুখ্য পরীক্ষা ফলের সাথে যুক্ত হবে।

শ্রীমতী মধু সন্দলেস

উপ নিদেশক ও ব্যুরো প্রধান

পত্রাচার পাঠ্যক্রম বিভাগ

अनुक्रम

पाठ सं.	विषय	विधा	पृष्ठ सं.
1	आइए, इनसे मिलें	कथात्मक	1
2	अतिथि का स्वागत	वार्तालाप	5
3	राजस्थान की सैर	वार्तालाप	11
4	मांडवा – रेगिस्तान का हीरा	कथात्मक	18
5	आइए, बाजार चलें।	वार्तालाप	26
6	बस टिकट	रेडियो–नाटक	35
7	मैं कमीज हूँ	आत्मकथा	48
8	पत्र लेखन	पत्र लेखन	56
9	बड़े भाई साहब	कहानी	76
10	ऐसे–ऐसे	नाटक	83
11	इंटरव्यू	साक्षात्कार	91
12	तुम कब जाओगे, अतिथि	व्यंग्य	101
13	मेरा बचपन	आत्मकथा	107
14	कार्यालय में बातचीत	वार्तालाप	112
15	निबंध लेखन	लेख	122
16	अनुवाद	अनुवाद	130
17	चंपा, पढ़ लेना अच्छा है	कविता	136
18	समाचार पत्र	पत्रकारिता	142
19	हम सब सुमन एक उपवन के	कविता	146
20	सार लेखन / संक्षेपण एवं पल्लवन	व्याकरण	151

पाठ / পাঠ-1

1.0 পাঠ - आइए, इनसे मिलें (कथात्मक / কথাত্মক)

2.0 শব্দাবলী

3.0 ব্যাকরণগত নোট

1.0 পাঠ आइए, इनसे मिलें (আসুন, এনার সাথে পরিচিত হই।)

সরবে পাঠ ক নঃ

1. दिल्ली के इंडिया गेट के पास शाम को जाने का मौका मिले तो वहाँ एक अधेड़ सज्जन को टहलते देख सकते हैं । सिर पर सफेद बाल, छोटी–छोटी मूँछें, हाथ में छड़ी और आँखों पर चश्मा । आप हैं डॉ. ऋषि कुमार । सुंदर नगर में उनका अपना क्लीनिक है । यहीं उन्होंने अपना नया मकान बनाया है । प्रैक्टिस अच्छी चलती है । उनके दो बच्चे हैं जो विदेश में रहते हैं । आस पास के लोग डॉक्टर साहब को जानते हैं ।

2. डॉक्टर कुमार आज सुबह जब टहल रहे थे, अचानक उन्हें अपने मित्र ब्रजभूषण की याद आ गई। ब्रजभूषण जी और डॉ. कुमार इलाहाबाद में एक ही स्कूल में पढ़ते थे। आज ब्रजभूषण साहब इलाहाबाद के एक मशहूर वकील हैं । उनकी पत्नी निर्मला इलाहाबाद के एक कॉलेज में प्राध्यापिका हैं । इधर कई महीनों से दोनों मित्रों की मुलाकात नहीं हुई थी । अपने वकील मित्र के बारे में सोचते हुए डॉ. कुमार घर वापस आए तभी उन्होंने देखा कि एक टैक्सी दरवाजे पर आकर रुकी और टैक्सी से श्री ब्रजभूषण अपनी पत्नी निर्मला के साथ उतरे । डॉ. कुमार उन्हें देखकर चकित हो गए ।

3. डॉ. कुमार और उनकी पत्नी इला ने उनका स्वागत किया और उनका हाल–चाल पूछा । ब्रजभूषण जी ने डॉ. कुमार से पूछा कि आप स्टेशन क्यों नहीं आए ? पर डाक्टर कुमार स्टेशन कैसे आते? उन्हें तो ब्रजभूषण जी के आने की सूचना मिली ही नहीं थी ।

4. बाद में डॉक्टर साहब की पत्नी इला को निर्मला से पता चला कि वे लोग होटल में ठहरे हैं, क्योंकि उनकी गाड़ी रात को देर से पहुँची थी । ब्रजभूषण जी ने विश्वास दिलाया कि अगली बार वे अवश्य ही सीधे घर आ जाएंगे ।

5. इस बीच कुमार साहब के मित्र रमेश का फोन आया । रमेश ने सूचना दी कि उसने राजस्थान घूमने का कार्यक्रम बनाया है, डॉ. कुमार भी साथ चलें । पर डॉ. कुमार जाना नहीं चाहते थे, क्योंकि उनके यहाँ मेहमान आए हुए थे । रमेश को पता चला कि मेहमान और कोई नहीं

इलाहाबाद के वकील श्री ब्रजभूषण और उनकी पत्नी हैं । रमेश ने तब ब्रजभूषण जी से बात की और घूमने का कार्यक्रम बनाया ।

2.0 শব্দাবলী

2.1 শব্দগুলি পড়ুন এবং পাঠের অর্থ বোঝার চেষ্টা ক ন।

অনুচ্ছেদ-1

मौका	সুযোগ
अधेड़	মধ্যবয়সী
सज्जन	ভদ্রলোক
टहलते हुए	পায়চারী
मूँछ (স্ত্রী)	গোঁফ
छड़ी (স্ত্রী)	ছড়ি
मकान	বাড়ি

অনুচ্ছেদ-2

अचानक	হঠাৎ
याद आना	মনে পড়া
मशहूर	বিখ্যাত
वकील	উকিল
पत्नी (স্ত্রী)	পত্নী
प्राध्यापिका (স্ত্রী) /	অধ্যাপিকা
प्राध्यापक (পুং)	অধ্যাপক
मुलाकात (স্ত্রী) /	সাক্ষাৎ / দেখা করা
भेंट (স্ত্রী)	দেখা হওয়া / করা
सोचना	ভাবা / চিন্তা করা
रुकना	থামা
उतरना	নামা

অনুচ্ছেদ-3

स्वागत करना	স্বাগত করা / অভ্যর্থনা
हाल–चाल पूछना	খোঁজ খবর নেওয়া
सूचना	তথ্য / জানানো

অনুচ্ছেদ-4

बाद में	পরে
विश्वास दिलाना	আ বস্ত করা

অনুচ্ছেদ-5

इस बीच	এর মধ্যে
कार्यक्रम बनाना	কর্মসূচী তৈরী করা
मेहमान	অতিথি
घूमना	বেড়ানো

2.2 পাঠটি মনে মনে পড়ুন।

2.3 সমার্থক শব্দ।

1. অচানক	একাএক	5. মুলাকাত	भेंट
2. चश्मा	ऐनक	6. मेहमान	अतिथि
3. सूचना	जानकारी	7. मौका	अवसर
4. मशहूर	प्रसिद्ध	8. स्वागत	सत्कार

2.4 সংক্ষেপীকরণ

প্রদত্ত পাঠে 'डॉक्टर' সংক্ষেপীকরণ 'डॉ.' করা হয়েছে। সাধারণতঃ হিন্দী ভাষায় ব্যবহৃত কিছু সংক্ষেপীকরণ নীচে দেওয়া হয়েছে :-

मिस्टर	=	मि.	कुमारी	=	कु.
पंडित	=	पं.	प्रोफेसर	=	प्रो.
संपादक	=	सं.	रुपया	=	रु.

2.5 সাংস্কৃতিক নোট

2.5.1 হালচাল পুছনা সাধারণতঃ দেখা হলে অথবা পারস্পরিক পত্রালাপে একে অপরের খবরা-খবর নেওয়া। একই অর্থে ব্যবহৃত অন্যান্য শব্দ হল 'कुशल-मंगल पूछना', 'कुशल-क्षेम पूछना'

2.5.2 অতিথি কা স্বাগত পাঠের শেষে প্রচলিত অভিব্যক্তি মূলক কিছু শব্দ দেওয়া হল যা একই প্রসঙ্গে ব্যবহৃত হয়ে থাকে।

3.0 ব্যাকরণগত নোট

3.1 বর্তমান কৃদন্ত টহলতে হুए

(i) বিশেষ্যের পূর্বে ব্যবহৃত বর্তমান কৃদন্ত-তা হুআ বিশেষণ রূপে ব্যবহৃত হয়।

টহলতা হুআ আদমী	ভ্রমণরত মানুষ
চলতী হুই গাড়ী	চলন্ত গাড়ী

এই ধরণের ব্যবহারে হিন্দীতে-তা বিশেষ্যের লিঙ্গ এবং বচন অনুযায়ী পরিবর্তিত হয়ে যায়।

(ii) ক্রি য়ার আগে বর্তমান কৃদন্তের যেকোন প্রয়োগ ক্রি য়া-বিশেষণ রূপে ব্যবহৃত হয়।

बच्चा खेलते हुए गिर पड़ा । খেলতে খেলতে

शीला टाइप करते हुए गा रही थी । টাইপ করতে করতে

(iii) কিন্তু, কর্মের পরে যখন 'को' যুক্ত হয় তখন শুধু 'ते हुए' ব্যবহৃত হয়।

1	2	3	4
आप	डॉ. कुमार को	टहलते हुए	देख सकते हैं ।
मैंने	सरला को	बाहर निकलते हुए	देखा ।
हमने	किसी चोर को	भागते हुए	नहीं देखा ।

3.2 'ये/वे' অর্থে 'आप' এর কার্যকরী ব্যবহার, যখন কারো পরিচয় করানো হয় তখন মধ্যম পু ষ সর্বনাম आप, ये অথবা वे পরিবর্তে आप-এর ব্যবহার সমীচীন। উদাহরণ ঃ

इनसे मिलिए, आप हैं डॉक्टर कुमार (ये हैं পরিবর্তে)।

हमारे मैनेजर साहब से मिलिए, आपका नाम राघवन है । (इनका পরিবর্তে)

डॉ. सरोजिनी हिंदी की प्राध्यापिका हैं । आपने दस किताबें लिखी हैं । (इन्होंने পরিবর্তে)

উপরে উল্লিখিত বাক্যগুলি ব্যাকরণগতভাবে সঠিক।

3.3 বিশেষ্য + ত্রি য়া দ্বারা সংরচিত যৌগিক রূপ নীচে দেওয়া হল :-

स्वागत + करना	স্বাগত করা	याद + होना	মনে করা/ হওয়া
मदद + करना	সাহায্য করা	मुलाकात + होना	দেখা হওয়া

এই ধরনের বিশেষ্য এবং ত্রি য়ার সমাহারে বিশেষ্য উপাদানের লিঙ্গ অনুযায়ী का অথবা की ব্যবহৃত হয়ে থাকে। যেমন -

डॉ. साहब ने ब्रजभूषण जी का स्वागत किया ।

हमें गरीबों की मदद करनी चाहिए ।

कई महीनों से दोनों मित्रों की मुलाकात नहीं हुई थी ।

शुक्रवार को हमारी मुलाकात होगी । (हम + की = हमारी)

— * —

पाठ / পাঠ-2

1.0 পাঠ - अतिथि का स्वागत (वार्तालाप/ কথোপকথন)

2.0 শব্দাবলী

3.0 নমুনা এবং ব্যবহার

4.0 কথোপকথনে প্রচলিত অভিব্যক্তির ব্যবহার

1.0 পাঠ अतिथि का स्वागत (অতিথির অভ্যর্থনা)

সরবে পাঠ ক ন।

1. (एक टैक्सी सड़क पर खड़ी है । ड्राइवर के अलावा उसमें दो व्यक्ति और बैठे हैं । उनमें से एक व्यक्ति पास खड़े हुए व्यक्ति से पूछ रहा है ।)

व्यक्ति : क्या आप जानते हैं, डॉ. कुमार का मकान कौन-सा है ?

दूसरा व्यक्ति : कौन ? डॉक्टर ऋषिकुमार ?

व्यक्ति : हाँ ! हाँ ! वे ही ।

दूसरा व्यक्ति : आप इस सड़क पर सीधे जाइए । फिर दाईं ओर मुड़िए । बस, बाईं ओर का तीसरा मकान उनका ही है । उनका बोर्ड भी लगा है ।

व्यक्ति : इसी सड़क पर न ? अच्छा, धन्यवाद । (ड्राइवर से) चलो भाई ।

(थोड़ी दूर चलने के बाद)

2. व्यक्ति : अच्छा । यहीं रोक दो । यह रहा उनका मकान । कितने पैसे ?

ड्राइवर : चार सौ पचास रुपए ।

व्यक्ति : ये लो पैसे ।

ड्राइवर : बहुत अच्छा, साहब ।

डॉ. कुमार : आइए, आइए एडवोकेट साहब। ओह! निर्मला जी भी हैं । नमस्ते निर्मला जी।

श्री और श्रीमती ब्रजभूषण : नमस्ते भाई साहब ।

ब्रजभूषण : अच्छा तो आप यहीं हैं ? मैंने तो सोचा था कि आप घर पर नहीं होंगे ।

डॉ. कुमार : क्यों भाई ? अपने आने की खबर तो दे देते । आइए... आइए... अंदर तो आइए। बाहर क्यों खड़े हैं ?

3. ब्रजभूषण : (अंदर आते हुए) क्या आपको मेरे आने की सूचना नहीं मिली ? मैंने तीन दिन पहले आपको मेल भेजा था ।

डॉ. कुमार : ओह ! इस बीच मैं मेल नहीं देख पाया । मेल देखता और मैं स्टेशन न आता ? (पत्नी को आवाज देते हुए) इला, देखो इलाहाबाद से एडवोकेट ब्रजभूषण जी और निर्मला जी आए हैं ।

इला : नमस्ते भाई साहब । नमस्ते निर्मला बहन । अंदर चलिए न। वहीं बैठेंगे ।

डॉ. कुमार : नहीं नहीं, यहीं ठीक है । पहले चाय-वाय तो पी लें । फिर बैठकर बातचीत करेंगे ।

इला : आप क्या पसंद करेंगे, ठंडा या गरम ?

ब्रजभूषण : कुछ भी चलेगा । मगर निर्मला को चाय ही पसंद है ।

4. इला : अरे ! आपका सामान कहाँ है ?

निर्मला : हम पास ही होटल में ठहरे हैं ।

इला : ऐसा क्यों ? क्या आप सीधे यहाँ नहीं आ सकते थे ? यह अच्छा नहीं किया।

निर्मला : नहीं दीदी । ऐसी कोई बात नहीं । रात को गाड़ी देर से आई । आपके घर का रास्ता भी इनको ठीक से मालूम न था । इसलिए हम होटल में ठहर गए।

डॉ. कुमार : चलिए, आपका सामान ले आएँ । कुछ दिन हमारे साथ रहिए ।

निर्मला : इस बार माफ कीजिए । अगली बार हम आपके यहाँ ही ठहरेंगे ।

5. ब्रजभूषण : भाई साहब, और सुनाइए । आपकी प्रैक्टिस कैसी चल रही है ?

डॉ. कुमार : ठीक ही चल रही है । आप अपनी सुनाइए ।

ब्रजभूषण : ठीक ही चल रही है, लेकिन आजकल वकालत में कोई मजा नहीं रहा ।

(श्रीमती इला चाय का प्रबंध करने अंदर चली जाती हैं । तभी मोबाइल की घंटी बजती है। डॉ. कुमार मोबाइल पर बात करने लगते हैं ।)

मोबाइल पर बातचीत

डॉ. कुमार : हाँ रमेश जी, नमस्कार । कहिए क्या खबर है ?

रमेश : सब ठीक है डाक्टर साहब । ऐसा है कि हम लोग राजस्थान के टूर पर जा रहे हैं । आप भी चलिए न, हमारे साथ ।

डॉ. कुमार : नहीं, भाई । अभी नहीं ।

रमेश : क्यों ?

डॉ. कुमार : ब्रजभूषण जी को तो जानते ही हो न ?

रमेश : कौन ? वही इलाहाबाद वाले ?

डॉ. कुमार : हाँ, हाँ । इलाहाबाद वाले ही । वे मेरे यहाँ आए हुए हैं ।

रमेश : तो क्या ? उन्हें भी साथ ले चलते हैं । जरा उनसे भी बात करवाइए। (डॉ. कुमार ब्रजभूषण जी को फोन पकड़ाते हैं।)

(श्रीमती इला चाय-नाश्ता लेकर आती हैं । सब लोग चाय-नाश्ता करने लगते हैं।)

ब्रजभूषण : अच्छा, डॉक्टर साहब । मैंने रमेश की बात मान ली है । हम भी कल आप लोगों के साथ चलेंगे । हमने भी राजस्थान नहीं देखा ।

डॉ. कुमार : चलो यह अच्छा कार्यक्रम बन गया ।

2.0 शब्दावली

2.1 नीचेर शब्दगुलि पड़ुन एवं पाठेर अर्थ बोझार चेष्टा क न।

अनुच्छेद – 1	
अतिथि	অতিথি
स्वागत	স্বাগত
सड़क (स्त्री)	রাস্তা
व्यक्ति	ব্যক্তি
सीधे जाना	সোজা যাওয়া
दाई ओर	ডানদিকে
मुड़ना	ঘোরা
बाई ओर	বাঁদিকে
तीसरा	তৃতীয়
धन्यवाद	ধন্যবাদ

अनुच्छेद– 2	
अच्छा	ভাল
रोकना	থামানো
चार सौ पचास	চারশো পঞ্চাশ
खबर (स्त्री)	খবর

अनुच्छेद – 3	
चाय-वाय*	চা-টা
पसंद करना	পছন্দ করা
ठंडा या गरम	ঠান্ডা অথবা গরম (পানীয়)
कुछ भी चलेगा	যা খুশী চলবে

অনুচ্ছেদ – 4		অনুচ্ছেদ – 5	
ঠহরনা	থাকা	और सुनाइए	আর বলুন
ऐसी कोई बात नहीं	এমন কোন ব্যাপার নয়	अपनी सुनाइए	আপনি বলুন
माफ कीजिए	ক্ষমা ক ন	मजा नहीं रहा	কোন মজা নেই
		प्रबंध	বন্দোবস্ত
		घंटी बजना	ঘণ্টা বাজা

*চায়–বায়-র প্রথম শব্দের প্রথম ব্যঞ্জন 'চ' দ্বিতীয় শব্দের প্রথম ব্যঞ্জন 'ব' দ্বারা প্রতিস্থাপিত হয়ে দ্বিতীয় শব্দটি গঠিত হয়েছে এবং প্রথম শব্দে ব্যঞ্জনে ব্যবহৃত স্বরধ্বনিটি যথাযথ বদলে গেছে। যেমন–রোটী–বোটী, খানা–বানা বাংলাতেও এই ধরনের প্রয়োগ হয়। যথা - টি-টুটি, খাওয়া-টাওয়া, পড়া-টড়া, বাজার-টাজার।

* কখনো কখনো নিকট ভবিষ্যত অর্থে অতীত কালের ত্রি য়াপদ প্রয়োগ করা হয়। যেমন :–

बैठिए, हम दो मिनट में आए ।

समझिए, आपका काम हो गया ।

2.2 নীরবে পাঠ ক ন।

2.3 শব্দ এবং বাক্যাংশের সাধারণ ব্যবহার :–

1.	माफ करना (ক্ষমা করা)	बेटे को अपनी गलती पर दुख हुआ । तब पिता ने उसे माफ कर दिया । माफ कीजिए, मुझे जल्दी जाना है ।
2.	ऐसा है कि (আসলে)	ऐसा है कि आजकल गाड़ियों में बड़ी भीड़ है, इसलिए रिजर्वेशन मिलना मुश्किल है ।
3.	मान लेना (স্বীকার করা / মেনে নেওয়া)	तुम अपनी गलती मान लो तो वे तुम्हें माफ कर देंगे । उसने मेरी बात मान ली । मान लो कि तुम्हारे पास एक लाख रुपए हैं ।
4.	इंतजार करना (অপেক্ষা করা)	सभा में लोग मुख्य अतिथि का इंतजार कर रहे थे ।

5.	मजा नहीं रहा (আনন্দ / মজা নেই)	महँगाई के कारण आजकल त्योहारों में वह मजा नहीं रहा जो पहले था ।

3.0 নমুনা এবং ব্যবহার ঃ

উপরোক্ত পাঠের বাক্যগুলির গঠন এবং তার ব্যবহার লক্ষ্য ক ন ঃ-

3.1 কর্তা + को - সহযোগ বাক্যগঠন।

(ক) হিন্দীতে সাধারণতঃ দৈহিক এবং মানসিক প্রবৃত্তি, অনুভূতি, প্রয়োজন, জ্ঞান অভিব্যক্ত করার জন্য কর্তার সাথে को যোগে বাক্য-গঠন করা হয়। যেমন :–

क्या आपको मेरा मेल (পুং) नहीं मिला ?

যখন কর্তার পরে 'को' যুক্ত হয় তখন ক্রি য়া কর্মের লিঙ্গ এবং বচন অনুসারে হয়।

मोहन को यह कहानी (স্ত্রী-এক) पसंद होगी ।

सरला को वही मकान (স্ত্রী-বহু) पसंद था ।

(খ) আরো কয়েকটি উদাহরণ লক্ষ্য ক ন।

पिता जी को यह जानकर खुशी (স্ত্রী) हुई ।

बच्चे को भूख (স্ত্রী) लगी ।

सरला को यह समाचार (পুং) सुनकर दुख हुआ ।

उनको आपका पता (পুং) मालूम नहीं था ।

3.2 'न' -এর ব্যবহারিক প্রয়োগ

(ক) 'न' সাধারণতঃ নিষেধ অর্থে ব্যবহৃত হয়।

अंदर न आइए ।	ভিতরে এসো না।
रुपया न मिले तो क्या करें ?	টাকা না পেলে কী করব ?

(খ) কিন্তু যখন 'न' অনুজ্ঞা সূচক হয় তখন সেটা বিশেষ আগ্রহ প্রকাশ করে।

अंदर आइए न ।	ভিতরে আসুন না
कुछ तो खाइए न ।	কিছু খান না।

(গ) কখনো কখনো 'ন' সদর্থক-রূপে ব্যবহৃত হয়। নীচে দেওয়া উদাহরণগুলি লক্ষ্য ক ন :–

खबर मिलती और मैं स्टेशन पर न आता।	নিশ্চিত অর্থে ঃ (मैं जरूर आता)
तुम बुलाते और वह न आती ।	নিশ্চিত অর্থে ঃ (वह जरूर आती)
आप बोलते और हम न मानते ।	নিশ্চিত অর্থে ঃ (हम जरूर मानते)

3.3 অতি বিনয়ের অর্থে –इएगा ভবিষ্যত অনুজ্ঞা-রূপে ব্যবহৃত হয়।

कुछ दिन हमारे यहाँ रहिएगा ।

निर्मला जी, आप भी आइएगा ।

वकील साहब, आज हमारे यहाँ खाना खाइएगा ।

4.0 কথোপকথনে প্রচলিত অভিব্যক্তি র ব্যবহার।

দৈনন্দিন কথোপকথনের কয়েকটি প্রচলিত অভিব্যক্তি র বাংলা সমার্থক দেওয়া হল ঃ

नमस्कार	নমস্কার
अरे रमेश, खूब मिले !	আরে রমেশ, বাঃ দেখা হয়ে গেল!
आइए, आइए बैठिए ।	আসুন, আসুন বসুন।
क्या हालचाल हैं ?	আর কী খবর?
सब ठीक तो है ? / सब कुशल तो है ? / सब खैरियत तो है ?	সব ভালো তো?
अच्छा हुआ, तुम/आप आ गए ।	ভালোই হল এসেছ / এসেছেন?
तुम, ठीक समय पर आ गए	তুমি ঠিক সময়ে এসেছ।
मैं तुम्हें/आपको अभी याद कर रहा था ।	তোমার / আপনার কথাই ভাবছিলাম।
तुम्हारी लंबी उम्र हो ।	দীর্ঘায়ু হও।
बधाई हो ।	অভিনন্দন
अच्छा अब चलें । अच्छा अब चला जाए।	ঠিক আছে, এবার উঠি?
अच्छा, धन्यवाद ।	আচ্ছা, ধন্যবাদ।
फिर मिलेंगे ।	আবার দেখা হবে।

পাঠ / পাঠ-3

1.0 পাঠ সম্পর্কিত

2.0 পাঠ - রাজস্থান কী সৈর (বার্তালাপ/কথোপকথন)

3.0 শব্দাবলী

4.0 নমুনা এবং ব্যবহার

1.0 পাঠ সম্পর্কিত

এই পাঠটি রাজস্থানের ঐতিহাসিক স্থান হরাবতী ভ্রমণ সম্পর্কিত। এই পাঠটি পূর্ববর্তী পাঠে উল্লিখিত দুটি চরিত্রের কথোপকথনের মাধ্যমে শু হয়েছে।

2.0 পাঠ - রাজস্থান কী সৈর (রাজস্থান ভ্রমণ)

সরবে পাঠ ক ন।

1. ডॉ. কুমার : क्यों रमेश ? अभी तक वकील साहब नहीं आए हैं । कहीं उनका प्रोग्राम तो नहीं बदल गया ?

   रमेश : नहीं डॉक्टर साहब । यहाँ आने से पहले मैं उनके होटल गया था । वे आते ही होंगे ।

   डॉ. कुमार : यह तुमने अच्छा किया कि उनको भी साथ ले जाने का कार्यक्रम बना लिया। पिछली बार तो बड़ा मजा आया था ।

   रमेश : अबकी बार भी अच्छा ही रहेगा । . . . लीजिए, वे लोग भी आ गए ।

   डॉ. कुमार : आइए, आइए वकील साहब । नमस्ते भाभी जी ।

2. निर्मला : आप सब लोग तैयार हैं, न ?

   रमेश : हाँ, हम सब आप लोगों का ही इंतजार कर रहे थे। (सब लोग कार में बैठते हैं)

   निर्मला : पर देखिए मैं चाहती हूँ कि राजस्थान का यह सैर-सपाटा दिलचस्प हो ।

   डॉ. कुमार : रमेश के रहते सब अच्छा ही रहेगा, भाभी जी। यह जब कभी कहीं जाता है, पहले उस जगह के बारे में गूगल से अच्छी तरह जानकारी ले लेता है । क्यों रमेश ?

रमेश : हाँ, डॉक्टर साहब । राजस्थान केवल रेगिस्तान ही नहीं है, यहाँ कई सुंदर शहर भी हैं – अजमेर, उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, कोटा आदि । पर इस बार मैं आप लोगों को हरावती क्षेत्र में ले जा रहा हूँ ।

3. रमेश : अब हम हरावती पहुँचने ही वाले हैं । यहाँ चंबल नदी बहती है । शायद यह भारत की एकमात्र नदी है जो दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है ।

डॉ. कुमार : वही चंबल जिसके बीहड़ों में कभी डाकू छिपा करते थे ?

रमेश : हाँ, वही चंबल । हाँ, तो मैं कह रहा था कि हरावती बहुत पुराना शहर था। अब यहाँ कई ऐतिहासिक खंडहर हैं ।

ब्रजभूषण : केवल खंडहर ही देखेंगे या यहाँ और भी कुछ देखने लायक है ?

रमेश : ऐसी कोई बात नहीं है । यहाँ मंदिर और महल भी हैं ।

इला : तब तो ठीक है ।

रमेश : अब हम हरावती क्षेत्र में हैं । इसके आस-पास के शहरों में कोटा बहुत प्रसिद्ध शहर है । आपने कोटा-साड़ियों के बारे में तो सुना ही होगा । अब कोटा में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए दूर-दूर से बच्चे पढ़ने के लिए आते हैं ।

ब्रजभूषण : और यहाँ से तुम रणथंभौर भी जाने के लिए कह रहे थे ।

4. रमेश : हाँ, हाँ, रणथंभौर का किला हम्मीरदेव ने बनवाया था । इसका फैलाव लगभग 17 किलोमीटर है । इसकी ऊँचाई समुद्र तल से लगभग 481 मीटर है । देखने लायक जगह है, भाई साहब !

ब्रजभूषण : वहाँ और क्या-क्या देखने लायक स्थान हैं ?

डॉ. कुमार : कोटा के पास चंबल के तट पर 'अधर-शिला' है जो दर्शनीय है । यह एक भारी चट्टान है जो आसमान से लटकती-सी दिखाई देती है ।

रमेश : बढ़ोली का शिव मंदिर भी देखने लायक है । यह कोटा से चालीस किलोमीटर दूर है । वैसे यहाँ पर मंदिर ही मंदिर हैं । ये मंदिर स्थापत्य-कला के लिए प्रसिद्ध हैं । यहाँ के राजमहल तो देखते ही बनते हैं। ये बड़े विशाल और सुंदर हैं । इनमें चित्रकारी और पच्चीकारी के अच्छे नमूने हैं ।

5. ब्रजभूषण : तुम तो कह रहे थे कि यहाँ मौर्य और गुप्त काल की स्थापत्य-कला के नमूने भी देखने को मिलेंगे ।

রমেশ : ওহ ! यह बताना तो मैं भूल ही गया । यहाँ छठी और सातवीं शताब्दी के अनेक मंदिर हैं । कुछ मंदिर मौर्य और गुप्तवंश के राजाओं के बनवाए हुए हैं । यहाँ सुंदर महल भी देख सकेंगे ।

डॉ. कुमार : ঠীক है । कार यहीं रोको और चलो किसी रेस्तराँ में कुछ खा-पी लें ।

रमेश : ঠীক है, डॉक्टर साहब ! गाड़ी यहीं पार्क कर देता हूँ ।

3.0 শব্দাবলী

3.1 নীচের শব্দগুলি পড়ুন এবং পাঠের অর্থ বোঝার চেষ্টা ক ন।

অনুচ্ছেদ - 1	
कहीं उनका प्रोग्राम तो नहीं बदल गया ?	তাঁর প্রোগ্রাম বদলে যায় নি তো?
पिछली बार बड़ा मजा आया था	গতবার খুব মজা হয়েছিল।
अब की बार (इस बार)	এবার
অনুচ্ছেদ - 2	
इंतजार करना	অপেক্ষা করা
सैर-सपाटा	ভ্রমণ ঘুরে /বেড়ানো
दिलचस्प	মজাদার
रमेश के रहते	রমেশ থাকাকালীন
जब कभी	যখন খুশী
रेगिस्तान (मरुस्थल)	ম ভূমি
क्षेत्र	ক্ষেত্র
অনুচ্ছেদ - 3	
बहना	বয়ে যাওয়া
एकमात्र	একমাত্র
दक्षिण	দক্ষিণ
उत्तर	উত্তর
बीहड़	ক্ষ
डाकू	ডাকাত
ऐतिहासिक	ঐতিহাসিক
खंडहर	ভগ্নাবশেষ
देखने लायक (दर्शनीय)	দেখার মত
महल	মহল
मंदिर	মন্দির
आसपास के शहर	আশপাশের শহর
অনুচ্ছেদ - 4	
किला	কেল্লা
फैलाव	ছড়িয়ে পড়া / বিস্তার
लगभग	কাছাকাছি / মোটামুটি
ऊँचाई	উচ্চতা

समुद्र तल	সমুদ্র-তল	नमूना	নমুনা
भारी	ভারী		
चट्टान	শিলাখন্ড	अनुच्छेद - 5	
आसमान	আকাশ	छठा	ষষ্ঠ
लटकती–सी दिखाई देना	ঝুলন্ত	सातवाँ	সপ্তম
		शताब्दी	শতাব্দী
स्थापत्य–कला (भवन निर्माण कला)	স্থাপত্যকলা	अनेक	অনেক
		राजवंश	রাজবংশ
प्रसिद्ध	প্রসিদ্ধ	बनवाए हुए	(দ্বারা) বানানো
देखते ही बनते हैं	অপরূপ সুন্দর	देख सकना	দেখতে পারা
चित्रकारी	ছবি আঁকা	रोकना	থামানো
पच्चीकारी	কা কার্য		

3.2 পাঠটি পড়ে পুনরায় নীরব পাঠ ক ন।

3.3 বিপরীতার্থক শব্দ

पिछला	পূর্ববর্তী	x	अगला	পরবর্তী
पिछली बार	গতবার	x	अगली बार	পরের বার
पहले	আগে/ প্রথমে	x	बाद में	পরে
दक्षिण	দক্ষিণ	x	उत्तर	উত্তর
पूर्व	পূর্ব	x	पश्चिम	পশ্চিম
ऊँचा	উঁচু	x	नीचा	নীচু

3.4 শব্দ-যুগ্ম

घूमना–फिरना	ঘোরাফেরা
खाना–पीना	খাওয়া-দাওয়া
आना–जाना	আসা-যাওয়া
पढ़ना–लिखना	লেখাপড়া

4.0 নমুনা এবং ব্যবহার

পাঠে অন্তর্ভুক্ত গল্পগুলির গঠন লক্ষ্য ক ন ঃ

4.1 কহীं....নহীं/ন - এর ব্যবহার আশঙ্কা ও সন্দেহ প্রকাশ করে।

वकील साहब नहीं आए हैं । कहीं उनका प्रोग्राम तो नहीं बदल गया ?	উকিলবাবু আসেন নি। তাঁর প্রোগ্রাম বদলে যায় নি তো?

1. प्रिंसिपल साहब का घर बंद है।	कहीं वे बाहर तो नहीं चले गए ?	(উনি বাইরে চলে যাননি তো?)

1. जल्दी घर लौटें ।	कहीं बारिश न आ आए	(যেন বৃষ্টি না এসে যায়)
2. धीरे बोलो ।	कहीं श्रीमती जी न सुन लें	(আমার বউ যেন শুনে না ফেলে)
3. कैशियर को आज लौटना था।	कहीं आज उसने छुट्टी तो नहीं बढ़ाई ?	(সে ছুটি বাড়িয়ে নেয় নি তো?)

4.2. ক ও খ বিভাগের বাক্যগুলি তুলনা ক ন ঃ

বিভাগ-ক	ब्रजभूषण जी आते होंगे ।	ব্রজভূষণবাবু হয়তো আসছেন।
	पिता जी डाकघर से लौटते होंगे ।	হয়তো বাবা ডাকঘর থেকে ফিরছেন।
বিভাগ-খ	ब्रजभूषण जी आते ही होंगे ।	যেকোন মুহূর্তে ব্রজভূষণবাবু চলে আসবেন।
	पिता जी डाकघर से लौटते ही होंगे ।	যেকোন মুহূর্তে বাবা ডাকঘর থেকে ফিরে আসবেন।

বিভাগ 'ক'-এর বাক্যগুলি ক্রিয়ার সম্ভাব্যতা বোঝাচ্ছে এবং 'খ'- এর বাক্যগুলি ক্রিয়ার আসন্নতা স্পষ্ট করছে।

4.2.1 কখনো কখনো –তা ही होगा -র পরিবর্তে 'ने ही वाला है' ব্যবহৃত হয়

मोहन लौटता ही होगा – मोहन लौटने ही वाला है ।

डॉक्टर आते ही होंगे – डॉक्टर आने ही वाले हैं ।

गाड़ी पहुँचती ही होगी – गाड़ी पहुँचने ही वाली है ।

4.3 'नहीं तो' - এর ব্যবহার ঃ

(ক) 'অন্যথা' বা 'নইলে' অর্থে 'नहीं तो' ব্যবহার করা হয়।

खिड़की बंद कर लीजिए नहीं तो सर्दी लग जाएगी ।	জানালা বন্ধ ক ন না হলে ঠান্ডা লেগে যাবে।
पैसे निकालो नहीं तो काम नहीं होगा ।	পয়সা বার ক ন নইলে কাজ হবে না।
जल्दी कीजिए नहीं तो गाड़ी चली जाएगी ।	তাড়াতাড়ি ক ন নইলে গাড়ী চলে যাবে।

(খ) কখনো কখনো পরিণাম বোঝাতে 'नहीं तो' ব্যবহার করা হয়।

এই সব ক্ষেত্রে, 'ता' প্রত্যয়-যুক্ত ত্রি য়ার ব্যবহার যৌগিক বাক্যের দ্বিতীয় ভাগে ব্যবহৃত হয়।

वकील साहब होटल में ठहर गए, नहीं तो उनको रात में डॉ. कुमार का घर न मिलता।	উকিল সাহেব রাতে হোটেলে থেকে গেলেন না হলে রাতে ডঃ কুমারের বাড়ি উনি পেতেন না।
तेज बारिश हो रही थी, नहीं तो मैं ठीक समय पर पहुँच जाता ।	জোর বৃষ্টি হচ্ছিল নইলে আমি ঠিক সময়ে পৌঁছে যেতাম।
वे मीटिंग से जल्दी चले गए, नहीं तो उन्हें भी किताबें मिल जातीं ।	উনি সভা থেকে তাড়াতাড়ি চলে গেলেন নইলে উনিও বই পেয়ে যেতেন।

(গ) কোন প্র.ের উত্তরে 'नहीं तो' সম্পূর্ণ অস্বীকার করার অর্থে বাক্যের-মত ব্যবহার করা হয়।

आपने मेरा पर्स देखा था ?

– नहीं तो । না মোটেই না।

क्या आपकी पत्नी बेंगलुरु जा रही हैं ?

– नहीं तो । না একেবারেই না।

4.4 নিজন্ত (প্রেরণাত্মক) ত্রি য়ার গঠন – 'बनवाना'

(ক) যখন কর্তা কোন কাজ নিজে সম্পন্ন না করে অন্য কাউকে দিয়ে কাজ করায় সেখানে নিজন্ত (প্রেরণাত্মক) ত্রি য়া ব্যবহৃত হয়।

माँ खाना बनाती है ।	মা রান্না করে।
माँ रसोइया से खाना बनवाती है ।	মা রাঁধুনী/ রান্নার লোক দিয়ে রান্না করায়।
अधिकारी ने पत्रों का जवाब खुद लिखा।	আধিকারিক নিজেই চিঠির জবাব লিখেছেন।
अधिकारी ने पत्रों का जवाब स्टेनो से लिखवाया।	আধিকারিক স্টেনোকে দিয়ে চিঠির জবাব লিখিয়েছেন।
कारीगरों ने ये महल बनाए ।	মিস্ত্রীরা মহল বানিয়েছে।
राजाओं ने ये महल कारीगरों से बनवाए ।	রাজারা মিস্ত্রীদের দিয়ে মহল বানিয়েছে।

(খ) নিম্নলিখিত বাক্যগুলি পড়ুন ঃ

सूर्यवंश के राजाओं ने कई मंदिर बनवाए ।	সূর্যবংশীয় রাজারা অনেক মন্দির করিয়েছেন।
शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया ।	শাজাহান তাজমহল তৈরী করিয়েছেন।
दुकानदार ने नौकर से दुकान खुलवाई ।	দোকানদার কর্মচারীকে দিয়ে দোকান খোলালেন।

(গ) অন্যান্য অতীত কৃদন্ত ত্রি য়ার ব্যবহার বিশেষণের মত করা হয়।

घर आए हुए मेहमान	বাড়ীতে আসা অতিথি।
कल पढ़ा हुआ पाठ	গতকালের পড়া পাঠ।
राजाओं के बनवाए हुए मंदिर	রাজাদের দ্বারা তৈরী করানো মন্দির।

(ঘ) আশা করি, এবার পাঠত্র মের অন্তর্গত বাক্যগুলি বুঝতে পেরেছেন।

बढ़ोली में कई पुराने मंदिर हैं, जिनमें से कई गुप्त और मौर्यवंश के राजाओं के बनवाए हुए हैं ।

— * —

पाठ / पाठ-4

1.0 पाठ सम्पर्कित

2.0 पाठ - मांडवा – रेगिस्तान का हीरा (कथात्मक कथात्मक रूप)

3.0 शब्दावली

4.0 व्याकरणगत नोट

1.0 पाठ सम्पर्कित

पूर्वपाठेर धारावाहिकता। राजस्थानेर शेखावटी अञ्चले अवस्थित मान्डवार विवरण।

2.0 पाठ मांडवा – रेगिस्तान का हीरा (मान्डওয়া ম ভূমির হীরে)

সরবে পাঠ ক ন।

1. नाश्ता कर लेने के बाद रमेश ने उन लोगों को बताया कि अभी कुछ ही दिन पहले मैं मांडवा गया था ।

2. मांडवा राजस्थान के शेखावटी जनपद में है । उसे ठाकुर नवल सिंह ने सन् 1755 में बसाया था। सन् 1930 तक यह नगर व्यापार का एक प्रमुख केंद्र था । बाद में यहाँ के धनी व्यापारी, मुंबई, कोलकाता और दूसरे व्यापारिक केंद्रों में चले गए । इन व्यापारियों ने मांडवा में बड़ी-बड़ी हवेलियाँ बनवाई थीं, जिनमें चित्रकारी और पच्चीकारी के सुंदर नमूने मिलते हैं । यहाँ की 'सात हवेली' बहुत प्रसिद्ध है ।

3. शहर के बीचों-बीच एक पुराना किला है । पुराने किले के पास नवलगढ़ है । यहाँ पर प्रतिदिन एक छोटा-सा बाजार लगता है । बाजार में दुकानों पर रंग-बिरंगी चुनरियाँ, साड़ियाँ आदि दर्शकों का मन मोह लेती हैं । ज़री की कामवाली मखमली जूतियाँ, लाख की चूड़ियाँ और राजस्थानी शैली के चित्र मांडवा की अपनी विशेषताएँ हैं ।

4. यहाँ 'ठाकुर हरिसिंह स्मारक संग्रहालय' है । इसमें राजस्थान के वीर राजपूतों के अस्त्र-शस्त्र, पुराने सिक्के, वस्त्र आदि वस्तुएँ हैं । यहाँ अनेक कलात्मक मूर्तियाँ हैं जिनमें 'ईसरजी' और 'देवी गणगौर जी' की मूर्तियाँ प्रमुख हैं । ईसरजी और देवी गणगौर जी शिव और पार्वती के ही रूप हैं।

5. राजस्थान के जन–जीवन में ऊँटों का विशेष महत्व है । विदेशी पर्यटक बड़े चाव से ऊँट की सवारी करते हैं । इन सारी विशेषताओं के कारण मांडवा 'रेगिस्तान का हीरा' कहलाता है ।

6. रमेश की बातों को सुनकर डॉ. कुमार और वकील साहब को लगा कि अब रमेश हरावती से मांडवा चलने के लिए कहेगा । वे लोग मांडवा जाने के लिए तैयार नहीं थे क्योंकि वहाँ से मांडवा काफी दूर था । इसलिए उन्होंने कहा– ''रमेश, हम लोगों को जल्दी दिल्ली लौटना है । मांडवा फिर कभी देख लेंगे ।''

3.0 শব্দাবলী

3.1 নিম্নলিখিত শব্দগুলির অর্থ জেনে পাঠটি বোঝার চেষ্টা ক ন।

অনুচ্ছেদ- 1

नाश्ता	জলখাবার
नाश्ता कर लेने के बाद	জলখাবারের পর
बताना	বলা

অনুচ্ছেদ - 2

जनपद (जिला)	জনপদ (জেলা)
बसाना	স্থাপন করা
केंद्र	কেন্দ্র
धनी (अमीर)	ধনী
हवेली	অট্টালিকা

অনুচ্ছেদ - 3

बीचों–बीच	মাঝামাঝি
किला	কেল্লা
रंग बिरंगा	রঙিন / রঙ বেরঙ
चुनरी	ওড়নী
दर्शक	দর্শক
मन मोहना	মনমুগ্ধ করা
जरी के कामवाला	জরির কাজ করা
मखमली	মখমলী
जूतियाँ	জুতা
लाख की चूड़ियाँ	গালার চুড়ী
राजस्थानी शैली	রাজস্থানী শৈলী
विशेषता	বৈশিষ্ট্য

অনুচ্ছেদ - 4

स्मारक	স্মারক
संग्रहालय	সংগ্রহালয়
अस्त्र–शस्त्र	অস্ত্র-শস্ত্র
सिक्का	মুদ্রা
वस्त्र	বস্ত্র
वस्तु (स्त्री)/चीज	বস্তু / জিনিস

কলাত্মক	কলাত্মক	পর্যটক	পর্যটক
মূর্তি (স্ত্রী)	মূর্তি	বড়े चाव से	খুব উৎসাহে
রূপ	রূপ	ऊँट की सवारी	উঁটে চড়া
		হীরা	হীরে
অনুচ্ছেদ - 5		কহলানা	বলানো/ বলা হয়
জন-জীবন	জনজীবন		
ঊঁট	উঁট	অনুচ্ছেদ - 6	
মহত্ব	গু ত্ব	তৈয়ার	তৈরী
বিদেশী	বিদেশী	ফির কভী	আবার কখনো

3.2 পাঠটি ভালো করে পড়ুন এবং নীরব পাঠ ক ন।

3.3 উপযুক্ত প্রত্যয়-সহযোগে শব্দ গঠন ঃ

(i) ব্যাপার – ব্যবসা
ব্যাপারী – ব্যবসায়ী
ব্যাপারিক – ব্যবসায়িক

(ii) চিত্র – চিত্র
চিত্রকার – চিত্রকার
চিত্রকারী – চিত্রকারী

(iii) মখমল (সংজ্ঞা) – মখমল
মখমলী (বিশেষণ) – মখমলী

(iv) রাজস্থান – রাজস্থান
রাজস্থানী – রাজস্থানী

(v) বিশেষ – বিশেষ
বিশেষতা – বিশেষতা/ বৈশিষ্ট্য
বিশেষজ্ঞ – বিশেষজ্ঞ

(vi) কলা – শিল্প

কলাত্মক – শৈল্পিক

কলাকার – শিল্পী

(vii) কহনা – বলা

কহলানা – বলানো

(iv) इतिहास – ইতিহাস

ऐतिहासिक – ঐতিহাসিক

3.4 যুগ বা বছরসূচক শব্দাবলী।

(i)	सन् सन् 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ ।	খ্রীষ্ট যুগসূচক
(ii)	संवत् (सं.) संवत् (सं.) 1631 में तुलसीदास ने रामायण पूरी की ।	ভারতবর্ষে প্রচলিত বিভিন্ন যুগসূচক শব্দ

4.0 ব্যকরণগত নোট

4.1 অতীতকালের বিভিন্ন রূপ

অতীতকালের ক্রি য়া-রূপের বিভিন্ন ধরন এবং ব্যবহারিকতা বুঝতে নিম্নলিখিত তালিকাটি ভালো করে দেখুন এবং বোঝার চেষ্টা ক ন।

	প্রকার ও উদাহরণ	**গঠন**	**অর্থ**
1.	সাধারণ অতীত রমেশ মাংডওয়া গয়া ।	(ক্রি য়া ধাতু +যা) গ+যা = গয়া –যা/–আ + পুং, একবচন জানা অতীতকালের রূপ গয়া	রমেশ মাংডওয়া গেল
2.	ঘটমান বর্তমান রমেশ মাংডওয়া গয়া হৈ।	সাধারণ অতীত + সহায়ক ক্রি য়া গয়া+হৈ = গয়া হৈ।	রমেশ মাংডওয়া গেছে।

3.	পুরাঘটিত অতীত রমেশ मांडवा गया था ।	সাধারণ অতীত + সহায়ক ক্রি য়া गया+था = गया था ।	রমেশ মান্ডওয়া গেছিল।
4	সন্দিহান অতীত রমেশ मांडवा गया होगा ।	সাধারণ অতীত + সহায়ক ক্রি য়ার ভবিষ্যত রূপ गया+होगा = गया होगा ।	হয়তো রমেশ মান্ডওয়া গেছে।
5.	অভ্যাসমূলক অতীত রমেশ मांडवा जाता था ।	বর্তমান কৃদন্ত + সহায়ক ক্রি য়া जाता+था = जाता था ।	রমেশ প্রায়শই মান্ডওয়া যেত।
6.	শর্তসাপেক্ষ অতীত (যদি)রমেশ मांडवा जाता तो	বর্তমান কৃদন্ত जाता	যদি রমেশ মান্ডওয়া যেত।

উদাহরণ ঃ

1.	সাধারণ অতীত रमेश ने डॉ. कुमार और ब्रजभूषण को क्या बताया ? निर्मला और इला ने कपड़े खरीदे ।	(বলেছে) (কিনেছে)
2.	ঘটমান বর্তমান मोहन कश्मीर गया है । मैंने यह फिल्म देखी है ।	(গেছে) (দেখেছি)
3.	পুরাঘটিত অতীত ठाकुर नवल सिंह ने इस शहर को बसाया था । ब्रजभूषण ने मेल भेजा था ।	(তৈরী করেছিল) (পাঠিয়েছিল)
4.	সন্দিহান অতীত आपने कोटा साड़ी का नाम सुना होगा । मेरी बहन बाजार गई होगी ।	(শুনেছেন হয়তো) (গেছে হয়তো)
5.	অভ্যাসমূলক অতীত व्यापारी लोग इसी मार्ग से आते-जाते थे । हम पहले केरल में रहते थे ।	(আসা-যাওয়া করতো) (থাকতাম)

6.	শর্তসাপেক্ষ অতীত (যদি) আপ মাংডবা জাতে তো হবেলিয়াঁ দেখতে । অগর আজ ছুট্টী হোতী তো হম দফ্তর নহীং আতে ।	যদি আপনি মান্ডওয়া যেতেন তাহলে অট্টালিকা দেখতে পেতেন। আজ যদি ছুটি হত তাহলে আমি দপ্তরে আসতাম না।

4.2 'পড়না' ক্রি য়ার ব্যবহারিক প্রয়োগ ঃ

(ক) 'পড়না' ক্রি য়া 'পড়ে থাকা' অর্থে ব্যবহৃত হয়।

মেরে পর্স মেং দো-ঢাই সৌ রুপএ পড়ে হোংগে ।	আমার পার্সে দু-আড়াইশো টাকা পড়ে আছে।
দেখিএ, আপকা পেন মেজ পর পড়া হৈ ।	দেখুন আপনার পেনটি টেবিলে পড়ে আছে।

(খ) পড়ে যাওয়া অর্থে 'পড়না' ব্যবহার

ইস সাল দীপাবলী রবিবার কো পড়েগী ।	এ বছর দীপাবলী রবিবার পড়েছে।

(গ) অবস্থান অর্থে 'পড়না' ক্রি য়ার ব্যবহার

মাংডবা রাজস্থান মেং পড়তা হৈ ?	মান্ডওয়া রাজস্থানে অবস্থিত?
যহ গাঁব কহাঁ পড়তা হৈ ?	এই গ্রামটি কোথায়? (বাংলাতে এই ধরনের বাক্যে 'পড়না' ক্রি য়ার ব্যবহার হয়না)

(ঘ) বাধ্যতা অর্থে 'পড়না' ক্রি য়ার ব্যবহার।

তুম্হেং চেন্নই জানা পড়েগা ।	তোমাকে চেন্নাই যেতে হবে।
রাকেশ কো সাক্ষাত্কার দেনে কে লিএ জানা পড়েগা ।	রাকেশকে সাক্ষাৎকার দিতে যেতে হবে। (বাংলাতে এই ধরনের বাক্যে 'পড়না' ক্রি য়ার ব্যবহার হয় না।)

4.3 'লগনা' ক্রি য়ার ব্যবহারিক প্রয়োগ ঃ

(i) প্রসঙ্গ অনুসারে এবং বিভিন্ন শব্দের সঙ্গে 'লগনা' ক্রি য়ার নানাভাবে ব্যবহার করা হয়।

রমেশ বহুত সমঝদার লগতা হৈ ।	মনে হয় রমেশ খুব বুদ্ধিমান।
যহ পাঠ সরল লগতা হৈ ।	মনে হয় পাঠটি খুব সহজ।

ब्रजभूषण को लगा कि रमेश उन्हें मांडवा ले जाएगा । ব্রজভূষণের মনে হল যে রমেশ তাঁকে মান্ডওয়া নিয়ে যাবে।

(ii) ব্যয় / কর অর্থে 'लगना' ক্রি য়ার ব্যবহার ঃ

इस योजना में दस लाख रुपए लगेंगे । এই পরিকল্পনায় দশ লাখ টাকা লাগবে।

कपड़े पर सेल्स टैक्स कितना लगता है ? জামা-কাপড়ের ওপরে কত সেলস ট্যাক্স লাগে?

(iii) আরম্ভ / শু করার অর্থে 'लगना' ক্রি য়ার ব্যবহার ঃ

मैं इस जुलाई से हिंदी पढ़ने लगा । আমি জুলাই থেকে হিন্দী পড়তে শু করেছি।

बटन दबाने से लिफ्ट चलने लगती है । বোতাম টিপলে লিফ্ট চলে।

दो बजे बारिश शुरु होने लगी । দু'টো থেকে বৃষ্টি পড়া শু হয়েছে।

(iv) 'ব্যস্ত থাকা' অর্থে 'लगना' ক্রি য়ার ব্যবহার ঃ

सोम इस समय जरूरी काम में लगा है । সোম এখন জ রী কাজে ব্যস্ত।

वह बातों में लगी है । সে কথাবার্তায় ব্যস্ত আছে।

(v) 'যুক্ত হওয়া' অর্থে 'लगना' ক্রি য়ার ব্যবহার ঃ

लिफाफे पर टिकट लगे हैं । খামের ওপর টিকিট লাগানো আছে।

कमरे के साथ एक वॉशरूम लगा है । ঘরের সঙ্গে একটি বাথ ম/ওয়াশ ম আছে।

(vi) 'আঘাত / আহত' অর্থে 'लगना' ক্রি য়ার ব্যবহার ঃ

गेंद खिड़की पर लगी । বল জানলায় লাগলো।

मुझे चोट लगी । আমার চোট / আঘাত লেগেছে।

(vii) 'সম্পর্ক' অর্থে 'लगना' ক্রি য়ার ব্যবহার ঃ

ये मेरे चाचा लगते हैं । ইনি আমার কাকা হন।

श्री सोम आपके क्या लगते हैं ? শ্রী সোম আপনার কে হন?

(viii) অনুভূতির অর্থে 'लगना' ক্রিয়ার ব্যবহার ঃ
(এই ধরনের বাক্যে কর্তার সঙ্গে 'को' আবশ্যক)

बच्चे को ठंड लग गई ।	বাচ্চাটির ঠান্ডা লেগেছে।
मुझ को (मुझे) भूख लगी है ।	আমার খিদে পেয়েছে।
क्या आपको प्यास लगती है ?	আপনার কি তেষ্টা পেয়েছে?
इला को फल अच्छे लगते हैं ।	ইলা ফল ভালোবাসে।
मुझे उसका व्यवहार बुरा लगा ।	তারব্যববহার আমার খারাপ লেগেছে।

— * —

पाठ / पाठ-5

1.0 पाठ-सम्पर्कित

2.0 पाठ - आइए, बाज़ार चलें (वार्तालाप/ कथोपकथन)

3.0 शब्दावली

4.0 वाक्यगठन ও ব্যবহার

5.0 সম্পূরক উপাদান

1.0 पाठ-सम्पर्कित

বর্তমান পাঠে, ভাষা ব্যবহারের অন্য একটি ক্ষেত্রে, যেমন ক্র য়-বিক্র য়ে ব্যবহৃত ভাষা আপনাদের সামনে প্রস্তুত করা হল। এই উদ্দেশ্যে বাজারের একটি দৃশ্য দেওয়া হল ঃ

2.0 पाठ - आइए, बाज़ार चलें (চলুন বাজারে যাই)

সরবে পাঠ ক ন।

1. श्रीमती निर्मला और श्रीमती इला रविवार की शाम को सब्जी वगैरह खरीदने के लिए निकलती हैं। श्रीमती इला के घर के पास ही हर रविवार को बाज़ार लगता है । बाज़ार सड़क के दोनों ओर एक छोर से दूसरे छोर तक फैला है । यहाँ घर-गृहस्थी की जरूरत की चीज़ें मिलती हैं । सिले-सिलाए कपड़ों की छोटी-छोटी दुकानें हैं, जिनमें रंग-बिरंगी सलवार-कमीज़, बाबा सूट आदि टँगे रहते हैं । इस बाज़ार में प्लास्टिक का सामान भी मिलता है । सामने की कतार में खाने-पीने की चीजों की दुकानें लगती हैं । चाट और गोल-गप्पे की दुकानों पर सबसे ज्यादा भीड़ रहती है। इन सब के बाद शुरू होती है उन दुकानों की कतार जिनमें आलू-प्याज, बैंगन, गोभी, टमाटर, हरी मिर्च आदि सब्जियाँ सजी रहती हैं ।

2. निर्मला के लिए ऐसा बाजार नया तो न था, पर दिल्ली जैसे बड़े शहर में गाँव का-सा बाजार देखकर उसे अचंभा हुआ ।

   दोनों महिलाएँ खरीदारी के लिए आगे बढ़ीं । आइए देखें, वे क्या-क्या खरीदती हैं और कैसे-कैसे मोल-भाव करती हैं ।

   इला : देखो, दीदी, यह साड़ी कितनी सुंदर है । कोटा-साड़ी जैसी लग रही है । है न?

   निर्मला : हाँ इला ।

दुकानदार : बीबी जी ठीक कह रही हैं । यह कोटा की ही साड़ी है ।

निर्मला : क्यों भई, यह साड़ी कितने की है ?

दुकानदार : सस्ती है । सिर्फ अठारह सौ रुपये की ।

इला : न बाबा न । यह तो महंगी है । ठीक-ठीक बताओ ।

दुकानदार : मैडम, इस दुकान पर मोल-भाव नहीं होता ।

निर्मला : इला, रहने दो । बाद में देखेंगे ।

इला : ठीक है चलो । . . . . (चलते हुए) हमने तो राजस्थान में कोटा की साड़ी देखी थी, वह इससे बढ़िया और सस्ती थी ।

3. निर्मला : यहाँ तो प्लास्टिक की नई-नई चीजों की भरमार है । इलाहाबाद में तो मैंने इतनी सारी चीजें कभी देखी ही नहीं । देखें, शायद कुछ पसंद आ जाए ।

इला : देख लो । मुझे तो दीदी, ये चीजें अच्छी नहीं लगतीं । एक तो ये हल्की होती हैं और दूसरे जल्दी टूट जाती हैं ।

निर्मला : तो भी कोई हर्ज नहीं। जरा रुको तो सही । (दुकानदार से) इस टी-सैट का दाम क्या है ?

दुकानदार : ढाई सौ रुपये ।

निर्मला : यह तो बड़ा महँगा है ।

इला : तुम्हें पसंद हो तो बात करूँ । कम करवा दूँगी । यहाँ तो मोल-भाव करना ही पड़ता है ।

दुकानदार : माफ कीजिएगा, बहन जी ! यहाँ मोल-भाव नहीं होता ।

निर्मला : अच्छा, दो सौ रुपये लगाओ और दो सैट दे दो ।

दुकानदार : नहीं, बहन जी, दाम कम नहीं होगा । चाहे एक लें या दो ।

इला : चलो दीदी । और भी दुकानें हैं ।

निर्मला : इला बहन, अब तो सब्जियों की दुकानें शुरू हो गई ।

इला : हाँ सब्जियाँ तो चाहिए ही ।

निर्मला : तो यहाँ मोल-भाव न करूँ ?

4. इला : क्यों नहीं ? बिना मोल-भाव किए कैसे खरीद सकते हैं ?

निर्मला : ठीक है बहन ।

इला : ये बैंगन क्या भाव हैं ? गोल वाले नहीं हैं ?

दुकानदार : हैं क्यों नहीं ? दोनों का एक ही भाव है चालीस रुपये किलो ।

निर्मला : पैंतीस रुपये किलो लगाओ ।

दुकानदार : कितना लेंगी आप, बहन जी ?

निर्मला : एक किलो ।

दुकानदार : और आप, बहन जी ?

इला : ये और हम अलग नहीं है । एक किलो ही दो ।

दुकानदार : अच्छा, लीजिए ।

इला : आलू कैसे दिए ?

दुकानदार : बीस रुपये किलो । पहाड़ी आलू है ।

इला : दो किलो दे दो । और टमाटर क्या भाव है ?

दुकानदार : टमाटर तीस रुपये किलो ।

निर्मला : पच्चीस रुपये लगाओ ।

दुकानदार : नहीं बहन जी । आज महँगे आए हैं । अट्ठाईस लगा दूँगा ।

इला : टमाटर भी एक किलो दे दो ।

दुकानदार : ये लीजिए दो किलो आलू, एक किलो टमाटर । एक किलो बैंगन । हरी मिर्च कितनी दूँ ?

इला : दे दो पाँच रुपये की हरी मिर्च, और पाँच रुपये का धनिया । अदरक कैसे है ?

दुकानदार : दस रुपये का सौ ग्राम ।

निर्मला : इतना महँगा ।

इला : चलो, सौ ग्राम अदरक भी दे दो - कुल कितने हुए ।

दुकानदार : एक सौ तेईस रुपये ।

इला : ये लीजिए एक सौ तेईस रुपये । ठीक है ?

দুকানদার : ঠীক হৈ, বহন জী ।

নির্মলা : ইলা, ঔর কুছ লেনা হৈ ক্যা ?

ইলা : নহীং, হম কল করোল বাগ চলেংগে । জো লেনা হোগা বহীং লে লেংগে । অরে হাঁ, ফল ভী তো লেনে হৈং ।

নির্মলা : ঠীক হৈ । চলো, আগে লে লেংগে ।

3.0 শব্দাবলী

3.1 শব্দগুলি পড়ে পাঠের অর্থ বোঝার চেষ্টা ক ন।

অনুচ্ছেদ-1	
সব্জী (স্ত্রী)	শাকসব্জী
বগৈরহ (আদি)	ইত্যাদি
নিকলনা	বেরোনো
হর রবিবার কো	প্রতি রবিবার
বাজ়ার লগতা হৈ	বাজার বসে
কে দোনোং ওর	-এর দুদিকে
এক ছোর সে দূসরে ছোর তক	একদিক থেকে আরেক দিকে
ঘর-গৃহস্থী কী চীজেং	ঘর গৃহস্থালির জিনিসপত্র
জরূরত (স্ত্রী)	দরকার/ প্রয়োজন
সিলে-সিলাএ কপড়ে	তৈরি পোশাক
রংগ-বিরংগা	রংচং / রং বেরং
সলবার (স্ত্রী)	সালোয়ার
কমীজ (স্ত্রী)	কামিজ
টঁগা রহনা	টাঙ্গানো থাকে
খানে-পীনে কী চীজেং	খাওয়া দাওয়ার জিনিস
চাট (স্ত্রী)	চাট
গোল-গপ্পা	ফুচকা
ভীড় (স্ত্রী)	ভীড়
কতার (স্ত্রী)	লাইন
আলূ	আলু
প্যাজ	পেঁয়াজ
বৈংগন	বেগুন
গোভী (স্ত্রী)	কপি
টমাটর	টমাটো
হরী মির্চ (স্ত্রী)	কাঁচা লঙ্কা
সজা হোনা	শাস্তি হওয়া
অনুচ্ছেদ-2	
গাঁব কা-সা	গ্রামের মত
অচংভা হোনা	আশ্চর্য হওয়া
মহিলা (স্ত্রী)	মহিলা
খরীদারী (স্ত্রী)	কেনাকাটা
আগে বঢ়না	এগিয়ে যাওয়া
মোল-ভাব	দরদাম
দীদী	দিদি
জৈসা	যেমন

है न ?	তাই না?
भई	ভাই
सस्ता	সস্তা
महँगा	চড়াদাম
रहने दो	থাক
बढ़िया	ভালো

অনুচ্ছেদ-3

भरमार	প্রচুর
इतना सारा	এত সব
शायद कुछ पसंद आ जाए	যদি কিছু পছন্দ হয়ে যায়
हल्का	হাল্কা
टूट जाना	ভেঙে যাওয়া / পড়া
कोई हर्ज नहीं	কোনো অসুবিধা নেই
जरा रुको तो सही	একটু দাঁড়াও তো
ढाई सौ	আড়াইশো

(दाम) कम करवाना	(দাম) কম করানো
लगाना	লাগানো
चाहे	যদি / কিনা
और भी	আরো

অনুচ্ছেদ-4

बिना मोल भाव किए	দরদাম ছাড়া
क्या भाव है ?	দাম কি / কত?
गोल वाला	গোল ধরনের
पहाड़ी आलू	পাহাড়ী আলু
चालीस, पैंतीस	চল্লিশ, পঁয়ত্রিশ
धनिया	ধনে / ধনেপাতা
अदरक	আদা
कैसे दिए हैं ?	কত দাম?
कितने हुए ?	কত হল?
और कुछ ?	আরো কিছু?

3.2 পাঠটি ভালো করে দেখে আর একবার নীরব পাঠ ক ন ঃ

3.3 অভিব্যক্তি

(ক) দাম জানা

1	(साड़ी) कितने की है ? (कपड़ा) कितने का है ?	(শাড়ী)-র দাম কত? (কাপড়)-এর দাম কত?
2	(टी सेट का) दाम क्या है ? (इस किताब का) दाम क्या है ?	(টি-সেট)-এর দাম কত? (বই)-টির দাম কত?
3	(ये बैंगन) क्या भाव है ? (आम) क्या भाव है ?	(বেগুন)-এর দাম কত? (আম)-এর দাম কত?

4	(आलू) कैसे दिए ? (केले) कैसे दिए ?	(আলু) কত করে? (কলা) কত করে?
5	(अदरक) कैसे है ? (नींबू) कैसे है ?	(আদা) কত করে? (লেবু) কত করে?
6	(इस पेन सेट का) क्या लोगे ? (इस तौलिए का) क्या लोगे ?	(এই পেন সেট)-এর দাম কত? (এই তোয়ালে)-এর দাম কত?
7	(यह एलबम) कितने में दोगे ? (यह मूर्ति सुंदर है।) कितने में दोगे ?	এ্যালবামটি কত দামে দেবে? (মূর্তিটি সুন্দর) কতোয় দেবে?

(খ) বাজার-অনুযায়ী বিভিন্ন অভিব্যক্তি ঃ

ठीक है ।	ঠিক আছে।
लीजिए ।	নিন।
कितने हुए ?	কত হল?
हमारे यहाँ एक दाम है ।	আমাদের এক দাম।
ठीक बताओ ।	ঠিকঠাক বলুন।
रहने दो ।	থাক।

3.4 বিভিন্ন যুগ্মের বানান ও অর্থ অনুযায়ী পার্থক্য লক্ষ্য ক ন ঃ

(i)	सजा (हुआ) सज़ा	সাজানো শাস্তি
(ii)	जरा ज़रा	জরা অল্প / একটু
(iii)	काफी कॉफी	যথেষ্ট কফি

3.5 সমার্থক শব্দ

कतार – पंक्ति

अचंभा – आश्चर्य

दाम – कीमत

4.0 (বাক্য-গঠন ও ব্যবহার)

4.1 (সে ..... তক) (থেকে ..... পর্যন্ত)-এর ব্যবহার ঃ

(ক) কোন স্থানের দুরত্ব ও বিস্তৃতি সংক্রান্ত

বাজার সড়ক के दोनों ओर एक छोर से दूसरे छोर तक फैला है ।

কশ্মীর से कन्याकुमारी तक लगभग तीन हजार किलोमीटर की दूरी है ।

(খ) সময়-সীমা সংক্রান্ত ঃ

यह दुकान सुबह आठ बजे से रात दस बजे तक खुली रहती है ।

दिल्ली में अक्तूबर से मार्च तक मौसम ठंडा रहता है ।

4.2 হওয়া অর্থে 'लगना'-র প্রয়োগ ঃ

हर रविवार को यहाँ बाजार लगता है ।

हफ्ते में तीन दिन हिंदी कक्षाएँ लगती हैं ।

4.3 ত্রি য়ার শব্দসমষ্টি 'অতীত কৃদন্ত' + रहना (खुला + रहना) ব্যবহার হলে স্থিতিশীলতা বোঝায়।

মুখ্য ত্রি য়ার অতীত কৃদন্ত রূপের সঙ্গে 'रहना' যুক্ত হলে এই ধরনের রূপ তৈরী হয়। যেমন ঃ

खुला + रहता है = खुला रहता है ।	খোলা থাকে।
बैंक चार बजे तक खुला रहता है ।	খোলা থাকে।
अलमारी में कपड़े टंगे रहते हैं ।	ঝোলানো/ টাঙানো থাকে।
सेठ जी सुबह से शाम तक लेटे रहते हैं ।	শুয়ে থাকে।

আরো কয়েকটি উদাহরণ :-

साइकिल की मरम्मत करने वाला पेड़ के नीचे बैठा रहता है ।

करोल बाग में इतवार को दुकानें खुली रहती हैं ।

4.4 'तो न था, पर .....' -এর ব্যবহার 'ছিল না, কিন্তু, এখনো... হয়'

এই ধরনের বাক্যে প্রথম বাক্যাংশ নিষেধার্থে ব্যবহৃত হয় যদিও পরবর্তী বাক্যটি পূর্ববর্তী বাক্যে ব্যক্ত নিষেধকে পরিপুষ্ট করে।

निर्मला के लिए ऐसा बाजार नया तो न था, पर दिल्ली में गाँव का-सा बाजार देखकर उसे अचंभा हुआ।

वह बड़ा आदमी तो न था, पर लोग उसके आगे-पीछे घूमते थे ।

सावित्री बहुत अमीर तो न थी, पर अक्सर नए-नए कपड़े पहनती थी ।

नोट : परंतु, किंतु अथवा लेकिन 'पर' द्वारा स्थानान्तरित हते पारे।

4.5 या-क्या, कहाँ-कहाँ इत्यादि प्र.नवाचक शब्देर द्वित्व प्रयोग ः

देखें, बाजार में वे कैसे-कैसे मोल-भाव करती हैं ।	দেখি, বাজারে তিনি কেমন দরদাম করেন।
वे क्या-क्या खरीदेंगी ?	তিনি কি কি কিনবেন?
डॉ. कुमार और ब्रजभूषण जी कहाँ-कहाँ जाएँगे ?	ডাঃ কুমার ও ব্রজভূষণ কোথায় কোথায়ে যাবেন?
शादी में कौन-कौन आए थे ?	বিয়েতে কে কে এসেছিলেন?
आगरा के लिए गाड़ियाँ कब-कब जाती हैं ?	আগ্রার গাড়ী কখন কখন যায়?

5.0 সম্পূরক উপাদান

মুদিখানার জিনিসের তালিকা :-

अजवायन	জোয়ান	दाल	ডাল
अरहर की दाल	অরহর ডাল	धनिया	ধনে
आटा	আটা	नमक	নুন
इमली	তেঁতুল	बेसन	বেসন
इलायची	এলাচ	मसाला	মশলা
उड़द	বিউলি	मिर्च	লঙ্কা
काली मिर्च	গোলমরিচ	मुरब्बा	মোরব্বা
गुड़	গুড়	मूँग	মুগ
गेहूँ	গম	मैदा	ময়দা

चना	ছোলা	लौंग	লবঙ্গ
चाय	চা	शहद	মধু
चावल	চাল	सरसों	সরষে
चीनी	চিনি	साबूदाना	সাবু
जीरा	জিরে	सिरका	ভিনিগার
जौ	যব	सूजी	সুজি
तेल	তেল	सोंठ	সোঁঠ
दलिया	দালিয়া	सौंफ	মৌরি
हींग	হিং	हल्दी	হলুদ

— * —

পাঠ / পাঠ - 6

1.0 এক নজরে পাঠ।

2.0 নাটকের বিভিন্ন চরিত্র।

3.0 পাঠ বাস টিকট (রেডিয়ো নাটক / রেডিও নাটক)

4.0 শব্দাবলী

5.0 বাগধারা ও অভিব্যক্তি

6.0 ব্যাকরণ অংশ ঃ সংযোজক ক্রি য়া ভাব

7.0 প্র ন্ন ও উত্তর

1.0 এক নজরে পাঠ।

এই পাঠটি একটি বেতার নাটক। দিল্লীর বাসে দা ন ভীড় এবং ওঠার জন্য ঠেলাঠেলি হয়। নাটকের শু তেই দেখা যাবে একটি যুবক, একজন ব্যবসায়ীর সঙ্গে বাসে ওঠা নিয়ে প্রচন্ড তর্ক বিতর্ক করছে। বাসে উঠে পড়ার পরেও তারা তর্কাতর্কি করতে থাকে। বাসের ভিতরে বিশৃঙ্খলতা ছড়িয়ে পড়ে। এক ভদ্রলোক বসার জন্য জায়গা পাননি বলে টিকিটের পুরো দাম দিতে রাজি হন নি। ব্রু দ্ধ ব্যবসায়ীটি কন্ডাক্টরকে তার গন্তব্য স্থল বলতে চাইলেন না তাতে যাত্রীদের যথেষ্ঠ পরিহাসের খোরাক জোটে। এক ভদ্র যুবক যে নিজে সৎ অথচ আধুনিক সমাজ-ব্যবস্থাকে অবজ্ঞা করে। ধমক খাওয়ার পরেও সে টিকিট কিনতে রাজি হল না। কন্ডাক্টর বাসটি থানা নিয়ে যায়। সেখানে পুলিশ ইন্সপেক্টর দেখেন যে ঘটনাটিকে নিয়ে বেশি বাড়াবাড়ি করা হয়েছে।

2.0 নাটকের বিভিন্ন চরিত্র।

2.1 প্রত্যেক চরিত্রের সংক্ষিপ্ত পরিচয় নীচে দেওয়া হয়েছে :–

(ক) লালাজী ঃ একজন কৃপণ এবং অসাধু ভুঁড়িওয়ালা মুদী।

(খ) মনোহর ঃ এক বিদ্রোহী যুবক যে ব্যবসায়ী এবং বাবু সমাজের তীক্ষ্ণ সমালোচক।

(গ) বাস কন্ডাক্টর ঃ বছরে একবার সৌজন্য সপ্তাহ পালনের জন্য যে যাত্রীদের সঙ্গে নম্র ব্যবহার করার চেষ্টা করছে।

(घ) बाबूजी ः अफिसे काज करे एमन एकजन भद्रलोक यार सम्बन्धे कर्मक्षेत्रे अलसभावे समय काटानोर अभियोग आछे।

(ङ) थानेदार ः दयालु ओ दायित्ववान पुलिश अफिसार।

3.0 पाठ बस टिकट (বাস টিকিট)

1. (स्टॉप पर आकर बस रुकती है । बस में चढ़ने के लिए भगदड़-सी मच जाती है।)

कंडक्टर : (जोर से) एक-एक करके लाइन में आइए, साहब ।

: (दूसरे लोगों से), जल्दी कीजिए साहब, देर हो रही है ।
(लोग बस में चढ़ते हैं । बस चल पड़ती है ।)

2. कंडक्टर : जिन साहब ने टिकट न लिया हो, आवाज देकर मांग लें । शरमाने की जरूरत नहीं है ।

बाबू जी : एक टिकट नॉर्थ ब्लॉक ।

कंडक्टर : कहाँ से बैठे हैं ?

बाबू जी : अभी हम बैठे ही कहाँ हैं !

कंडक्टर : तो क्या बस स्टाप पर खड़े हैं ?

बाबू जी : नहीं, बस में खड़े हैं, ... सरोजनी नगर मार्केट से ।

: (बस में बैठे यात्री कहकहा लगाते हैं ।)

कंडक्टर : निकालिए बीस रुपये । यह लीजिए बस में खड़े होने का टिकट । अगर बैठे तो दस रुपये और देने पड़ेंगे ।

बाबू जी : तो हम एक ही टांग पर खड़े हो जाते हैं । लो पाँच रुपये का टिकट दे दो।
(यात्रियों का कहकहा)

3. लाला जी : भाई, एक टिकट मुझे भी देना ।

कंडक्टर : कहाँ का ?

मनोहर : (धीरे से) ब्लैक मार्केट का ।

लाला जी : (बिगड़कर) क्या कहा ?

मनोहर : (गंभीरता से) आपने मुझसे कुछ पूछा ?

लाला जी : तुमने अभी क्या कहा ?

मनोहर : किससे ?

लाला जी : कंडक्टर से ।

मनोहर : तो फिर कंडक्टर पूछ लेगा, आप क्यों परेशान होते हैं ?

: (यात्रियों की हँसी)

4. कंडक्टर : हाँ, तो लाला जी, जल्दी बताइए कहाँ का टिकट काटूँ ?

लाला जी : बस कहाँ तक जाएगी ?

कंडक्टर : आपको कहाँ जाना है ?

लाला जी : क्यों बताऊँ ?

कंडक्टर : नहीं बताएंगे तो टिकट कैसे दूँगा ?

लाला जी : तुम टिकट दे दो, जहाँ तक बस जाती है । मेरी जहाँ मर्जी होगी उतर जाऊँगा।

मनोहर : उतरते समय सब मुसाफिरों से कह दीजिएगा कि अपनी आँखें बंद कर लें ।

कंडक्टर : लाला जी निकालिए पच्चीस रुपए ।

लाला जी : यह लो ।

कंडक्टर : यह लीजिए टिकट ।

5. कंडक्टर : (अन्य यात्रियों से) आपका टिकट हो गया ? आपका ? और किसी साहब को टिकट लेना है ? (मनोहर से) आपका टिकट हो गया साहब ?

मनोहर : नहीं ।

कंडक्टर : तो साहब, आप बोलते क्यों नहीं ?

मनोहर : जब मुझे टिकट लेना ही नहीं है तो क्यों बोलूँ ?

कंडक्टर : आप बगैर टिकट सफर करना चाहते हैं ?

मनोहर : हाँ ।

कंडक्टर : मालूम है, बगैर टिकट सफर करना जुर्म है ?

मनोहर : मालूम है ।

कंडक्टर : फिर क्या मर्जी है ।

मनोहर : कुछ नहीं, आराम से बैठे हैं ।

कंडक्टर : बगैर टिकट आप बस में नहीं बैठ सकते ।

मनोहर : बैठ सकता हूँ ।

6. लाला जी : जरा देखो तो । चोरी और सीनाजोरी ।

मनोहर : लाला जी, तुम्हारी चोरी मैंने खूब देखी है । तुम्हारे पड़ोस में ही रहता हूँ। मेरे बीच में मत बोलो, नहीं तो सबके सामने तुम्हारी पोल खोल दूँगा ।

लाला जी : अरे, जाओ ! तुम क्या बिगाड़ लोगे मेरा ? शरम नहीं आती तुम्हें बगैर टिकट सफर करने में ? सरकार को धोखा देना चाहते हो ?

मनोहर : धोखा मैं नहीं, तुम देते हो । मसाले में मिलावट, घी में मिलावट करके जनता को ज़हर खिलाते हो और ऊपर से लीडरी झाड़ते हो ।

लाला जी : देखो जी, तुम मुझ पर झूठे आरोप लगा रहे हो । सबके सामने मेरी बेइज्जती कर रहे हो । इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा ।

मनोहर : वह तो बाद में देखा जाएगा, लाला जी । तुम्हारे खिलाफ मैंने पक्के सबूत इकट्ठे कर लिए हैं । अब एक दिन पुलिस को लेकर आने वाला हूँ । तैयार रहना ।

लाला जी : हाँ, हाँ, ले आना पुलिस को । देख लूँगा पुलिस को भी और तुम्हें भी ।

7. कंडक्टर : (मनोहर से) मैं आखिरी बार कहता हूँ साहब, आप टिकट ले लीजिए वरना मुझे बस थाने ले जानी पड़ेगी ।

मनोहर : शौक से ले चलो ।

बाबू जी : (मनोहर से) मिस्टर क्यों झगड़ा करते हो ? बस थाने जाएगी तो हमको दफ्तर पहुँचने में देर हो जाएगी ।

मनोहर : देर हो जाएगी तो आपको क्या फर्क पड़ेगा, बाबू जी ? वहाँ कौन-सा काम करते हैं ?

बाबू जी : काम नहीं करता तो क्या करता हूँ ?

मनोहर : सब जानता हूँ । दिनभर चाय पीने और गप्पें हाँकने के अलावा आपको और क्या काम रहता है ?

लाला जी : सबको अपनी ही तरह निठल्ला समझते हो ?

मनोहर : आपको नहीं, लाला जी । आप तो चौबीस घंटे लोगों की जेब काटने में लगे रहते हैं, यह मैं जानता हूँ ।

लाला जी : (बिगड़कर) ऐ, जबान संभालकर बात करो । जेबकतरे होगे तुम ।

मनोहर : काश ! मैं भी यह कला जानता !

8. कंडक्टर : साहब, आप लोग इस झगड़े को बाद में तय कर लेना । पहले टिकट की बात कीजिए । वह देख लीजिए बस में नोटिस लगा है – दिल्ली परिवहन की बसों में बिना टिकट सफर करना जुर्म है ।

मनोहर : (बात काटकर) और टिकट न लेने पर 200 रुपए तक जुर्माना हो सकता है जिसे अदा न करने पर 15 दिन की कैद भी हो सकती है – यह मैं जानता हूँ। तो कंडक्टर महाराज, तुम से जो हो सके कर लो । मैंने एक बार कह दिया कि मुझे टिकट नहीं लेना है । बस, बात खत्म हो गई ।

कंडक्टर : बात खत्म कैसे हो गई ? बात तो अब शुरू होगी । यह लीजिए थाना भी आ गया ।

(कंडक्टर बस रुकवाता है ।)

9. कंडक्टर : उतरिए, साहब ।

मनोहर : बड़े शौक से ।

कंडक्टर : लाला जी, आप भी अगर गवाही के लिए साथ चलें, तो बड़ी मेहरबानी होगी।

लाला जी : जरूर, जरूर । ऐसे लोगों को जरूर सज़ा दिलवानी चाहिए ।

कंडक्टर : बाबू जी, आप भी चलिए ।

बाबू जी : (घबराकर) क्यों ? हमको क्यों पकड़वाते हो ? हमने पूरा टिकट लिया है ।

कंडक्टर : नहीं बाबू जी, आपको क्यों पकड़वाऊँगा ?

बाबू जी : फिर हमको क्यों साथ चलने को कहते हो ?

कंडक्टर : इन साहब के खिलाफ गवाही देने के लिए ।

बाबू जी : नहीं बाबा, हम झगड़े में नहीं पड़ते ।

मनोहर : चलिए भी बाबू जी, तमाशा देखिएगा । साथ ही आज की तारीख में आपको कुछ काम करने को भी मिल जाएगा ।

लाला जी : बाबू जी, आपको जरूर गवाही देनी चाहिए । इन साहब ने आपको भी बुरा-भला कहा था । उसका मजा तो मिलना चाहिए इन्हें ।

बाबू जी : हाँ, हाँ वह तो है । कहता था मैं दफ्तर में कुछ काम नहीं करता । अब हम बताएंगे कि क्या काम करते हैं । चलो ।
(तीनों जाते हैं)

10. कंडक्टर : थानेदार साहब, ये साहब बस में बिना टिकट सफर कर रहे हैं ।

थानेदार : ये तीनों आदमी ?

बाबू जी : (घबराकर) नहीं, नहीं । मैंने तो पूरा टिकट लिया है ।

कंडक्टर : नहीं थानेदार साहब, यह बाबू जी और लाला जी गवाही के लिए हैं । टिकट इन तीसरे साहब ने नहीं लिया ।

थानेदार : (मनोहर से) देखने में तो शरीफ लगते हो ।

मनोहर : खानदानी शरीफ हूँ ।

लाला जी : क्या कहते हैं ? तभी तो टिकट नहीं लिया ।

थानेदार : (मनोहर से) क्यों साहब, आपने टिकट नहीं लिया ?

मनोहर : जी नहीं ।

थानेदार : आप जानते हैं टिकट न लेना जुर्म है ?

मनोहर : खूब अच्छी तरह ।

थानेदार : जेब में पैसे नहीं हैं ?

मनोहर : बटुआ भरा हुआ है ।

थानेदार : देखिए साहब, आप अब भी टिकट ले लें, तो मैं आपको छोड़ सकता हूँ ।

मनोहर : छूट तो मैं बगैर टिकट के भी जाऊँगा ।

थानेदार : कैसे ?

मनोहर : यह देखिए, मेरे पास बस का पास है ।

(थानेदार, कंडक्टर, लाला जी और बाबू जी एक साथ आश्चर्य से कहते हैं – एँ ।)

कंडक्टर : तो आपने पहले क्यों नहीं बताया ?

मनोहर : आपने पूछा ही कब था ? पूछते तो बता देता कि मेरे पास बस का पास है।

4.0 শব্দাবলী

অনুচ্ছেদ - 1

ভগদড় (স্ত্রী)	হুড়োহুড়ি
এক-এক করকে	একে একে / এক এক করে

অনুচ্ছেদ - 2

আবাজ দেনা	ডাকা
শরমানা	লজ্জা পাওয়া
নাঁর্থ ব্লাঁক	নর্থ ব্লক
সরোজিনী নগর	দিল্লীর একটি পরিচিত জায়গা।
বাজার (মার্কেট)	বাজার
কহকহা	জোরে হাসা
কহকহা লগানা	জোরে হাসা
টাঁগ (স্ত্রী)	পা / ঠ্যাং

অনুচ্ছেদ - 3

ব্লৈক মার্কেট (কালা বাজার)	কালো বাজার
বিগড়কর (নারাজ় হোকর)	বিগড়ে গিয়ে (অসন্তুষ্ট হয়ে)
গংভীরতা সে	গম্ভীর ভাবে
পরেশান হোনা	বিরক্ত হওয়া

অনুচ্ছেদ - 4

মর্জী (স্ত্রী) (ইচ্ছা)	ইচ্ছা
মুসাফির (যাত্রী)	যাত্রী

অনুচ্ছেদ – 5

বগৈর (বিনা)	বিনা
সফর (যাত্রা)	যাত্রা
জুর্ম (অপরাধ)	অপরাধ

অনুচ্ছেদ - 6

চোরী (স্ত্রী)	চুরি
পড়োস	প্রতিবেশী
পোল খোলনা	হাটে হাঁড়ি ভাঙা
বিগাড়না	বিগড়ানো
শরম আনা	লজ্জা পাওয়া
ধোখা দেনা	ধোকা দেওয়া
মিলাবট (স্ত্রী)	ভেজাল
জনতা (স্ত্রী) (লোগ)	জনতা
সীনা জোরী	ধৃষ্টতা / চোখ রাঙানো
সরকার (স্ত্রী)	সরকার
মসালা	মশলা
ঘী	ঘি
ज़हर (বিষ)	বিষ
লীডরী ঝাড়না	নেতাগিরি দেখানো
বেইজ্জতী করনা	বেইজ্জত করা
নতীজা (পরিণাম)	ফল (পরিণাম)
ঝুঠা আরোপ লগানা	মিথ্যা অভিযোগ দেওয়া
কে খিলাফ (কে বিরুদ্ধ)	-এর বি দ্ধে
তৈয়ার	তৈরী

পক্কা সবূত	অকাট্য প্রমান

অনুচ্ছেদ - 7

আখিরী	শেষ
থানা	থানা
শৌক সে (খুশী সে)	সানন্দে
ফর্ক পড়না	পার্থক্য / প্রভাব পড়া
গপ্পেং হাঁকনা	গালগপ্পো
নিঠল্লা	নিষ্কর্ম / কুঁড়ে
জবান সঁভালনা	মুখ সামলে/ সামলানো
কে অলাবা	কে ছাড়া
জেব কাটনা	পকেট কাটা
জেব কতরা	পকেটমার
কাশ !	যদি (দুঃখসূচক অভিব্যক্তি)

অনুচ্ছেদ - 8

তয করনা	ঠিক করা
পরিবহন	পরিবহন
অদা করনা	দেওয়া (টাকা)
জুর্মানা	জরিমানা
মহারাজ	মশাই
কৈদ	কয়েদ

অনুচ্ছেদ - 9

গবাহী (স্ত্রী)	সাক্ষ্য
নহীং, বাবা	না বাবা
পকড়বানা	ধরিয়ে দেওয়া
সজ়া (স্ত্রী)	শাস্তি
তমাশা	তামাশা
মেহরবানী (স্ত্রী)(দয়া)	অনুগ্রহ (দয়া)
বুরা-ভলা কহনা	ভালোমন্দ বলা / গালাগালি করা

অনুচ্ছেদ - 10

থানেদার	থানার অফিসার
শরীফ লগনা	ভদ্র মনে হওয়া
খানদানী শরীফ	বনেদী ভদ্রলোক
বটুআ	টাকার থলে / বটুয়া

5.0 বাগধারা ও অভিব্যক্তি

5.1 পাঠের বাগধারা ও অভিব্যক্তিগুলির বাংলা অর্থ নীচে দেওয়া হয়েছে এতে আপনারা পাঠটি ভালোভাবে বুঝতে পারবেন।

बस में चढ़ने के लिए भगदड़-सी मच जाती है।	বাসে ওঠার জন্য হুড়োহুড়ি লেগে যায়।
(वे) आवाज देकर माँग लें ।	(তিনি) ডেকে চেয়ে নিন।
शरमाने की जरूरत नहीं ।	লজ্জা পাওয়ার দরকার নেই।

आप क्यों परेशान होते हैं ?	আপনি কেন চিন্তা করছেন?
मेरी जहाँ मर्जी होगी उतर जाऊँगा ।	আমার যেখানে ইচ্ছা সেখানে নেমে যাব।
फिर क्या मर्जी है ?	তাহলে আপনার ইচ্ছা কি?
चोरी और सीनाजोरी ।	দোষ করেও চোখ রাঙানো।
मेरे बीच में मत बोलो ।	আমার কথার মাঝে কথা বোলো না।
तुम्हारे खिलाफ मैंने पक्के सबूत इकट्ठा कर लिए हैं ।	তোমার বি দ্ধে আমি অকাট্য প্রমাণ জোগাড় করেছি।
सबके सामने पोल खोल दूँगा ।	সবার সামনে হাটে হাঁড়ি ভেঙ্গে দেব।
तुम क्या बिगाड़ लोगे मेरा ?	তুমি আমার কি ক্ষতি করবে?
और ऊपर से लीडरी झाड़ते हो ।	তার ওপর নেতাগিরি দেখাচ্ছো?
तुम मुझ पर झूठा आरोप लगा रहे हो ।	তুমি আমাকে মিথ্যা অপবাদ দিচ্ছো।
सबके सामने मेरी बेइज्जती कर रहे हो ।	সবার সামনে আমার বেইজ্জতি / অপমান করছো।
इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा ।	এর পরিণাম ভালো হবে না।
देख लूँगा तुम्हें भी और पुलिस को भी ।	তোমাকে এবং পুলিশ দুজনকেই দেখে নেব।
आपको क्या फर्क पड़ेगा ?	তোমার ওপর আর কি প্রভাব পড়বে?
वहाँ कौन-सा आप काम करते हैं ।	সেখানে আপনি এমন কি কাজ করেন?
वहाँ गप्पें हाँकने के अलावा आपको और क्या काम रहता है ?	সেখানে গুলতানি করা ছাড়া আপনার কি আর কাজ থাকে?
आप तो चौबीसों घंटे लोगों की जेब काटने में लगे रहते हैं ।	চব্বিশ ঘণ্টাই আপনি লোকের পকেট কাটতে ব্যস্ত থাকেন।
जबान संभालकर बात करो ।	মুখ সামলে কথা বলো।
बात खत्म हो गई ।	কথা শেষ হয়ে গেছে।
बड़े शौक से ।	অত্যন্ত আনন্দের সঙ্গে।
बड़ी मेहरबानी होगी ।	বাধিত হব।
हम (मैं) झगड़े में नहीं (पड़ता / पड़ते) ।	আমি এই সব ঝগড়ার মধ্যে থাকি না।

इन साहब ने आपको भी तो बुरा-भला कहा था।	এই ভদ্রলোক আপনাকেও ভালো-মন্দ বলেছেন।
उसका मजा तो मिलना ही चाहिए इन्हें । देखने में शरीफ लगते हो ।	তার মজা তো একে পেতেই হবে। দেখে তো খুব ভদ্রলোক মনে হয়।

6.0 ব্যকরণ অংশ ঃ সংযোজক ভাব

(ক) ত্রি য়ার সংযোজক রূপ সম্ভাবনা, আজ্ঞা, অনুরোধ, ইচ্ছা অনুমতি শর্ত, উদ্দেশ্য ইত্যাদি অর্থে ব্যবহৃত হয়ে থাকে।

সংযোজক ভবিষ্যৎ কালের প্রত্যয় - गा – गे – गी বাদ দিয়ে ত্রি য়ার রূপ তৈরী হয়। কিন্তু বাংলায় এই ধরনের বাক্যে হয়তো / হতে পারে যোগ করা হয়। ভবিষ্যৎকালের ত্রি য়ারূপ একই থাকে। যেমন ঃ

शेखर कल आएगा ।	শেখর কাল আসবে।
शायद शेखर कल आए ।	হয়তো শেখর কাল আসবে।
शीला मुंबई नहीं जाएगी ।	শীলা মুম্বাই যাবে না।
हो सकता है, शीला भी जाए ।	হতে পারে, শীলাও যাবে।

(খ) ত্রি য়ার রূপ নীচে দেওয়া হল। মনে রাখতে হবে যে, কর্তার পু ষ ও বচন অনুযায়ী ত্রি য়ার রূপ পরিবর্তিত হয়।

উত্তম পু ষ	मैं पुं / स्त्री	आऊँ/बैठूँ	हम	आएँ/बैठें
মধ্যম পু ষ	तुम पुं / स्त्री	आओ/बैठो	आप	"
প্রথম পু ষ	वह/राम (पुं)	आए/बैठे	वे (लड़के) (पुं)	"
	वह/लीला (स्त्री)	''	वे (लड़कियाँ) (स्त्री)	"

ত্রি য়ার সংযোজক রূপ

मैं शायद बीमार होऊँ तुम शायद कल तक ठीक हो वह शायद छुट्टी पर हो	हम आप वे	शायद बीमार हों ।

(গ) সংযোজক ভাব— প্রয়োজনমূলক প্রয়োগ

সাধারণতঃ ত্রি য়াভাব বোঝাতে নিম্নলিখিত সংযোজক ব্যবহার করা হয়।

(i)	সন্দেহ বা অনুমান অর্থে	(iv)	অনুমতি চাওয়া বা দেওয়া অর্থে
(ii)	ইচ্ছার্থে	(v)	উদ্দেশ্য মূল্যক
(iii)	বিনম্র আদেশ / অনুরোধ অর্থে	(vi)	শর্ত মূলক

(i)	সন্দেহ বা অনুমান অর্থে	
(ক)	शायद चेकिंग इंस्पेक्टर टिकट माँगे ।	যদি চেকিং ইন্সপেক্টর টিকিট চায়।
(খ)	हो सकता है गाड़ी ठीक समय पर आ गई हो।	হতে পারে গাড়ী ঠিক সময়ে এসে গেছে।
(গ)	संभव है, आज बारिश हो ।	আজ বৃষ্টি হওয়ার সম্ভাবনা আছে / আজ বৃষ্টি হতে পারে।
(ii)	ইচ্ছার্থে	
(ক)	नया साल आपके लिए खुशियाँ लाए ।	নতুন বছর আপনার জন্য আনন্দ নিয়ে আসুক।
(খ)	आपकी यात्रा आनंदमय हो ।	আপনার ভ্রমণ / যাত্রা আনন্দময় হোক।
(গ)	भगवान करे आप जल्दी ठीक हो जाएँ ।	ভগবান ক ন আপনি তাড়াতাড়ি সুস্থ হয়ে উঠুন।
(iii)	বিনম্র আদেশ/ অনুরোধ অর্থে	
(ক)	आप कृपया दो शब्द बोलें ।	দয়া করে আপনি দু-চারটি কথা বলুন।
(খ)	बिना अनुमति के कोई अंदर न आए ।	অনুমতি ছাড়া কেউ ভিতরে আসবেন না।
(গ)	मरीज से कोई बात न करे ।	গীর সঙ্গে কেউ কথা বলবে না।
(iv)	অনুমতি চাওয়া বা দেওয়া অর্থে	
(ক)	काम पूरा हो गया है । क्या हम घर जाएँ ?	কাজ শেষ হয়ে গেছে। আমরা কি বাড়ী যেতে পারি?
(খ)	क्या मैं भी आपके साथ चलूँ ?	আমিও কী আপনার সঙ্গে যেতে পারি?
(গ)	आज शेखर जल्दी घर चला जाए ।	আজ শেখর তাড়াতাড়ি বাড়ী যাক।

(v)	উদ্দেশ্যমূলক	
(ক)	टैक्सी में जाओ ताकि समय पर स्टेशन पहुँच सको ।	ট্যাক্সীতে যাও যাতে সময় মত স্টেশনে পৌঁছতে পারো।
(খ)	मैंने बेटे को आपके पास भेजा है ताकि वह कुछ काम सीखे ।	আমি ছেলেকে আপনার কাছে পাঠালাম যাতে সে কিছু কাজ শিখতে পারে।
(গ)	आगे आइए, जिससे आप अच्छी तरह देख सकें।	সামনে আসুন যাতে আপনি ভালো করে দেখতে পারেন।
(vi)	শর্তমূলক	
(ক)	अगर आप बुरा न मानें तो मैं एक बात कहूँ ?	যদি আপনি কিছু মনে না করেন, তাহলে একটা কথা বলবো?
(খ)	अगर ड्राइवर शाम तक न आए तो मुझे फोन कर दें ।	যদি ড্রাইভার বিকেল পর্যন্ত না আসে তাহলে আমাকে একটা ফোন করে দেবেন।
(গ)	अगर वे कोई बात पूछें तो क्या कहूँ ?	যদি তিনি কোনো কথা জিজ্ঞেস করেন তাহলে কি বলবো?

মনে রাখবেন :-

(ক) সন্দেহ বা অনুমান অর্থে বাক্যের আগে शायद বা हो सकता है বা संभव है প্রয়োগ করা যেতে পারে।

शायद / हो सकता है / संभव है	आज बारिश हो । बाबू आज भी देर से आए । वह रास्ता भूल गया हो ।

(খ) শর্তমূলক বাক্যাংশের আগে শর্ত বোঝাতে 'अगर' অথবা 'यदि' এবং প্রধান বাক্যাংশের আগে 'तो' ব্যবহার করা হয়।

अगर / यदि	आप चाहें कोई जरूरी बात हो	तो	(आप) जा सकते हैं । वे मुझे फोन करें ।

(গ) উদ্দেশ্য বোঝাতে দুটি বাক্যাংশের মধ্যে 'ताकि' অথবা 'जिससे' ব্যবহার করা হয়।

शीला कमरे से बाहर निकले	ताकि / जिससे	नौकर कमरा साफ कर ले । मैं कमरा बंद करूँ ।

7.0 আপনাদের বোঝার জন্য পাঠ আধারিত কিছু প্রশ্নের উত্তর নীচে দেওয়া হল।

প্রশ্ন 1. बाबू जी कहाँ जाना चाहते थे ? वे पाँच रुपये का टिकट क्यों माँग रहे थे ?

उत्तर बाबू जी नॉर्थ ब्लाक जाना चाहते थे । उन्होंने कहा कि मैं एक टाँग पर खड़ा हो जाता हूँ । इसलिए पाँच रुपये का टिकट दीजिए ।

प्रश्न 2. लाला जी को कंडक्टर ने कितने रुपये का टिकट दिया ? क्यों ?

उत्तर कंडक्टर ने लाला जी को पच्चीस रुपये का टिकट दिया क्योंकि उन्होंने आखिरी स्टॉप तक का टिकट माँगा था ।

प्रश्न 3. मनोहर लाला जी की क्या पोल खोलना चाहता था ?

उत्तर मनोहर को पता था कि लाला जी घी, मसाले आदि में मिलावट करके बेचने का धंधा करते थे । मनोहर इसी बात की पोल खोलना चाहता था ।

प्रश्न 4. मनोहर ने बाबूजी पर क्या आरोप लगाया ?

उत्तर मनोहर ने बाबूजी पर यह आरोप लगाया कि वे दफ्तर में कोई काम नहीं करते । वे दिन भर चाय पीते हैं और गप्पें हाँकते हैं ।

प्रश्न 5. मनोहर ने टिकट क्यों नहीं खरीदा था ?

उत्तर मनोहर के पास बस का पास था । इसलिए उसने टिकट नहीं लिया था ।

— * —

पाठ / পাঠ-7

1.0 পাঠ বিষয়ক

2.0 এক নজরে পাঠ

3.0 পাঠ মৈং কমীজ় হূঁ (আত্মকথা/আত্মজীবনী)

4.0 শব্দাবলী / টীকা

5.0 ব্যাকরণগত নোট

1.0 পাঠ বিষয়ক

এই পাঠের উদ্দেশ্য আত্মকথা গদ্য রীতির সঙ্গে আপনাদের পরিচয় করান। 'মৈং কমীজ় হূঁ' জামার আত্মকাহিনীতে বলা হয়েছে কেমন করে মানুষ কাপড়ের আবিষ্কার এবং পোষাক তৈরী করা শিখল। এই পাঠে কাপড় বোনা, সেলাই এবং পোষাক তৈরী সম্পর্কিত শব্দাবলীর সঙ্গে আপনাদের পরিচয় করানো হয়েছে।

2.0 এক নজরে পাঠ

2.1 ব্রজভূষণ কাছারী থেকে বাড়ী ফিরে বিশ্রাম নিতে গিয়ে ঘুমিয়ে পড়েন। তিনি স্বপ্ন দেখেন যে তার জামা তাঁকে নিজের জন্ম কাহিনী শোনাচ্ছে। জামাটি বলছে যে মানুষ সভ্যতার প্রথম দিকে গাছের ছাল ও পশুদের চামড়ার তৈরী পোষাক ব্যবহার করতো, হঠাৎ একদিন মানুষ পোষাক তৈরীর জন্য তুলোর ব্যবহার করতে শিখলো। প্রথমে মানুষ সুতো কাটা, তাঁত বোনা এবং তা থেকে তৈরী বস্ত্রের পোষাক ব্যবহার করতে শিখল। কাপড় সেলাই করার পদ্ধতি শিখে নানান ধরনের পোষাক তৈরী করা রপ্ত করলো। জামাটি আরো বললো যে তাকে আমেদাবাদের কাপড়ের মিল থেকে দিল্লীতে আনা হয়েছে এবং একজন দর্জি তাঁকে বর্তমান রূপ দিয়েছে।

এমন সময় ব্রজভূষণের স্ত্রী এক কাপ গরম চা এনে তাকে জাগিয়ে দিলেন, কিন্তু ব্রজভূষণের কানে তখও জামার কথাগুলি বাজছিলো। "পরিধেয় বস্ত্রই মানুষের পরিচয়।"

3.0 পাঠ মৈং কমীজ় হূঁ (আমি জামা)

সরবে পাঠ ক ন।

1. ब्रजभूषण आज कचहरी से थके-माँदे लौटे थे । उन्होंने अपने कपड़े बदले, अपनी नई कमीज़ वार्डरोब में टाँगी, और फिर आराम कुर्सी पर बैठ गए । बैठते ही उनकी आँख लग गई ।

2. धीरे-धीरे उन्हें वार्डरोब से कुछ आवाजें सुनाई देने लगीं । उनकी नई कमीज़ कह रही थी, ''नहीं, यह तो मैं नहीं बता सकती कि मेरे पूर्वज कब और कहाँ पैदा हुए थे ? लेकिन इतना जरूर जानती हूँ कि मेरे पूर्वज पेड़ों की छाल और जानवरों की खाल रहे होंगे। इन्होंने ही आदमी को सभ्यता का पाठ पढ़ाया होगा।''

3. लेकिन छाल और खाल आदमी को सर्दी-गर्मी से बचाने में ज्यादा मदद न कर सकी । आदमी को तो एक ऐसी चीज की तलाश थी जो उसे सर्दी-गर्मी से भी बचाए और साथ ही उसको सुंदर भी बनाए । संयोग से कपास और सेमल के फलों से निकलने वाली रुई उसके हाथ लगी । रुई ने उसकी कल्पना को जगाया । मकड़ी के जाल और बया जैसे पक्षियों के घोंसले देखकर उसे लगा कि अब वह भी रुई से बहुत कुछ कर सकता है।

4. आदमी ने पहले रुई की पूनी बनाई, जिससे वह धीरे-धीरे सूत बनाना जान गया । सूत कातने के लिए उसने तकली और चरखे का उपयोग किया । सूत से कपड़ा बुनने के लिए उसने करघों का आविष्कार किया । जुलाहे सूत की लच्छी से करघे पर कपड़ा बुनने लगे । कपड़ों में तरह-तरह के डिजाइन भी डाले जाने लगे । सच पूछिए तो हथकरघे में बने हुए कपड़े मेरे परिवार के पहले सदस्य रहे होंगे । धीरे-धीरे सूती के अलावा ऊनी और रेशमी कपड़े भी बुने जाने लगे । फैशन और जरूरत के मुताबिक मैं अपने आप को बदलती रही । दर्जी मुझे काटकर और तरह-तरह से सिलकर अपनी कला का प्रदर्शन करता रहा । इंचीटेप, कैंची, सुई-धागा, सिलाई की मशीन दर्जी के खास सहायक बने जिनसे वह मुझे मनपसंद शक्ल देता रहा है । मैं अपने को और अपने भाई-बहनों को नई-नई शक्लों में देखकर खुशी से फूला नहीं समाती ।

5. 'हाँ' तो तुम पूछ रहे थे कि मैं खुद यहाँ कैसे आई ? अहमदाबाद की एक बड़ी सूती मिल में कपड़े के रूप में मेरा जन्म हुआ । मैं अपने परिवार के साथ वहाँ से दिल्ली आई । दिल्ली के एक व्यापारी ने मुझे अपनी वातानुकूलित दुकान में रखा । पर वहाँ मैं ज्यादा दिन न रह सकी । एक साहब मुझे अपने परिवार से अलग करके वहाँ से ले गए । बाद में मुझे पता चला कि वे इलाहाबाद के मशहूर वकील ब्रजभूषण हैं । उन्होंने मुझे एक दर्जी को दे दिया । दर्जी के यहाँ मेरे आसपास, मेरे बहुत से साथी टँगे हुए थे । मैंने देखा किसी का कॉलर खरगोश के कान की तरह लंबा था तो किसी का चूहे के कान की तरह छोटा था और किसी का कॉलर ही नहीं था ।

6. तुम देख रहे हो कि प्राचीन काल की सभ्यता से लेकर आज की मशीनी और कंप्यूटरी सभ्यता तक मेरी यात्रा कितनी रोमांचकारी रही । सच तो यह है कि मेरे पूर्वजों का इतिहास ही सभ्यता का इतिहास है । मैं अपने आप को यह कहने से भी नहीं रोक पा रही हूँ कि आदमी की तमीज़ उसकी कमीज़ है ।

7. एकाएक निर्मला की आवाज वकील साहब के कानों में पड़ी । वकील साहब हड़बड़ाकर उठे । सामने कमीज़ नहीं, उनकी पत्नी थी ।

4.0 शब्दावली

अनुच्छेद - I

आत्मकथा	আত্মজীবনী
कचहरी (स्त्री)	কাছারী
थके–माँदे	ক্লান্ত
कपड़े बदलना	পোষাক বদলানো
टाँगना	টাঙানো
आराम कुर्सी (स्त्री)	আরাম কেদারা
आँख लगना	চোখ লাগা

अनुच्छेद - 2

आवाज	আওয়াজ
सुनाई देना	শুনতে পাওয়া
पूर्वज	পূর্বপু ষ
पैदा होना	জন্ম হওয়া
छाल (स्त्री)	ছাল
खाल (स्त्री)	চামড়া
सभ्यता (स्त्री)	সভ্যতা
पाठ पढ़ाना	শিক্ষা দেওয়া

अनुच्छेद - 3

सर्दी–गर्मी (स्त्री)	সর্দি-গর্মি
बचाना	বাঁচানো
मदद करना	সাহায্য করা
तलाश (स्त्री)	খোঁজ
सुंदर	সুন্দর
संयोग से	সংযোগবশতঃ
कपास	কাপাস
सेमल	শিমূল
रुई (स्त्री)	তুলো
हाथ लगना	হাতে পাওয়া / হঠাৎ পাওয়া
कल्पना (स्त्री)	কল্পনা
जगाना	জাগানো
मकड़ी (स्त्री)	মাকড়সা
मकड़ी का जाल	মাকড়সার জাল
बया (स्त्री)	বাবুই পাখি
घोंसला	পাখির বাসা
उसे लगा	তার মনে হল

अनुच्छेद - 4

पूनी (स्त्री)	তুলোর গোলা
सूत	সূতো
कातना	সূতো কাটা
तकली (स्त्री)	টাকু
चरखा	চরখা
(का) उपयोग करना	(এর) ব্যবহার করা
बुनना	বোনা

करघा	তাঁত
आविष्कार करना	আবিষ্কার করা
जुलाहा	তাঁতি
सूत की लच्छी (स्त्री)	সূতোর গোছা / লাছি
डिजाइन डालना	ডিজাইন করা
सच पूछिए तो	সত্যি বলতে গেলে
हथकरघा	হস্তচালিত তাঁত
सदस्य	সদস্য
सूती	সূতী
ऊनी	উলের
रेशमी	রেশমী
बुने जाने लगे	বোনা শু হলো
जरूरत	দরকার
के मुताबिक	এর মতো / অনুসারে
अपने आपको बदलना	নিজেকে বদলানো
दर्जी	দর্জি
सिलकर	সেলাই করে
कला (स्त्री)	শিল্প
प्रदर्शन करना	প্রদর্শন করা
कैंची (स्त्री)	কাঁচি
सुई (स्त्री)	সূঁচ / ছুঁচ
धागा	সূতো

অনুচ্ছেদ - 5

खुद	নিজে
सूती मिल	সূতী মিল
का जन्म होना	এর জন্ম হওয়া
वातानुकूलित	শীতাতাপ নিয়ন্ত্রিত
ले जाना	নিয়ে যাওয়া
पता चलना	খোঁজ পাওয়া / জানা
दर्जी के यहाँ	দর্জির কাছে
खरगोश के कान	খরগোশের কান
चूहा	ইঁদুর

অনুচ্ছেদ - 6

प्राचीन काल	প্রাচীন কাল
रोमांचकारी	রোমাঞ্চকারী
इतिहास	ইতিহাস
मैं अपने आपको यह कहने से भी नहीं रोक पा रही हूँ	এই কথাটি বলার জন্য আমি নিজেকে সামলাতে পারছি না।
तमीज (स्त्री)	শিষ্টাচার
आदमी की तमीज़ उसकी कमीज़ है	পরিধেয় বস্ত্রই মানুষের পরিচয় পোশাকই মানুষের পরিচয়

অনুচ্ছেদ - 7

आवाज कान में पड़ना	আওয়াজ শোনা
हड़बड़ाना	তাড়াহুড়ো

4.1 পাঠ্য বিষয়টি বুঝে নিয়ে নীরব পাঠ ক ন।

4.2 শব্দগঠন

(ক) বিশেষ্যের সঙ্গে–ই প্রত্যয় যোগে বিশেষণ গঠন।

	বিশেষ্য		**প্রত্যয়**		**বিশেষণ**	
মেশিন	মশীন	+	ই	=	মশীনী	মেশিন দ্বারা
উল	ঊন	+	ই	=	ঊনী	উলের তৈরী জিনিস
সূতো	সূত	+	ই	=	সূতী	সূতী
রেশম	রেশম	+	ই	=	রেশমী	রেশমী

(খ) 'তা' প্রত্যয় যোগ করে গুণবাচক বিশেষ্য থেকে বিশেষণের গঠন।

সভ্য	সভ্য	+	তা	=	সভ্যতা	সভ্যতা
সুন্দর	সুংদর	+	তা	=	সুংদরতা	সৌন্দর্য্য
যোগ্য	যোগ্য	+	তা	=	যোগ্যতা	যোগ্যতা
নম্র	নম্র	+	তা	=	নম্রতা	নম্রতা

(গ) 'ক' প্রত্যয় যোগ করে কার্যকর্তা বোধক শব্দ গঠন।

লেখ	লেখ	+	ক	=	লেখক	লেখক
পাঠ	পাঠ	+	ক	=	পাঠক	পাঠক
সংস্কার	সুধার	+	ক	=	সুধারক	সংস্কারক

(ঘ) শব্দ দিত্বের একই অর্থে প্রয়োগ

ক্রি য়া	বিশেষ্য	বিশেষণ
খানা–পীনা	লড়াই–ঝগড়া	থকা–মাঁদা
রোনা–ধোনা	খেল–কূদ	বুরা–ভলা
গানা–বজানা	হঁসী–মজাক	টূটা–ফূটা

5.0 ব্যাকরণগত নোট

5.1 ক্রিয়াপদ (का) जन्म होना-এর জন্ম হওয়া

(ক) (i) নিম্নলিখিত বাক্যগুলিতে (का) जन्म होना -ক্রিয়াপদের বিভিন্ন প্রয়োগ :–

मेरा जन्म अहमदाबाद में हुआ ।

गांधी जी का जन्म पोरबंदर में हुआ था ।

मेरी बेटी का जन्म जाड़े में हुआ था ।

कमीज़ का जन्म कब हुआ ?

(ii) লক্ষ্য ক ন বিশেষ্য শব্দ 'जन्म' বস্তুতঃ পুংলিঙ্গ একবচন। সেই অনুসারে 'होना' ক্রিয়ার অন্বিতি হয়েছে। 'जन्म होना'-র পরিবর্তে হিন্দীতে 'पैदा होना' ক্রিয়ার প্রায়শই ব্যবহার হয়।

गांधी जी पोरबंदर में पैदा हुए थे ।

मैं अहमदाबाद में पैदा हुआ ।

मेरी बेटी जाड़े में पैदा हुई थी ।

(iii) লক্ষ্য ক ন 'होना' ক্রিয়ার অন্বিতি কর্তার লিঙ্গ ও বচনের সঙ্গে হয়েছে। 'पैदा' শব্দটি অপরিবর্তিত আছে।

बंगाल में चावल बहुत पैदा होता है ?

हिमाचल प्रदेश में सेब बहुत ज्यादा पैदा होता है ।

इस जमीन पर कुछ पैदा नहीं होता ।

5.2 তাৎক্ষণিক অর্থে 'ते' 'ही'-র প্রয়োগ করা হয়।

(i) নীচের বাক্যগুলি লক্ষ্য ক ন।

बैठते ही ब्रजभूषण ने आँखें मूँद लीं ।	বসতেই
खबर मिलते ही हम आ गए ।	খবর পেতেই
गाड़ी आते ही प्लेटफार्म पर लोग इधर–उधर भागने लगे ।	গাড়ী আসতেই

(ii) বাক্যের প্রথমে 'जैसे ही' ব্যবহার করেও অনুরূপ ভাব প্রকাশ করা যায়।

जैसे ही ब्रजभूषण बैठे, उनकी आँख लग गई ।	যেই

जैसे ही हमें खबर मिली, हम आ गए ।	যেই
जैसे ही गाड़ी आई, लोग प्लेटफार्म पर इधर-उधर भागने लगे।	যেই

5.3 সুনাই দেনা ত্রি য়ার ব্যবহার

(a) শুতে পাওয়া অর্থে 'सुनाई देना' ত্রি য়ার ব্যবহার।

कुछ आवाजें सुनाई दीं ।	কিছু আওয়াজ শোনা গেল।
शोर के कारण कुछ सुनाई नहीं देता ।	চেঁচামেচির জন্য কিছুই শোনা গেল না।
क्या आपको मेरी आवाज सुनाई देती है ?	আপনি কি আমায় শুনতে পাচ্ছেন?

(b) অনুরূপ ভাবে দেখতে পাওয়ার অর্থে হিন্দীতে 'दिखाई देना' ত্রি য়ার ব্যবহার হয়।

धुंध में कम दिखाई देता है ।	কুয়াশা হলে কম দেখা যায়।
शुक्र का तारा सुबह दिखाई देता है ।	শুকতারা সকালে দেখা যায়।
रास्ते में मोहन को एक साँप दिखाई दिया ।	রাস্তায় মোহন একটা সাপ দেখতে পেল।

5.4 বাগধারা ও অভিব্যক্তি

পাঠ থেকে কিছু বাগধারা ও অভিব্যক্তি এবং হিন্দী ও বাংলায় তাদের সমান রূপ ও ব্যবহার নীচে দেওয়া হয়েছে। এই প্রয়োগগুলি দেখে কিছু নতুন বাক্য গঠন ক ন।

1. फूला न समाना আনন্দে আত্মহারা / খুশীতে ডগমগ

নিম্নলিখিত বাক্যগুলিতে আনন্দে আত্মহারা / খুশীতে ডগমগ হওয়া অর্থে 'खुशी से फूला न समाना' বাগধারার প্রয়োগ লক্ষ্য ক ন :-

मैं अपने साथियों को नई शक्ल में देखकर खुशी से फूला न समाया ।[1]

कोलम्बस अपनी खोज के कारण खुशी से फूला न समाया ।[2]

वह अपने सुंदर रूप को देखकर खुशी से फूली न समाई ।[3]

---

1 আমার বন্ধুদের নবরূপ দেখে আমি আনন্দে আত্মহারা / খুশীতে ডগমগ হয়েছিলাম।

2 কলম্বাস নিজের আবিষ্কারের জন্য আনন্দে আত্মহারা/ খুশীতে ডগমগ হয়েছিলেন।

2. हाथ लगना - পাওয়া

कपास और सेमल की रुई आदमी के हाथ लगी ।

सुबह से शाम तक तुम घूमते रहे, परंतु कुछ भी हाथ न लगा ।

3. आँख लगना - ঘুমিয়ে পড়া

जब वकील साहब की आँख लगी तो उन्होंने एक सपना देखा ।

थकान के कारण लेटते ही उसकी आँख लग गई ।

— * —

3 সে নিজেকে সুন্দর রূপে দেখে আনন্দে আত্মহারা/খুশীতে ডগমগ হয়ে উঠলো।

পাঠ / পাঠ -৪

1.0 পাঠ সম্পর্কে

2.0 পত্র লেখন পত্র লিখন

প্রণালী -I

2.1 ব্যক্তি গত পত্রের বৈশিষ্ট্য

3.0 নমুনা পত্র-I

প্রণালী -II

4.0 অব্যক্তি গত পত্র

5.0 নমুনা পত্র-II

(1) সরকারী বিভাগের পত্র

(2) বাণিজ্যিক পত্র

প্রণালী -III

6.0 নমুনা পত্র-III

নিমন্ত্রণ পত্র

7.0 বাক্য গঠন ও তার ব্যবহার

8.0 ব্যাকরণগত নোট

9.0 সম্পূরক সামগ্রী ঃ প্রচলিত অভিব্যক্তি

* মনে রাখবেন, ই-মেল বা মেসেজ লেখার সময় পত্র লেখার একই পদ্ধতি অনুসরণ করা হয়।

1.0 পাঠ সম্পর্কে

এই পাঠের উদ্দেশ্য পত্র রচনার নিয়ম ও শৈলীর পরিচয় দেওয়া। সুতরাং পত্রগুলিকে তিন ভাগে ভাগ করা হয়েছে। (i) ব্যক্তি গত (ii) অব্যক্তি গত এবং (iii) নিমন্ত্রণ পত্র।

অব্যক্তি গত পত্র পর্যায়ে বিভিন্ন ধরনের চিঠি যেমন সরকারী আধিকারিকদের উদ্দেশ্যে লেখা চিঠি, বই কেনার জন্য পুস্তক বিক্রে তার কাছে লেখা চিঠির উদাহরণ দেওয়া হয়েছে। কয়েকটি নিমন্ত্রণ পত্রের নমুনাও এই পাঠে দেওয়া হয়েছে।

2.0 পত্র লেখন (পত্রলিখন)

প্রণালী -I

2.1 ব্যক্তি গত পত্রের বৈশিষ্ট্য

(ক) ব্যক্তি গত পত্রের নিয়মগুলি নীচে দেওয়া হল ঃ

(1) পত্র লেখকের নিজের নাম ও ঠিকানা।

(2) পত্র লেখার তারিখ।

(3) পত্র প্রাপকের প্রতি নমস্কার, প্রণাম, শুভেচ্ছা, অভিনন্দন ইত্যাদি।

(4) পত্রের মূল বক্তব্য

(i) ভূমিকা

(ii) বিষয়

(iii) উপংসহার

(5) বিদায় সম্ভাষণ (যেমন ঃ তোমার / আপনার, স্নেহধন্য, অনুগত ইত্যাদি)।

(6) স্বাক্ষর

(7) প্রাপকের ঠিকানা

(খ) ব্যক্তি গত পত্র সাধারণতঃ রীতিবদ্ধ হয় না। চিঠির ভাষাতে লেখকের ব্যক্তি গত মনোভাব প্রকাশ পায়।

(গ) কিছু পারস্পরিক সম্বোধন, অভিবাদন ও শেষের বিদায় সম্ভাষণের শৈলী নীচে দেওয়া হল।

কাকে সম্বোধন করা হচ্ছে	সম্বোধনের রীতি	অভিবাদন / নমস্কার	বিদায় সম্ভাষণ
গু জন (বাবা, মা, কাকা, কাকীমা, শিক্ষক ইত্যাদি)	আদরণীয় (পুং)[1] পূজনীয় (পুং) পূজ্য (পুং / স্ত্রী) আদরণীয়া (স্ত্রী) পূজনীয়া (স্ত্রী)	প্রণাম সাদর প্রণাম চরণ স্পর্শ[2] সাদর চরণ স্পর্শ	আপকা / আপকী[3] স্নেহভাজন[4]

समवयसी भाई / बोन ও বন্ধু ইত্যাদি	प्रिय/प्यारा/प्यारी[5] प्रियवर[6]	नमस्ते / सप्रेम[7] नमस्ते	स्नेही[8]
कमवयसी पुत्र / कन्या भाग्ने / भाग्नी छात्र / छात्री	आयुष्मान (पुं) आयुष्मती (स्त्री) प्रिय चिरंजीवी (पुं)[9]	प्रसन्न रहो / आशीर्वाद	शुभचिंतक[10] / शुभेच्छु

1. माननीय 2. प्रणाम 3. आपनार 4. स्नेहধন্য 5. प्रिय 6. प्रियतम 7. प्रीतिसह 8. स्नेहের 9. दीर्घजीवी 10. শুভাকাঙ্খী

3.0 नमूना पत्र/ पत्रों के नमूने-I

i) व्यक्तिगत पत्र (ব্যক্তি গত পত্র)

(क) पिता को पत्र

बी-114, सफदरजंग एनक्लेव
नई दिल्ली

दिनांक 11.11.2018

पूज्य[1] बाबू जी,

सादर चरण स्पर्श[2] !

मैं यहाँ कुशल से[3] हूँ । आशा है आप सब भी सकुशल होंगे । यहाँ प्रोजेक्ट तैयार करने में व्यस्त[4] था इसलिए पत्र लिखने में देर हो गई । आपसे ढेर सारी बातें करनी थीं । इसलिए व्हाट्स ऐप पर संदेश नहीं भेज रहा हूँ । स्काइप के लिए तो आपको पता ही है कि बीच-बीच में नेट की सेवा बाधित[5] होते रहने के कारण ठीक से बात नहीं हो पाती सो ले-देकर पत्र का माध्यम ही बचा जिसमें तसल्ली[6] से और आत्मीयतापूर्वक[7] मन की बातें रखी जा सकती हैं । पिता जी एक तो मेरा प्रोजेक्ट पूरा हो गया है । उसमें बहुत मेहनत करनी पड़ी । दूसरे, यहाँ प्लेसमेंट के लिए कंपनियों का आना शुरू हो गया है । इस सिलसिले में कुछ ड्यूटीज़ मुझे भी मिली हैं । पाठ्यक्रम पूरा होने पर हम सभी साथी[8] अब अलग-अलग स्थानों पर चले जाएंगे । पता नहीं किसे कहाँ जॉब मिलेगी ? खैर ....

माँ और दीदी कैसी हैं ? दीदी की जॉब ठीक ही चल रही होगी । दीदी के विवाह की बात कहाँ तक पहुँची ?

माँ और दीदी को चरणस्पर्श ।

आपका स्नेहभाजन
अजय

1. माननीय 2. प्रणाम 3. कुशले/भालो 4. व्यस्त 5. बाधित 6. निश्चिन्त 7. आत्मीयता पूर्वक 8. बन्धु

(ख) माँ को पत्र

मकान नं. 94
जे पॉकेट, दिलशाद गार्डन
दिल्ली

28.12.2018

आदरणीय माँ,

चरण स्पर्श ।

यहाँ मैं ठीक हूँ । आशा है, वहाँ घर पर भी सब सकुशल होंगे । मेरी संगीत की कक्षाएँ नियमपूर्वक[9] चल रही हैं । संगीत सिखाने वाली अध्यापिका का व्यवहार बहुत अच्छा है । ये परिवार की सदस्य की तरह विद्यार्थियों से स्नेह रखती हैं । मैं शास्त्रीय गायन[10] के साथ-साथ सितार बजाना भी सीख रही हूँ । आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि मैं यहाँ पर दो-तीन छोटे बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाती हूँ । बच्चों को पढ़ाने में मुझे बड़ा मजा आ रहा है ।

यहाँ आस-पड़ोस[11] के लोग भी बहुत अच्छे हैं, आप सब मेरी चिंता बिल्कुल मत कीजिए । आपका और पिता जी का स्वास्थ्य कैसा है ? आशा है वे नियमित योगाभ्यास कर रहे होंगे ? भैया यहाँ आने के लिए कह रहे थे । वे कब आएंगे ?

पिता जी और भैया को चरणस्पर्श ।

आपकी आज्ञाकारी[12] बेटी
लक्ष्मी

9. नियमित 10. उच्चाङ्ग 11. आशपाश 12. आज्ञाकारी/ अनुगत

প্রণালী-II

4.0 অব্যক্তি গত পত্র

4.1 অব্যক্তি গত পত্রের বৈশিষ্ট্য

অব্যক্তি গত পত্রের নিম্নলিখিত পাঁচটি বৈশিষ্ট্য লক্ষ্য ক ন।

(1) পত্রলেখকের ঠিকানা।

(2) পত্র লেখার তারিখ।

(3) যাকে চিঠি লেখা হচ্ছে তার ঠিকানাসহ নাম ও পদ।

(4) সম্বোধনের রীতি

(5) চিঠির মূল বক্তব্য

(6) শেষে পত্র লেখকের বিদায় সম্ভাষণ

4.2 এই চিঠিগুলির ভাষা ছকে বাঁধা এবং এর একটি নির্দিষ্ট রূপ আছে। সাধারণতঃ বাক্য গঠনে কর্মবাচ্যের রূপ ব্যবহার করা হয়। ব্যক্তি গত মনোভাব বা ভাব প্রবণতা প্রায় থাকেই না। নিয়মনিষ্ঠ ভাষার ব্যবহার করা হয় ।অব্যক্তি গত ও প্রচলিত অভিব্যক্তি র অনুসারী হয়।

4.3 কিছু প্রয়োজনীয় প্রচলিত অভিব্যক্তি 9.0. -তে দেওয়া আছে। তাৎক্ষণিক সুবিধা ও সহজে বোঝার জন্য নতুন শব্দ ও অভিব্যক্তি গুলির বাংলা সমপর্যায় দেওয়া হয়েছে।

5.0 নমুনা পত্র / पत्रों के नमूने-II

5.1 এখানে উদাহরণস্বরূপ কিছু অব্যক্তি গত পত্রের নমুনা দেওয়া হয়েছে। প্রথম পত্র আমাদের বিভাগের সঙ্গে হিন্দীতে পত্র লিখতে উৎসাহিত করার জন্য। দ্বিতীয়টি বাণিজ্যিক পত্রের উদাহরণ।

(i) সরকারী দপ্তরে লেখা চিঠি।

(क) ঠিকার পরিবর্তনের কথা জানিয়ে পত্রাচার পাঠত্র ম বিভাগের সহকারী শিক্ষা আধিকারিকের কাছে লেখা পত্র।

(প্রেরকের নাম ও ঠিকানা)	জয়চন্দ্রন 91/2, জয়া নগর, গুবাহাটী- 781022, (असम)

(তারিখ)	28.1.2019
(সমীপেষু)	सेवा में[1]
(নাম অথবা পদ এবং ঠিকানা)	सहायक निदेशक[2], पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, पश्चिमी खंड[3]-7, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली-110066
(সম্বোধনের ধরণ)	महोदय[4]
(চিঠির মূল বক্তব্য)	निवेदन है कि मैं हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम का छात्र हूँ और मेरा रोल नंबर .... है । हाल ही में मेरा तबादला कोच्चि से गुवाहाटी हो गया है । मैंने आज ही कार्यभार संभाला है । मेरा नया पता ऊपर दिया हुआ है । कृपया आगे से पत्र व्यवहार मेरे नए पते पर ही करें ।
(ধ্যবাদ জ্ঞাপন)	धन्यवाद ।
(বিদায় সম্ভাষণ ও স্বাক্ষর)	भवदीय के. जी. जयचंद्रन रोल नं. ....

1. সমীপেষু 2. সহায়ক নির্দেশক 3. পশ্চিমী খণ্ড 4. মহাশয়

(ख) উপনির্দেশক পত্রাচার পাঠত্র ম বিভাগ থেকে প্রাপ্ত উত্তরপত্রগুলি ফেরত পাঠানোর জন্য তাগিদ পত্রের উত্তর।

26/6, वेस्ट हिल
कोषि़क्कोड

सेवा में

उपनिदेशक[1]

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग,

पश्चिमी खंड-7, रामकृष्ण पुरम

नई दिल्ली- 110066

महोदय,

मैं यह पत्र आपके दिनांक 01.09.2018 के पत्र संख्या एम. ए. बी. 300/12 प.पा. के संदर्भ[2] में लिख रहा हूँ । आपने लिखा है कि मेरे उत्तर पत्र संख्या 1, 2, 3, और 4 आपको नहीं मिले हैं । इस विषय में मुझे यह सूचित करना है कि –

1. उत्तर पत्र–1 और 2 मूल्यांकन के बाद मुझे वापस मिल गए हैं । उन्हें आपने 30.07.2018 को लौटाया था । उत्तर पत्र संख्या–1 में मुझे 14/20 और संख्या–2 में 15/20 अंक मिले हैं ।

2. तीसरे एवं चौथे उत्तर पत्र मैंने दिनांक 16.08.2018 को भेजे थे । मुझे आश्चर्य है कि ये उत्तर पत्र आपको अभी तक क्यों नहीं मिले । कृपया, एक बार फिर अपना रिकार्ड देखने का कष्ट करें । यदि ये आपको न मिले हों तो यथा शीघ्र दूसरे उत्तर पत्र भिजवाएँ । मैं उन्हें फिर से भरकर भेज दूँगा ।

धन्यवाद सहित ।

भवदीय,

रमेश कुमार

रोल नं. .....

1. उपनिर्देशक 2. प्रसङ्ग

(ग) पूर्ववती पत्रेर उत्तर - ऊपर के पत्र का उत्तर

भारत सरकार
पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग,
केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय)[1]

पश्चिमी खंड–7, रामकृष्ण पुरम
नई दिल्ली– 110066
दिनांक : 25.11.2018

प्रिय छात्र,

आपका दिनांक 10.09.2018 का पत्र मिला, धन्यवाद ।

आपके उत्तर पत्र संख्या 1 और 2 में प्राप्त अंक[2] क्रमश:[3] 14/20 और 15/20 अब हमने रिकार्ड में दर्ज कर लिए हैं [4]।

आपके उत्तर पत्र संख्या 3 और 4 अभी तक हमें नहीं मिले हैं । उनकी प्रतियाँ [5] संलग्न[6] हैं । इन्हें कृपया जल्दी से जल्दी पूरा करके भिजवा दें ।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय

(क ख ग)

उपनिदेशक

1. মানব সম্পদ উন্নয়ন মন্ত্রক 2. অঙ্ক (নম্বর) 3. ত্র মশঃ 4. নথিভুক্ত করা হয়েছে 5. প্রতি 6. সংযুক্ত

(घ) ভি.পি.পি. মাধ্যমে বই কেনার জন্য পুস্তক বিত্রে তাকে লেখা চিঠি।

वी. पी. पी. द्वारा कुछ पुस्तकें मँगवाने के लिए पुस्तक विक्रेता को पत्र ।

सेक्टर 8 सी/107,

चंडीगढ़ - 160008

दिनांक 25.12.2018

सेवा में

बिक्री प्रबंधक,

नेशनल बुक ट्रस्ट,

वसंत कुंज,

नई दिल्ली- 110070

प्रिय महोदय,

मुझे आपके द्वारा प्रकाशित निम्नलिखित पुस्तकों की आवश्यकता[1] है :-

1. रश्मिरथी - रामधारी सिंह 'दिनकर' दो प्रतियाँ
2. कामायनी - जयशंकर प्रसाद एक प्रति[2]
3. गोदान - प्रेमचंद एक प्रति

कृपया उपयुक्त[3] कमीशन काटकर[4] उपर्युक्त[5] सभी पुस्तकें वी. पी. पी. द्वारा ऊपर लिखे पते पर भिजवाने की व्यवस्था[6] करें ।

इस सेक्टर के पुस्तकालय के लिए बच्चों की कुछ अच्छी पुस्तकें खरीदने की योजना[7] है इसलिए नवीनतम पुस्तक-सूची भी भिजवाने की कृपा करें ।

भवदीय,

ए. पी. देवराज

1. प्रयोजन/दरकार 2. एक कपि 3. उपयुक्त 4. बाद दिये 5. उपरिउक्त 6. व्यवस्था 7. परिकल्पना

(ङ) अभियोग / शिकायत पत्र

(i) गंगा नदी में बढ़ते प्रदूषण[8] के संबंध में संपादक[9] के नाम पत्र

24 दशाश्वमेध घाट
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

दिनांक .....

सेवा में

संपादक
आज
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

प्रिय महोदय,

वाराणसी का महत्व इसलिए है कि यह नगर भारत का एक पवित्र[1] तीर्थ-स्थल[2] है । काशी में गंगा-स्नान करके लोग अपने को धन्य[3] मानते हैं । पर्व-त्यौहार[4] जैसे विशेष अवसरों पर यहाँ लाखों की संख्या में जनता गंगा-स्नान करने के लिए आती है । इसके अतिरिक्त सारे शहर को पेय जल[5] गंगा से ही मिलता है । अतएव यह कहना उचित होगा कि गंगा प्राणदायिनी[6] नदी है ।

हमें यह देखकर बड़ा दु:ख होता है कि गंगा का पावन[7] जल धीरे-धीरे प्रदूषित होता[8] जा रहा है क्योंकि शहर की गंदी नालियों[9] तथा कारखानों की गंदगी[10] इसमें गिरती रहती है। अतएव,[11] इस पत्र के माध्यम से[12] मैं जल प्रदूषण की गंभीर समस्या[13] की ओर नगरपालिका तथा सरकार के स्वास्थ्य अधिकारियों[14] का ध्यान आकर्षित करना[15] चाहता हूँ । वाराणसी के नागरिकों[16] तथा पर्यावरण-प्रेमियों[17] का भी कर्तव्य है कि वे गंगा में गंदी नालियों के मिलने तथा कारखानों की गंदगी फेंकने के खिलाफ जनता को जागरूक[18] करें।

साथ ही सरकार द्वारा चलाए जा रहे गंगा सफाई अभियान[19] में लोग अपना सक्रिय[20] सहयोग करें।

भवदीय,

स्वामीनाथन

1. पवित्र 2. तीर्थस्थान 3. आशीर्वाद धन्य 4. उत्सव/परव 5. पानीय जल 6. जीवनदान 7. पवित्र 8. दूषित हुओया 9. नाला 10. मयला 11. अतएव 12. -एर माध्यमे 13. गभीर समस्या 14. स्वास्थ्य आधिकारिक 15. मनोयोग आकर्षण करा 16. नागरिक 17. परिवेश प्रेमी 18. जाग क 19. अभियान 20. सत्रि य

(ii) सड़क दुर्घटनाओं की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए संपादक के नाम पत्र

हौजखास
नई दिल्ली।

दिनांक .....

सेवा में

संपादक
दैनिक जागरण
बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-110002

प्रिय महोदय,

आपके समाचार पत्र में पिछले दिनों कई पत्र सड़क दुर्घटनाओं[1] के बारे में छपे[2] हैं । इस संबंध में मैं भी अपने सुझाव देना चाहती हूँ ।

दिल्ली में रोज कई सड़क दुर्घटनाएँ होती हैं, यह अत्यंत चिंता एवं दुख की बात[3] है। इन दुर्घटनाओं को रोकने के लिए तुरंत[4] प्रभावी[5] उपाय किए जाने चाहिए । मेरा सुझाव यह है कि अगर यातायात के नियमों का कड़ाई से पालन किया जाए तो ये दुर्घटनाएँ कम हो सकती हैं । कई लोग असावधानी[6] से गाड़ियाँ चलाते हैं और यातायात के नियमों का पालन नहीं करते । ऐसे लोगों के विरुद्ध[7] कड़ी कार्रवाई[8] की जानी चाहिए । लोगों को यातायात के नियमों की और अधिक जानकारी[9] दी जानी चाहिए। यातायात नियमों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए।

भवदीय,

लीला पाणिग्रही

1. पथ दुर्घटना 2. छापा हयेछे 3. दुःखजनक 4. तत्क्षनात 5. प्रभावशाली 6. असावधानता 7. वि द्ध 8. कड़ा व्यवस्था 9. जानार जन्य

প্রণালী - III

6.0 নমুনা পত্র / পত্रों के नमूने-III

6.1 নিমন্ত্রণ পত্র

নিমন্ত্রণ পত্র ব্যক্তি গত, সামাজিক অথবা সরকারী নানা রকমের হতে পারে।

6.2 নিমন্ত্রণ পত্রের বৈশিষ্ট্য

এই চিঠিগুলির ভাষা, শৈলী এবং অভিব্যক্তি প্রথাগত হয়।

6.3 নমুনা নিমন্ত্রণ পত্র

(ক) বিবাহের নিমন্ত্রণ পত্র - विवाह का निमंत्रण पत्र

श्रीमती एवं डॉ. के. के. राजू

अपनी सुपुत्री

आयु. लक्ष्मी

एवं

चि. वेंकटेश

सुपुत्र श्रीमती एवं श्री गणेशन

के

शुभ विवाह[1]

के पुनीत अवसर पर वर-वधू को आशीर्वाद देने हेतु

आपको सादर आमंत्रित करते हैं ।

-: कार्यक्रम :-

रविवार, दिनांक 6 जून, 2018

मुहूर्त : प्रातः 9.00 - 10.00

प्रीतिभोज : दोपहर 12 से 2 बजे तक

स्थान : ललित मंडपम्, श्रीनिवास एवेन्यू, चेन्नई- 600023

उत्तरापेक्षी [2]

आर. सुब्रह्मण्यम्

18 राज वीथी, चेन्नई - 600098

शुभेच्छु

आर. महादेवन

सुधा महादेवन

(ख) एकटि सरकारी अनुष्ठानेर आमन्त्रण

(किसी सरकारी समारोह का निमंत्रण)

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

भारत सरकार, नई दिल्ली

दिनांक 24.09.2018 से 29.09.2018 तक

हैदराबाद में आयोजित

व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम[3]

के

समापन[4] समारोह[5]

के अवसर पर

आप सादर आमंत्रित हैं ।

श्री नागेश्वर उथप्पा

(केंद्र निदेशक, आकाशवाणी, हैदराबाद)

समारोह की अध्यक्षता[6] करेंगे ।

-: कार्यक्रम :-

स्थान : हैदराबाद हिंदी प्रचार सभा

नामपल्ली रोड, हैदराबाद

दिनांक 29.07.2018, सायं 6.00 बजे

उत्तरापेक्षी

सहायक निदेशक (प.पा.विभाग)

निदेशक

1. শুভ বিবাহ 2. উত্তরাপেক্ষি 3. কর্মসূচী 4. সমাপ 5. সমারোহ 6. সভাপতিত্ব

7.0 বাক্যগঠন ও ব্যবহার

7.1 चूंकि . . . . इसलिए -এর ব্যবহার

(i) নিম্নলিখিত বাক্যগুলি পড়ুন :-

चूँकि मैं अस्वस्थ हूँ, इसलिए आज कार्यालय नहीं आ सकूँगा ।[1] (चूँकि যেহেতু)

चूँकि इनको हिंदी नहीं आती, इसलिए इन्हें वाराणसी की यात्रा में असुविधा होगी ।

(ii) কিছু ক্ষেত্রে इसलिए এর ব্যবহার নাও করা যেতে পারে। যেমন ঃ

चूँकि इनको हिंदी नहीं आती, इन्हें वाराणसी की यात्रा में असुविधा होगी ।[2]

(iii) একই অর্থে क्योंकि এর ব্যবহার করা যায়। কার্যকারী প্রভাব বোঝাতেও এর ব্যবহার হয়। যেমন ঃ

इन्हें वाराणसी यात्रा में असुविधा होगी क्यों कि (because) इनको हिंदी नहीं आती

1. যেহেতু আজ আমি অসুস্থ তাই কার্যালয়ে আসতে পারব না। 2. যেহেতু তিনি হিন্দী জানেন না তাই বেনারস যাত্রায় অসুবিধা হবে।

7.2 ক্রি য়ার সঙ্গে से অনুসর্গের ব্যবহার

হিন্দীতে কিছু ক্রি য়ার সঙ্গে से অনুসর্গ ব্যবহার হয় যেমন ঃ मिलना, लड़ना (ঝগড়া) प्यार करना, घृणा करना (ঘৃণা করা), कहना, पूछना, माँगना ইত্যাদি। যেমন ঃ

मैं अभी मैनेजर से मिला । तुम भी उनसे मिलो ।

भगवान बुद्ध सभी जीवों से प्यार करते थे।[1]

किसी से घृणा मत करो ।[2]

मोहन हमेशा सोहन से लड़ता है ।

अध्यापक ने रमेश से क्या पूछा ?

पिता जी से माफी माँगो ।

7.3 বিধেয়রূপে का এর ব্যবহার

(i) নিম্নলিখিত বাক্যগুলি পড়ুন :-

यह बच्चा	दस साल का इसी स्कूल का मेरा	है ।

डिप्लोमा कोर्स एक वर्ष का है ।

घड़ी की गारंटी दो वर्ष की है ।

উপরে লিখিত বাক্যগুলিতে का বিধেয় রূপে ব্যবহৃত হয়েছে।

(ii) বিভিন্ন অর্থে का এর ব্যবহার লক্ষ্য ক ন ঃ

यह घर राम का है ।	রামের	অধিকার
यह बच्चा दस महीने का है ।	বয়স দশ মাস	বয়স
यह पेड़ आम का है ।	এর	জাতি সদস্য
यह घड़ी सोने की है ।	তৈরী	ধাতু অর্থে
यह महीना दिसंबर का है ।	এর	নাম
यह टोपी पंद्रह रुपए की है ।	মূল্য	দাম
यह यात्रा बीस किलोमीटर की है।	এর	দূরত্ব
यह महिला महाराष्ट्र की है ।	থেকে	নিবাসী
यह पानी घड़े का है ।	থেকে	কলসী
यह कहानी प्रेमचंद की है ।	দ্বারা	লেখক

7.4 কোন তথ্য নিশ্চিত করতে न -এর ব্যবহার ঃ

(i) নিম্নলিখিত বাক্য যুগ্ম গুলি পড়ুন :-

(क)	(i)	क्या वहाँ स्थिति सामान्य है ?	সেখানে কি পরিস্থিতি স্বাভাবিক?
	(ii)	वहाँ स्थिति सामान्य है न ?	সেখানে পরিস্থিতি স্বাভাবিক তো?
(ख)	(i)	क्या तुम्हारे पास आई पैड है ?	তোমার কাছে আইপ্যাড আছে কি?
	(ii)	तुम्हारे पास आई पैड है न ?	তোমার কাছে আইপ্যাড আছে তো?
(ग)	(i)	क्या यह डाकिया है ?	ইনি কি ডাক পিওন?
	(ii)	यह डाकिया है न ?	ইনিই ডাক পিওন তো?

(2) লক্ষ্য ক ন প্রত্যেক বাক্য যুগ্মের প্রথম বাক্যটি প্র.নবাচক। দ্বিতীয় বাক্যটিও প্র.ন বাচক। কিন্তু সেখানে অভিপ্রেত অর্থকে জোড়াল করার উদ্দেশ্য শেষে ন এর ব্যবহার করা হয়েছে। বাংলায় এর সমশব্দ তো, তাই না, কি, ইত্যাদি ব্যবহার করা হয়।

8.0 ব্যাকরণগত নোট

8.1 যৌগিক ত্রি য়া

(i) হি্দীতে দুটি ত্রি য়ার সংযোগে যৌগিক ত্রি য়া তৈরী হয় এবং একটি অর্থ প্রকাশ করে। প্রথম ত্রি য়া পদটি প্রধান ত্রি য়া এবং দ্বিতীয়টি তার সহায়ক। দ্বিতীয় সহায়ক ত্রি য়ার ব্যবহারটি লক্ষ্য ক ন ঃ

বাক্যে যৌগিক ত্রি য়ার ব্যবহার লক্ষ্য ক ন :-

(a)	वह भागा । वह भाग गया ।	সে পালালো। সে পালিয়ে গেছে।
(b)	अपना सामान देखिए । अपना सामान देख लीजिए ।	নিজের জিনিসপত্র দেখুন। নিজের জিনিসপত্র দেখে নিন।

লক্ষ্য ক ন দ্বিতীয় ত্রি য়াপদ প্রধান ত্রি য়াপদের অর্থকে সুদৃঢ় ভাবে প্রকাশ করে।

(ii) আরো কিছু সাহায্যকারী ত্রি য়া নীচে দেওয়া হলো :-

जाना, लेना, देना, उठना, बैठना, पड़ना और डालना

(a) जाना কোনো ত্রি য়ার সঙ্গে যুক্ত হলে কার্য সম্পন্ন বোঝায়। যেমন ঃ

सब लोग कुर्सियों पर बैठ गए ।

थोड़ी देर में गाड़ी चली गई ।

(b) লেনা ও দেনা

ত্রি য়া যখন কর্তাকে প্রভাবিত করে তখন লেনা এবং ত্রি য়া যখন কর্তা ভিন্ন অন্য কোনো রূপকে প্রভাবিত করে তখন দেনা ব্যবহৃত হয়। যেমন ঃ

मरीज ने दवा पी ली है ।	নিজে
डाक्टर ने मरीज को दवा पिला दी है ।	অন্য কেউ

টাইপিস্ট ने अपना पत्र टाइप कर लिया ।	নিজে
টাইপিস্ট ने मेरा पत्र टाइप कर दिया ।	অন্য কেউ

অনুমতি অর্থে প্রভাবকারী ক্রিয়া 'देना' -র ব্যবহার হয় এবং প্রধান ক্রিয়ার ধাতু রূপের ने -তে রূপান্তরিত হয়।

मुझे काम करने दो ।	কাজ করতে দাও।
दरबान पहचान पत्र के बिना किसी को अंदर नहीं जाने देता ।	দারোয়ান পরিচয় পত্র ছাড়া কাউকেই ভিতরে যেতে দেয় না।

(c) উঠনা ও বৈঠনা

উক্ত ক্রিয়াগুলি আকস্মিক অর্থে ব্যবহৃত হয়। কর্তার ভাবনা চিন্তাহীন অনিচ্ছাকৃত কাজ বোঝাতে বৈঠনা ক্রিয়া ব্যবহৃত হয়। যেমন ঃ

सेठ जी गुस्से से चिल्ला उठे ।

तुम बीच में क्यों बोल उठे ?

अरे, मैं यह क्या कर बैठा ?

चपरासी अफसर से लड़ बैठा ।

(d) পড়না আকস্মিক, হঠাৎ ঘটা ও বাধ্যতা অর্থে প্রধান বা মুখ্য ক্রিয়ার সঙ্গে যুক্ত হয়।

जोकर को देखकर सब लोग हँस पड़े ।	আকস্মিক
पत्थर से ठोकर खाकर वह गिर पड़ा ।	হঠাৎ ঘটা
माँ की बीमारी की सूचना मिलते ही उसे गाँव जाना पड़ा ।	বাধ্যতা

(e) 'डालना' ক্রিয়া দ্রুত সম্পন্ন করা বা হঠকারিতা অর্থে ব্যবহৃত হয়।

दो घंटे में उसने उपन्यास पढ़ डाला ।	দ্রুত সম্পন্ন করা
मोहन ने चिट्ठी फाड़ डाली ।	হঠকারিতা

(f) নঞর্থক বাক্যে যৌগিক ক্রি য়ার ব্যবহার হয় না।

উসনে খানা খা লিয়া ।	উসনে আজ খানা নহীं খায়া ।
রহীম কো পাঁচ রুপএ দে দীজিএ ।	করীম কো কুছ ন দীজিএ ।

(iii) যখ দুটি ক্রি য়াই সকর্মক হয় তখন যৌগিক ক্রি য়ার সঙ্গে নে কারক চিহ্ যুক্ত হয়।

মোহন নে চিট্ঠী ডাল দী । মোহন অচানক বোল উঠা ।	উভয়েই সকর্মক কেবল প্রধান ক্রি য়াই সকর্মক
শের নে বকরী কো মার ডালা । শের বকরী কো খা গয়া ।	উভয়েই সকর্মক কেবল প্রধান ক্রি য়াই সকর্মক

8.2 (i) বিশেষ্য অথবা বিশেষণের সাথে হোনা অথবা করনা ক্রি য়া যুক্ত হয়ে সংযুক্ত ক্রি য়া গঠিত হয়।

(ক)	বিশেষ্য	+	ক্রি য়া	=	সংযুক্ত ক্রি য়া	
	বাত	+	করনা	=	বাত করনা	কথা বলা
	ক্ষমা	+	করনা	=	ক্ষমা করনা	ক্ষমা ক ন
	আরংভ	+	হোনা	=	আরংভ হোনা	আরম্ভ ক ন
(খ)	বিশেষণ + ক্রি য়া					
	অচ্ছা	+	করনা	=	অচ্ছা করনা	ভাল করা
	ঊঁচা	+	করনা	=	ঊঁচা করনা	উঁচু করা
	সাফ	+	হোনা	=	সাফ হোনা	পরিষ্কার হওয়া

(ii) নিম্নলিখিত উদাহরণে সংযুক্ত ক্রি য়ার ব্যবহার লক্ষ্য ক ন :-

ডাক্টর মরীজোং কো অচ্ছা করতা হৈ ।[1]

নদিয়োং কা জল কারখানোং কী গংদগী সে প্রদূষিত হোতা হৈ ।

সাবধানী রখেং তো দুর্ঘটনা নহীং হোগী ।

1. ডাক্তার গীদের সুস্থ করেন

मैं उससे बात करूँगा ।

पहले दूध गरम कीजिए ।

क्या आप अपनी गाड़ी थोड़ा आगे करेंगे ?[1]

ड्राइवर, गाड़ी पीछे करो ।[2]

सीता ने यह साड़ी पसंद की ।

हमने मेहमानों को आज विदा किया है ।[3]

1. আপনি কি আপনার গাড়ী একটু এগিয়ে রাখবেন? 2. ড্রাইভার, গাড়ী পিছিয়ে নাও। 3. অতিথিদের আজ বিদায় জানালাম।

(iii) সংযুক্ত ক্রিয়া ও का (के, की), पर, से ইত্যাদির সহ সংঘটন।

(क) যখন বিশেষ্য ক্রিয়ারূপে পরিবর্তিত হয় তখন का অথবা के অথবা की বচন এবং লিঙ্গ অনুযায়ী পরিবর্তিত হয়।

मुझे इस बात का खेद (पुं) है[5] । गरीबों की सहायता (स्त्री) करो।

निदेशक ने आपकी प्रशंसा (स्त्री) की । हमने प्रश्नों के उत्तर (पुं बहु) दिए ।

(ख) নিম্নলিখিত সংযুক্ত ক্রিয়াগুলির আগে पर ব্যবহৃত হয়।

वह बात-बात पर गुस्सा करता है ।

मैं आप पर विश्वास करता हूँ ।

हम पर कृपा करें ।

(গ) নিম্নলিখিত সংযুক্ত ক্রিয়াগুলির আগে से ব্যবহৃত হয়।

हम आपसे बात करेंगे । श्याम राधा से प्यार करता है ।

उन्होंने अपने मित्र से विश्वासघात किया । हरीश शीला से शादी करेगा ।

(iv) সংযুক্ত ক্রিয়াপদের দুটি ক্রিয়ার মধ্যে নঞর্থক শব্দ न/नहीं/मत ব্যবহৃত হয়।

शोर मत करो । नौकरों पर गुस्सा न करें ।

रीता ने हरी साड़ी पसंद नहीं की ।

(v) নিম্নলিখিত অনুচ্ছেদে সংযুক্ত ক্রিয়ার ব্যবহার লক্ষ্য করুন।

এক व्यापारी था । रात को वह घर जाने में देर करता था । उसकी पत्नी देर तक इंतजार करती और सो जाती । सुबह वह व्यापारी से प्रार्थना करती कि वह घर जल्दी आया करे । व्यापारी वादा करता परंतु अपना वादा पूरा नहीं करता । उसकी पत्नी से किसी ने शिकायत कर दी कि वह व्यापारी हर रात दो-तीन घंटे क्लब में बरबाद करता है । व्यापारी की पत्नी व्यापारी से नाराज हो गई । उसने अपने पति से बात करना बंद कर दिया । व्यापारी को एक उपाय सूझा । उसने एक रात जल्दी से आकर अपनी पत्नी के पास एक पर्ची रखी उसमें लिखा था मुझे कल सुबह छह बजे हवाई जहाज से जाना है, पाँच बजे जगा देना । वह खुश हो रहा था कि पत्नी को अब बात करनी ही पड़ेगी । व्यापारी सुबह उठा तो सात बज चुके थे। वह नाराज हुआ । वह रसोई घर में गया । उसकी पत्नी दूध गरम कर रही थी । वह अपनी पत्नी से बोला ''मैंने तुम पर भरोसा किया । तुमने मुझे नहीं जगाया ।'' उसके नाराज होने का पत्नी पर कोई असर नहीं हुआ । उसने बिस्तर की ओर इशारा किया । वहाँ एक पर्ची रखी थी उसमें लिखा था, 'पाँच बज गए है उठ जाइए ।'

9.0 सम्पूरक सामग्री ः प्रचलित अभिव्यक्ति

पत्र लेखार किछु अभिव्यक्ति नीचे देओया हल। एगुलि जोरे जोरे कयेकबार पड़ुन एवं प्रयोग करुन।

(1)	आपका भेजा हुआ निमंत्रण-पत्र मिला ।	आपनार पाठान निमन्त्रण पत्र पेयेछि।
(2)	समारोह की सफलता के लिए शुभकामनाएँ।	अनुष्ठानेर साफल्येर जन्य शुभेच्छा जानाई।
(3)	बहू को आशीष, बच्चों को प्यार ।	बौमाके आशीर्बाद, छोटदेर भालबासा।
(4)	यह जानकर तुम्हें खुशी होगी कि.....	तुमि जेने खुशी हबे ये...
(5)	विवाह की सूचना पाकर हमें बहुत खुशी हुई ।	बियेर खबर शुने भाल लागल।
(6)	सुखमय दांपत्य जीवन के लिए शुभकामनाएँ ।	सुखी दाम्पत्य जीबनेर शुभेच्छा रइल।
(7)	मेरे योग्य सेवा के लिए लिखें ।	आमार योग्य कोन काज थाकले लिखे जानान।
(8)	इस सफलता पर तुम्हें हार्दिक बधाई ।	तोमार साफल्येर जन्य आन्तरिक अभिनन्दन जानाई।
(9)	मेरे सभी पाठ नए पते पर भेजने की कृपा करें।	समस्त पाठ्य सामग्री आमार नतुन ठिकानाय पाठान।

(10)	मुझे निम्नलिखित पुस्तकों की आवश्यकता है ।	নিম্নলিখিত বইগুলি আমার দরকার।
(11)	सभी पुस्तकें वी. पी. पी. द्वारा भेजने की व्यवस्था करें ।	ভি.পি.পি. দ্বারা সমস্ত বই পাঠানোর ব্যবস্থা ক ন।
(12)	कृपया उपयुक्त कमीशन काटने का कष्ट करें।	অনুগ্রহ করে যথাযথ ছাড় দেবার ব্যবস্থা করবেন।
(13)	आपके ऑर्डर के अनुसार ।	আপনার আদেশ অনুসারে।
(14)	आपकी यात्रा आनंदमय और सकुशल हो ।	আপনার যাত্রা শুভ ও আনন্দময় হোক।
(15)	आपकी शुभकामनाओं के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।	শুভেচ্ছার জন্য অনেক ধন্যবাদ।
(16)	कार्यक्रम नीचे दिया जा रहा है ।	কার্যত্র ম নীচে দেওয়া হল।
(17)	आपकी सूचना के लिए ।	আপনার অবগতির জন্য।
(18)	इसलिए आपसे प्रार्थना है कि...	এইজন্য আপনার কাছে অনুরোধ করা হচ্ছে যে
(19)	शीघ्र कार्रवाई के लिए ।	দ্রুত ব্যবস্থা গ্রহণের জন্য।
(20)	आवश्यक कागज संलग्न हैं ।	প্রয়োজনীয় নথিপত্র সংলগ্ন আছে।

— * —

पाठ / পাঠ-9

1.0 পাঠ - बड़े भाई साहब (গল্প)

2.0 শব্দাবলী

3.0 বাগ্‌ধারা ও অভিব্যক্তি

4.0 গল্পের সারাংশ

5.0 প্র.ন ও উত্তর

1.0 পাঠ बड़े भाई साहब (শ্রদ্ধেয় বড়দাদা)

–प्रेमचंद

मेरे भाई साहब मुझसे पाँच साल बड़े थे, लेकिन केवल तीन दरजे आगे । उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था जब मैंने शुरू किया था; लेकिन तालीम जैसे महत्व के मामले में वह जल्दबाजी से काम लेना पसंद न करते थे । वह इस भावना की बुनियाद खूब मजबूत डालना चाहते थे जिस पर आलीशान महल बन सके । एक साल का काम दो साल में करते थे । कभी–कभी तीन साल भी लग जाते थे । बुनियाद ही मजबूत न हो, तो मकान कैसे पायेदार बने ।

मैं छोटा था, वह बड़े थे । मेरी उम्र नौ साल की थी, वह चौदह साल के थे । उन्हें मेरी निगरानी का पूरा जन्मसिद्ध अधिकार था । और मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को कानून समझूँ ।

वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे । हरदम किताब खोले बैठे रहते और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कभी कापी पर, कभी किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे । मेरा जी पढ़ने में बिल्कुल न लगता था । एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ जैसा था । मैं मौका पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता । लेकिन कमरे में आते ही भाई साहब का रौद्र रूप देखकर प्राण सूख जाते । उनका पहला सवाल होता – "कहाँ थे ?"

"इस तरह अंग्रेजी पढ़ोगे, तो जिंदगी–भर पढ़ते रहोगे और एक अक्षर न आएगा । अंग्रेजी पढ़ना कोई हँसी–खेल नहीं है कि जो चाहे पढ़ ले, नही तो ऐरा–गैरा नत्थू–खैरा, सभी अंग्रेजी के विद्वान हो जाते । यहाँ तो रात–दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं ।"

"इतने मेले–तमाशे होते हैं, मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है? रोज ही क्रिकेट और हॉकी मैच होते हैं । मैं पास नहीं फटकता । हमेशा पढ़ता रहता हूँ, उस पर भी एक–एक दरजे में दो–दो,

तीन-तीन साल पड़ा रहता हूँ । फिर तुम कैसे आशा करते हो कि तुम यों खेल-कूद में वक्त गँवाकर पास हो जाओगे ?"

मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता । जवाब ही क्या था ? अपराध तो मैंने किया, लताड़ कौन सहे ? भाई साहब उपदेश की कला में निपुण थे । ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे-ऐसे सूक्ति-बाण चलाते कि मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते और हिम्मत छूट जाती । इस तरह जान तोड़कर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में न पाता था और उस निराशा में जरा देर के लिए मैं सोचने लगता - क्यों न घर चला जाऊँ । जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी जिंदगी खराब करूँ ? मुझे अपना मूर्ख रहना मंजूर था; लेकिन उतनी मेहनत ! मुझे तो चक्कर आ जाता था । लेकिन घंटे-दो घंटे बाद निराशा के बादल फट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढ़ूँगा । चटपट एक टाइम-टेबिल बना डालता । बिना पहले से नक्शा बनाए, बिना कोई स्कीम तैयार किए काम कैसे शुरू करूँ ? टाइम-टेबिल में खेल-कूद की मद बिल्कुल उड़ जाती । प्रात:काल उठना, छह बजे मुँह-हाथ धो, नाश्ता कर पढ़ने बैठ जाना। छह से आठ तक अंग्रेजी, आठ से नौ तक हिसाब, नौ से साढ़े नौ तक इतिहास, फिर भोजन और स्कूल । साढ़े तीन बजे स्कूल से वापस होकर आधा घंटा आराम, चार से पाँच तक भूगोल, पाँच से छह तक ग्रामर, आधा घंटा होस्टल के सामने टहलना, साढ़े छह से सात तक अंग्रेजी कम्पोजीशन, फिर भोजन करके आठ से नौ तक अनुवाद, नौ से दस तक हिंदी, दस से ग्यारह तक विविध विषय, फिर विश्राम ।

मगर टाइम-टेबिल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात । पहले ही दिन से उसकी अवहेलना शुरू हो जाती । मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के वे हल्के-हल्के झोंके, फुटबाल की उछल-कूद, कबड्डी के वे दाँव-घात, वालीबाल की वह तेजी और फुरती मुझे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता । वह जानलेवा टाइम-टेबिल, वह आँखफोड़ पुस्तकें किसी की याद न रहती, और फिर भाई साहब को नसीहत और फज़ीहत का अवसर मिल जाता ।

सालाना इम्तहान हुआ । भाई साहब फेल हो गए, मैं पास हो गया और दरजे में प्रथम आया । मेरे और उनके बीच केवल दो साल का अंतर रह गया । जी में आया, भाई साहब को आड़े हाथों लूँ - आपकी वह घोर तपस्या कहाँ गई ? मुझे देखिए, मजे से खेलता भी रहा और दरजे में प्रथम भी हूँ । लेकिन वह इतने दु:खी और उदास थे कि मुझे उनसे दिली हमदर्दी हुई और उनके घाव पर नमक छिड़कने का विचार ही लज्जास्पद जान पड़ा । हाँ, अब मुझे अपने ऊपर कुछ अभिमान हुआ और आत्मसम्मान भी बढ़ा । भाई साहब का वह रोब मुझ पर न रहा ।

भाई साहब ने इसे भाँप लिया- उनकी सहज बुद्धि बड़ी तीव्र थी और एक दिन जब मैं भोर का सारा समय गुल्ली-डंडे की भेंट करके ठीक भोजन के समय लौटा, तो भाई साहब ने मानो तलवार खींच

ली और मुझ पर टूट पड़े - "देखता हूँ, इस साल पास हो गए और दरजे में प्रथम आ गए तो तुम्हें दिमाग हो गया है; मगर भाईजान घमंड तो बड़े-बड़े का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है ।"

स्कूल का समय निकट था, नहीं ईश्वर जाने, यह उपदेश-माला कब समाप्त होती । भोजन आज मुझे नि:स्वाद-सा लग रहा था । जब पास होने पर यह तिरस्कार हो रहा है, तो फेल हो जाने पर तो शायद प्राण ही ले लिए जाएँ । भाई साहब ने अपने दरजे की पढ़ाई का जो भयंकर चित्र खींचा था; उसने मुझे भयभीत कर दिया । कैसे स्कूल छोड़कर घर नहीं भागा, यही ताज्जुब है; लेकिन इतने तिरस्कार पर भी पुस्तकों में मेरी अरुचि ज्यों-की-त्यों बनी रही । खेल-कूद का कोई अवसर हाथ से न जाने देता । पढ़ता भी था, मगर बहुत कम । बस, इतना कि रोज का टास्क पूरा हो जाए और दरजे में लज्जित न होना पड़े । अपने ऊपर जो विश्वास पैदा हुआ था, वह फिर लुप्त हो गया और फिर चोरों का-सा जीवन कटने लगा ।

फिर सालाना इम्तहान हुआ, और कुछ ऐसा संयोग हुआ कि मैं फिर पास हुआ और भाई साहब फिर फेल हो गए । मैंने बहुत मेहनत न की पर न जाने कैसे दरजे में प्रथम आ गया । मुझे खुद अचरज हुआ । भाई साहब ने प्राणांतक परिश्रम किया था । कोर्स का एक-एक शब्द चाट गए थे; दस बजे रात तक इधर, चार बजे भोर से उठकर छह से साढ़े नौ तक स्कूल जाने के पहले । मुद्रा कांतिहीन हो गई थी, मगर बेचारे फेल हो गए । मुझे उन पर दया आती थी । नतीजा सुनाया गया, तो वह रो पड़े और मैं भी रोने लगा । अपने पास होने वाली खुशी आधी हो गई । मैं भी फेल हो गया होता, तो भाई साहब को इतना दुख न होता, लेकिन विधि की बात कौन टाले ।

मेरे और भाई साहब के बीच में अब केवल एक दरजे का अंतर और रह गया । मेरे मन में एक कुटिल भावना उदय हुई कि कहीं भाई साहब एक साल और फेल हो जाएँ, तो मैं उनके बराबर हो जाऊँ, फिर वह किस आधार पर मेरी फजीहत कर सकेंगे, लेकिन इस विचार को दिल से बलपूर्वक निकाल डाला। आखिर वह मुझे मेरे हित के विचार से ही तो डाँटते हैं । मुझे उस वक्त अप्रिय लगता है अवश्य, मगर यह शायद उनके उपदेशों का ही असर हो कि मैं दनादन पास होता जाता हूँ और इतने अच्छे नंबरों से ।

अब भाई साहब बहुत कुछ नर्म पड़ गए थे । कई बार मुझे डाँटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया । शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डाँटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा; या रहा तो बहुत कम । मेरी स्वच्छंदता भी बढ़ी । मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा । मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं तो पास हो ही जाऊँगा, पढ़ूँ या न पढ़ूँ, मेरी तकदीर बलवान है, इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा-बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ । मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाजी की ही भेंट होता था, फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था, और उनकी नजर बचाकर कनकौए उड़ाता था ।

एक दिन संध्या समय होस्टल से दूर मैं एक कनकौआ लूटने बेतहाशा दौड़ा जा रहा था । आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला जा रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो। बालकों की एक पूरी सेना लग गयी; और झाड़दार बाँस लिए उनका स्वागत करने को दौड़ी आ रही थी । किसी को अपने आगे-पीछे की खबर न थी । सभी मानो उस पतंग के साथ ही आकाश में उड़ रहे थे, जहाँ सब कुछ समतल है, न मोटरकारें हैं, न ट्राम, न गाड़ियाँ ।

सहसा भाई साहब से मेरी मुठभेड़ हो गई, जो शायद बाजार से लौट रहे थे । उन्होंने वहीं मेरा हाथ पकड़ लिया और उग्र भाव से बोले - "इन बाजारी लौंडों के साथ धेले के कनकौए के लिए दौड़ते तुम्हें शर्म नहीं आती ? तुम्हें इसका भी कुछ लिहाज नहीं कि अब नीची जमात में नहीं हो, बल्कि आठवीं जमात में आ गए हो और मुझसे केवल एक दरजा नीचे हो । आखिर आदमी को कुछ तो अपनी पोजीशन का ख्याल करना चाहिए ।"

"मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और चाहे आज तुम मेरी ही जमात में आ जाओ और परीक्षकों का यही हाल है, तो निस्संदेह अगले साल तुम मेरे समकक्ष हो जाओगे और शायद एक साल बाद तुम मुझसे आगे निकल जाओ लेकिन मुझमें और तुममें जो पाँच साल का अंतर है, उसे तुम क्या, खुदा भी नहीं मिटा सकता । मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूँगा । मुझे दुनिया का और जिंदगी का जो तजुरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते ।"

"भाईजान, यह गरूर दिल से निकाल डालो कि तुम मेरे समीप आ गए हो और अब स्वतंत्र हो । मेरे देखते तुम बेराह नहीं चल पाओगे । अगर तुम यों न मानोगे, तो मैं (थप्पड़ दिखाकर) इसका प्रयोग भी कर सकता हूँ । मैं जानता हूँ, तुम्हें मेरी बातें जहर लग रही हैं. . . . ."

मैं उनकी इस नयी युक्ति से नत-मस्तक हो गया । मुझे आज सचमुच अपनी लघुता का अनुभव हुआ और भाई साहब के प्रति मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई । मैंने सजल आँखों से कहा "हरगिज नहीं । आप जो कुछ फरमा रहे हैं, वह बिल्कुल सच है और आपको कहने का अधिकार है ।"

भाई साहब ने मुझे गले लगा लिया और बोले - "मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता । मेरा जी भी ललचाता है, लेकिन क्या करूँ, खुद बेराह चलूँ तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ ? यह कर्तव्य भी तो मेरे सिर पर है ।"

संयोग से उसी वक्त एक कटा हुआ कनकौआ हमारे ऊपर से गुजरा । उसकी डोर लटक रही थी। लड़कों का एक गोल पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था । भाई साहब लंबे हैं ही, उछलकर उसकी डोर पकड़ ली और बेतहाशा होस्टल की तरफ दौड़े । मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था ।

2.0 শব্দাবলী

দরজা	শ্রেণী	সালানা	বার্ষিক
তালীম	তালিম	প্রथম	প্রথম
জল্দবাজী	তাড়াহুড়ো	হমদর্দী	সহানুভূতি
বুনিযাদ	বুনিয়াদ	লজ্জাস্পদ	লজ্জাজনক
আলীশান	ভব্য	भाँप लेना	অনুমান করা
মহল	মহ্ল	भोर	ভোর
মজবূত	মজবুত	घमंड	অহংকার
পায়েদার	টেঁকসই	হস্তী	ক্ষমতা
নিগরানী	নজরদারী	তিরস্কার	তিরস্কার
শালীনতা	শালীনতা	তাজ্জুব	তাজ্জব
হুক্ম	হুকুম	লুপ্ত	লুপ্ত
কানূন	আইন	অচরজ	আশ্চর্য
অধ্যযনশীল	অধ্যয়নশীল	প্রাণাংতক	প্রাণান্তক
রৌদ্ররূপ	রাগান্বিত চেহারা	শব্দ चाट गए	মুখস্থ করে ফেলা
লতাড়না	লাথানো	কাংতিহীন	কান্তিহীন
নক্শা	নক্শা	কুটিল	কুটিল
মদ	বিষয়	নতীজা	পরিনাম
হিসাব	হিসাব	বিধি	বিধি
অবহেলনা	অবহেলা	দনাদন	নিরন্তর
দাঁব-ঘাত	কৌশল	নর্ম পড়না	নরম হওয়া
জান লেবা	প্রাণঘাতী	স্বচ্ছংদতা	স্বচ্ছন্দতা
আঁখফোড় পুস্তকেং	কঠিন বই	তকদীর	ভাগ্য
নসীহত	উপদেশ	পতংগবাজী	ঘুড়ি ওড়ানো
ফজ়ীহত	অপমান	অদব	ভদ্রতা/ সম্মান

বেতহাশা	উদ্ভ্রান্ত	যুক্তি	যুক্তি
মুঠভেড় হোনা	মুখোমুখি হওয়া	হরগিজ নহীং	কখনোই না
লৌংডা	ছোকরা	বেরাহ	বিপথ
জমাত	জমায়েত	নতমস্তক হোনা	নতমস্তক হওয়া
গরুর	অহংকার		

3.0 বাগ্‌ধারা ও অভিব্যক্তি

पढ़ने में जी न लगना	পড়ায় মন না বসা
ऐरा-गैरा नत्थू खैरा	রাম শ্যাম যদু মধু
हँसी-खेल होना	হাসি ঠাট্টা করা
रात-दिन आँखें फोड़ना	দিন রাত্রি পরিশ্রম করা
पास फटकना	কাছে আসা
जिगर के टुकड़े-टुकड़े होना	হৃদয় টুকরো টুকরো হওয়া / মন ভেঙে যাওয়া
हिम्मत छूटना	সাহস ভাঙা
बूते के बाहर होना	নিজের ক্ষমতার বাইরে
आड़े हाथों लेना	ভালমন্দ বলা
घाव पर नमक छिड़कना	কাটা ঘায়ে নুনের ছিটে
तलवार खींचना	রেগে যাওয়া

4.0 পাঠের সারাংশ

'বড়ে ভাই সাহব' হিংদী কে প্রসিদ্‌ধ কহানীকার প্রেমচংদ কী লোকপ্রিয় কহানিয়োং মেং সে এক হৈ । ইসমেং দো সগে ভাইয়োং কে বিদ্‌য়ার্থী জীবন কা চিত্রণ হৈ । হোস্টল মেং সাথ-সাথ রহনে কে কারণ বড়া ভাই ছোটে ভাই কে প্রতি উত্তরদায়িত্ব ভী নিভা রহা হৈ । বহ উসে খেলনে-কূদনে কে লিএ টোকতা হৈ ঔর অপনী ভাবনাওং কো নিয়ংত্রিত কর আদর্শ প্রস্তুত করনা চাহতা হৈ ।

छोटा भाई कम परिश्रम से भी परीक्षा में प्रथम स्थान पाता रहता है किंतु दुर्भाग्य से बड़े भाई को बार-बार असफलता का मुँह देखना पड़ता है । इस प्रकार उनकी कक्षाओं के बीच का अंतर कम होता चला जाता है और कहानी के अंत तक वह अंतर केवल एक साल का रहता है । इतना होते हुए भी बड़ा भाई अपना दायित्व निभाता रहता है । कहानी में इस स्थिति को बड़े भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है ।

साथ ही साथ प्रेमचंद ने जीवन के अनुभवों को भी कहानी में महत्व दिया है ।

5.0 প্রশ্ন ও উত্তর

प्रश्न 1. : बड़े भाई साहब के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए ?

उत्तर : बड़े भाई साहब जल्दबाजी में काम करना पसंद नहीं करते थे । वे उपदेश की कला में निपुण थे । वे छोटे भाई को सही राह दिखाना अपना कर्तव्य समझते थे ।

प्रश्न 2. : अंग्रेजी पढ़ने के बारे में बड़े भाई ने अपने छोटे भाई से क्या कहा ?

उत्तर : अंग्रेजी पढ़ना कोई हँसी-खेल नहीं है । कोई भी ऐसे ही अंग्रेजी नहीं सीखता । इसके लिए मेहनत करनी पड़ती है ।

प्रश्न 3. : फेल होने पर बड़े भाई का उदास होना, छोटे भाई को कैसा लगा ?

उत्तर : बड़े भाई को उदास देखकर छोटे भाई के मन में उनके प्रति सहानुभूति उत्पन्न हुई । उनके लिए बुरा सोचना अच्छा नहीं लगा ।

प्रश्न 4. : इस कहानी का संदेश क्या है ?

उत्तर : रटने से अच्छा समझकर पढ़ना होता है । पढ़ाई-लिखाई के साथ खेलकूद भी महत्वपूर्ण है । जीवन का अनुभव पढ़ाई से कम महत्वपूर्ण नहीं है ।

— * —

पाठ / पाठ-10

1.0 एक नजरे पाठ

2.0 पाठ - 'ऐसे–ऐसे' (एकांकी / एकांकी नाटक)

3.0 पाठेर सारांश

4.0 शब्दावली

5.0 बागधारा ও অভিব্যক্তি

1.0 एक नजरे पाठ

मोहनेर भालो लागछे ना। तार पेटे ऐसे-ऐसे करछे। ওর বাবা মা চিন্তিত হয়ে একজন কবিরাজ ও একজন ডাক্তারকেও ডাকলো। অবশেষে তার ক্লাস টিচার এসে বললেন আসলে ও হোম ওয়ার্ক করেনি তো তাই ওর ঐসে-ঐসে অসুখ করেছে।

2.0 पाठ ऐसे–ऐसे (केमन केमन करछे)

–विष्णु प्रभाकर

पात्र–परिचय

मोहन	:	एक विद्यार्थी
दीनानाथ	:	एक पड़ोसी
माँ	:	मोहन की माँ
पिता	:	मोहन के पिता
मास्टर	:	मोहन के मास्टर जी ।

वैद्य जी, डॉक्टर तथा एक पड़ोसिन ।

(सड़क के किनारे एक सुंदर फ्लैट में बैठक का दृश्य । उसका एक दरवाज़ा सड़क वाले बरामदे में खुलता है, दूसरा अंदर के कमरे में, तीसरा रसोईघर में । अलमारियों में पुस्तकें लगी हैं । एक ओर रेडियो का सेट है । दोनों ओर दो छोटे तख्त हैं, जिन पर गलीचे बिछे हैं । बीच में कुरसियाँ हैं। एक छोटी मेज़ भी है । उस पर फोन रखा है । परदा उठने पर मोहन एक तख्त पर लेटा है । आठ–नौ वर्ष के लगभग उम्र होगी उसकी । तीसरी क्लास में पढ़ता है । इस समय बड़ा बेचैन जान पड़ता है । बार–बार पेट को पकड़ता है । उसके माता–पिता पास बैठे हैं ।)

माँ : (पुचकारकर) न-न, ऐसे मत कर ! अभी ठीक हुआ जाता है । अभी डॉक्टर को बुलाया है । ले तब तक सेंक ले । (चादर हटाकर पेट पर बोतल रखती है । फिर मोहन के पिता की ओर मुड़ती है ।) इसने कहीं कुछ अंट-शंट तो नहीं खा लिया ?

पिता : कहाँ ? कुछ भी नहीं । सिर्फ एक केला और एक संतरा खाया था । अरे, यह तो दफ़्तर से चलने तक कूदता फिर रहा था । बस अड्डे पर आकर यकायक बोला- पिता जी, मेरे पेट में तो कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है ।

माँ : कैसे ?

पिता : बस 'ऐसे-ऐसे' करता रहा । मैंने कहा - अरे, गड़गड़ होती है? तो बोला - नहीं । फिर पूछा - चाकू-सा चुभता है ? तो जवाब दिया - नहीं । गोला-सा फूटता है ? तो बोला- नहीं । जो पूछा उसका जवाब - नहीं । बस एक ही रट लगाता रहा, कुछ 'ऐसे-ऐसे' होता है ।

माँ : (हँसकर) हँसी की हँसी, दुख का दुख, यह 'ऐसे-ऐसे' क्या होता है? कोई नयी बीमारी तो नहीं ? बेचारे का मुँह कैसे उतर गया है ! हवाइयाँ उड़ रही हैं ।

पिता : अजी, एकदम सफ़ेद पड़ गया था । खड़ा नहीं रहा गया । बस में भी नाचता रहा - मेरे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होता है । 'ऐसे-ऐसे' होता है ।

मोहन : (जोर से कराहकर) माँ ! ओ माँ !

माँ : न-न मेरे बेटे, मेरे लाल, ऐसे नहीं । अजी, ज़रा देखना, डॉक्टर क्यों नहीं आया ! इसे तो कुछ ज़्यादा ही तकलीफ जान पड़ती है । यह 'ऐसे-ऐसे' तो कोई बड़ी खराब बीमारी है । देखो न, कैसे लोट रहा है ! ज़रा भी कल नहीं पड़ती । हींग, चूरन, पिपरमिंट सब दे चुकी हूँ । वैद्य जी आ जाते !
(तभी फोन की घंटी बजती है । मोहन के पिता उठाते हैं)

पिता : यह 72143332 है । जी, जी हाँ । बोल रहा हूँ. . . . कौन ? डॉक्टर साहब! जी हाँ, मोहन के पेट में दर्द है... जी नहीं, खाया तो कुछ नहीं.... बस यही कह रहा है.... बस जी .... नहीं, गिरा भी नहीं .... 'ऐसे-ऐसे' होता है । बस जी 'ऐसे-ऐसे' होता है । बस जी, 'ऐसे-ऐसे' ! यह 'ऐसे-ऐसे' क्या बला है, कुछ समझ में नहीं आता । जी....जी हाँ ! चेहरा एकदम सफ़ेद हो रहा है । नाचा.... नाचता फिरता है.... जी नहीं, दस्त तो नहीं आया..... जी हाँ, पेशाब तो आया था..... जी नहीं, रंग तो नहीं देखा । आप कहें तो अब देख लेंगे.... अच्छा जी ! ज़रा जल्दी आइए । अच्छा जी, बड़ी कृपा है । (फोन

का चोंगा रख देते हैं ।) डॉक्टर साहब चल दिए हैं । पाँच मिनट में आ जाते हैं ।
(पड़ोस के लाला दीनानाथ का प्रवेश । मोहन ज़ोर से कराहता है ।)

मोहन : माँ....माँ....ओ....ओ.... (उल्टी आती है । उठकर नीचे झुकता है । माँ सिर पकड़ती है । मोहन तीन-चार बार 'ओ-ओ' करता है । थूकता है, फिर लेट जाता है ।) हाय, हाय !

माँ : (कमर सहलाती हुई) क्या हो गया ? दोपहर को भला-चंगा गया था । कुछ समझ में नहीं आता ! कैसा पड़ा है ! नहीं तो मोहन भला कब पड़ने वाला है ! हर वक्त घर को सिर पर उठाए रहता है ।

दीनानाथ : अजी, घर क्या, पड़ोस को भी गुलज़ार किए रहता है । इसे छेड़, उसे पछाड़; इसके मुक्का, उसके थप्पड़ । यहाँ-वहाँ, हर कहीं मोहन ही मोहन ।

पिता : बड़ा नटखट है ।

माँ : पर अब तो बेचारा कैसा थक गया है ! मुझे तो डर है कि कल स्कूल कैसे जाएगा ।

दीनानाथ : जी हाँ, कुछ बड़ी तकलीफ़ है, तभी तो पड़ा है । मामूली तकलीफ़ को तो यह कुछ समझता नहीं । पर कोई डर नहीं । मैं वैद्य जी से कह आया हूँ । वे आ ही रहे हैं । ठीक कर देंगे ।

मोहन : (तेज़ी से कराहकर) अरे....रे-रे-रे....ओह !

माँ : (घबराकर) क्या है, बेटा ? क्या हुआ ?

मोहन : (रुआँसा-सा) बड़े ज़ोर से ऐसे-ऐसे होता है । ऐसे-ऐसे ।

माँ : ऐसे कैसे, बेटे ? ऐसे क्या होता है ?

मोहन : ऐसे-ऐसे । (पेट दबाता है ।)
(वैद्य जी का प्रवेश ।)

वैद्य जी : कहाँ है मोहन ? मैंने कहा, जय राम जी की ! कहो बेटा, खेलने से जी भर गया क्या ? कोई धमा-चौकड़ी करने को नहीं बची है क्या ?
(सब उठकर हाथ जोड़ते हैं । वैद्य जी मोहन के पास कुरसी पर बैठ जाते हैं ।)

पिता : वैद्य जी, शाम तक ठीक था । दफ़्तर से चलते वक्त रास्ते में एकदम बोला- मेरे पेट में दर्द होता है । 'ऐसे-ऐसे' होता है । समझ नहीं आता, यह कैसा दर्द है !

वैद्य जी : अभी बता देता हूँ । असल में बच्चा है । समझा नहीं पाता है । (नाड़ी दबाकर) वात का प्रकोप है.... मैंने कहा, बेटा, जीभ तो दिखाओ । (मोहन जीभ निकालता है ।)

कब्ज़ है । पेट साफ़ नहीं हुआ । (पेट टटोलकर) हूँ पेट साफ़ नहीं है । मल रुक जाने से वायु बढ़ गई । क्यों बेटा ? (हाथ की उँगलियों को फैलाकर फिर सिकोड़ते हैं ।) ऐसे-ऐसे होता है ?

मोहन : (कराहकर) जी हाँ.... ओह !

वैद्य जी : (हर्ष से उछलकर) मैंने कहा न, मैं समझ गया । अभी पुड़िया भेजता हूँ । मामूली बात है, पर यही मामूली बात कभी-कभी बड़ों-बड़ों को छका देती है । समझने की बात है। मैंने कहा, आओ जी, दीनानाथ जी, आप ही पुड़िया ले लो । (मोहन की माँ से) आधे-आधे घंटे बाद गरम पानी से देनी है । दो-तीन दस्त होंगे । बस फिर 'ऐसे-ऐसे' ऐसे भागेगा जैसे गधे के सिर से सींग !

(वैद्य जी द्वार की ओर बढ़ते हैं । मोहन के पिता पाँच का नोट निकालते हैं ।)

पिता : वैद्य जी, यह आपकी भेंट । (नोट देते हैं ।)

वैद्य जी : (नोट लेते हुए) अरे मैंने कहा, आप यह क्या करते हैं ? आप और हम क्या दो हैं ?

(अंदर के दरवाज़े से जाते हैं । तभी डॉक्टर प्रवेश करते हैं ।)

डॉक्टर : हैलो मोहन ! क्या बात है ? 'ऐसे-ऐसे' क्या कर लिया ?

(माँ और पिता जी फिर उठते हैं । मोहन कराहता है । डॉक्टर पास बैठते हैं।)

पिता : डॉक्टर साहब, कुछ समझ में नहीं आता ।

डॉक्टर : (पेट दबाने लगते हैं ।) अभी देखता हूँ । जीभ तो दिखाओ बेटा । (मोहन जीभ निकालता है ।) हूँ, तो मिस्टर, आपके पेट में कैसे होता है ? ऐसे-ऐसे ? (मोहन बोलता नहीं, कराहता है ।)

माँ : बताओ, बेटा ! डॉक्टर साहब को समझा दो ।

मोहन : जी...जी... ऐसे-ऐसे । कुछ ऐसे-ऐसे होता है । (हाथ से बताता है । उँगलियाँ भींचता है ।) डॉक्टर साहब, तबीयत तो बड़ी खराब है ।

डॉक्टर : (सहसा गंभीर होकर) वह तो मैं देख रहा हूँ । चेहरा बताता है, इसे काफ़ी दर्द है । असल में कई तरह के दर्द चल पड़े हैं । कौलिक पेन तो है नहीं । और फोड़ा भी नहीं जान पड़ता । (बराबर पेट टटोलता रहता है ।)

माँ : (काँपकर) फोड़ा !

डॉक्टर : जी नहीं, वह नहीं है । बिल्कुल नहीं है । (मोहन से) ज़रा मुँह फिर खोलना। जीभ

निकालो । (मोहन जीभ निकालता है।) हाँ, कब्ज़ ही लगता है । कुछ बदहज़मी भी है । (उठते हुए) कोई बात नहीं । दवा भेजता हूँ । (पिता से) क्यों न आप ही चलें ! मेरा विचार है कि एक ही खुराक पीने के बाद तबीयत ठीक हो जाएगी । कभी-कभी हवा रुक जाती है और फंदा बना लेती है । बस उसी की ऐंठन है ।

(डॉक्टर जाते हैं । मोहन के पिता दस का नोट लिए पीछे-पीछे जाते हैं डॉक्टर साहब को देते हैं ।)

माँ : सेंक तो दूँ डॉक्टर साहब ?

डॉक्टर : (दूर से) हाँ, गरम पानी की बोतल से सेंक दीजिए ।

(डॉक्टर जाते हैं । माँ बोतल उठाती है । पड़ोसिन आती है ।)

पड़ोसिन : क्यों मोहन की माँ, कैसा है मोहन ?

माँ : आओ जी, रामू की काकी ! कैसा क्या होता ! लोचा-लोचा फिरे है । जाने 'ऐसे-ऐसे' दर्द क्या है, लड़के का बुरा हाल कर दिया ।

पड़ोसिन : ना जी, इत्ती नयी-नयी बीमारियाँ निकली हैं । देख लेना, यह भी कोई नया दर्द होगा । राम मारी बीमारियों ने तंग कर दिया । नए-नए बुखार निकल आए हैं । वह बात है कि खाना-पीना तो रहा नहीं ।

माँ : डॉक्टर कहता है कि बदहज़मी है । आज तो रोटी भी उनके साथ खाकर नहीं गया था । वहाँ भी कुछ नहीं खाया । आजकल तो बिना खाए बीमारी होती है । (बाहर से आवाज़ आती है - 'मोहन ! मोहन' । फिर मास्टर जी का प्रवेश होता है ।)

माँ : ओह, मोहन के मास्टर जी हैं । (पुकारकर) आ जाइए !

मास्टर : सुना है कि मोहन के पेट में कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है ! क्यों भाई ? (पास आकर) हाँ, चेहरा तो कुछ उतरा हुआ है । दादा, कल तो स्कूल जाना ..... तुम्हारे बिना तो क्लास में रौनक ही नहीं रहेगी । क्यों माता जी, आपने क्या खिला दिया था इसे ?

माँ : खाया तो बेचारे ने कुछ नहीं ।

मास्टर : तब शायद न खाने का दर्द है । समझ गया, उसी में 'ऐसे-ऐसे' होता है ।

माँ : पर मास्टर जी, वैद्य और डॉक्टर तो दस्त की दवा भेजेंगे ।

मास्टर : माता जी, मोहन की दवा वैद्य और डॉक्टर के पास नहीं है । इसकी 'ऐसे-ऐसे' की बीमारी को मैं जानता हूँ । अकसर मोहन जैसे लड़कों को वह हो जाती है ।

माँ : सच ! क्या बीमारी है यह ?

मास्टर : अभी बताता हूँ । (मोहन से) अच्छा साहब ! दर्द तो दूर हो ही जाएगा । डरो मत । बेशक कल स्कूल मत आना । पर हाँ, एक बात तो बताओ, स्कूल का काम तो पूरा कर लिया है ?

(मोहन चुप रहता है ।)

माँ : जवाब दो, बेटा, मास्टर जी क्या पूछते हैं ?

मास्टर : हाँ, बोलो बेटा ।

(मोहन कुछ देर फिर मौन रहता है । फिर इनकार में सिर हिलाता है ।)

मोहन : जी, सब नहीं हुआ ।

मास्टर : हूँ ! शायद सवाल रह गए हैं ।

मोहन : जी !

मास्टर : तो यह बात है । 'ऐसे-ऐसे' काम न करने का डर है ।

माँ : (चौंककर) क्या ?

(मोहन सहसा मुँह छिपा लेता है ।)

मास्टर : (हँसकर) कुछ नहीं, माता जी, मोहन ने महीना भर मौज की । स्कूल का काम रह गया । आज ख्याल आया । बस डर के मारे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होने लगा - 'ऐसे-ऐसे' ! अच्छा, उठिए साहब ! आपके 'ऐसे-ऐसे' की दवा मेरे पास है । स्कूल से आपको दो दिन की छुट्टी मिलेगी । आप उसमें काम पूरा करेंगे और आपका 'ऐसे-ऐसे' दूर भाग जाएगा । (मोहन उसी तरह मुँह छिपाए रहता है ।) अब उठकर सवाल शुरू कीजिए । उठिए, खाना मिलेगा।

(मोहन उठता है । माँ ठगी-सी देखती है । दूसरी ओर से पिता और दीनानाथ दवा लेकर प्रवेश करते हैं ।)

माँ : क्यों रे मोहन, तेरे पेट में तो बहुत बड़ी दाढ़ी है । हमारी तो जान निकल गई । पंद्रह-बीस रुपए खर्च हुए, सो अलग । (पिता से) देखा जी आपने !

पिता : (चकित होकर) क्या-क्या हुआ ?

माँ : क्या-क्या होता ! यह 'ऐसे-ऐसे' पेट का दर्द नहीं है, स्कूल का काम न करने का डर है ।

पिता : हें !

(दवा की शीशी हाथ से छूटकर फर्श पर गिर पड़ती है । एक क्षण सब ठगे-से मोहन को देखते हैं । फिर हँस पड़ते हैं ।)

दीनानाथ : वाह, मोहन, वाह !

पिता : वाह, बेटा जी, वाह ! तुमने तो खूब छकाया !

(एक अट्टहास के बाद परदा गिर जाता है ।)

3.0 पाठेर सारांश

मोहन अपने माता-पिता के साथ रहता है । एक दिन अचानक उसने पेट में तेज दर्द होने की शिकायत की । वह इसके अलावा कुछ नहीं बता पा रहा था कि उसके पेट में 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है। उसकी पीड़ा को देखकर पहले घर में वैद्य को बुलाया जाता है, और बाद में डॉक्टर को । दोनों ही मोहन को कब्ज और बदहजमी की शिकायत बताकर अपनी-अपनी दवाइयाँ भिजवाते हैं । तभी मोहन के मास्टर जी वहाँ आ जाते हैं । मास्टर जी बताते हैं कि मोहन ने स्कूल का कार्य समय रहते नहीं किया । इसी कारण मोहन तबीयत खराब होने का बहाना बना रहा है । मास्टर जी ने होम वर्क पूरा करने के लिए मोहन को दो दिन की छुट्टी दे दी और मोहन की तबीयत ठीक हो गई ।

4.0 शब्दावली

दृश्य	দৃশ্য	कल	উপশম
गलीचा	গালিচা	चोंगा	চোঙ
रसोईघर	রান্নাঘর	कराहना	কোঁকানো
सेंकना	সেঁকা	वात	বায়ু
अंट-शंट	আজে বাজে	प्रकोप	প্রকোপ
यकायक	হঠাৎ	कब्ज़	কোষ্ঠকাঠিন্য
गड़गड़	গুড়গুড়	बदहज़मी	বদহজম
लोटना	গড়াগড়ি	अट्टहास	অট্টহাসি

5.0 বাগ্‌ধারা ও অভিব্যক্তি

1)	मुँह उतरना	=	माँ को बीमार देखकर अशोक का मुँह उतर गया ।
2)	हवाइयाँ उड़ना	=	झूठ पकड़े जाने पर उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं ।
3)	सफेद पड़ना	=	डर के मारे उसका चेहरा सफेद पड़ गया ।
4)	भला-चंगा	=	कल तक प्रमोद भला-चंगा था, आज अस्पताल कैसे पहुँच गया ?
5)	घर सिर पर उठाना	=	ऐसा मैंने क्या कह दिया कि तुमने पूरा घर सिर पर उठा लिया ।
6)	गधे के सिर से सींग	=	तुम तो ऐसे गायब हो गए जैसे गधे के सिर से सींग ।
7)	लोचा-लोचा फिरना	=	बीमारी के कारण वह इतना कमजोर हो गया है कि घर में वह लोचा-लोचा फिर रहा है ।

— * —

पाठ / পাঠ-11

1.0 এক নজরে পাঠ

2.0 পাঠ - इंटरव्यू (साक्षात्कार / সাক্ষাৎকার)

3.0 শব্দাবলী

4.0 নমুনা / ব্যবহার

5.0 প্র.ন ও উত্তর

1.0 এক নজরে পাঠ

এই পাঠে কথ্য হিন্দী ব্যবহার হয়েছে। প্রয়োগে নীচে উল্লিখিত উল্লেখযোগ্য পরিবর্তন খেয়াল ক ন :-

(i) পাঠশৈলী আনুষ্ঠানিক। বিনয়সূচক आप ব্যবহার করা হয়েছে।

(ii) কথ্য কথাবার্তায় ব্যবহৃত ইংরাজি শব্দের মত এখানে সেরকমভাবে ইংরিজি শব্দ ব্যবহার করা হয়নি।

(iii) কথাবার্তায় কিছু বাক্যে নির্দিষ্ট শব্দ বা শব্দাংশ বাদ দিলেও প্রসঙ্গ অনুসারে সেই একই অর্থের অভিব্যক্তি হয়। যা আপনাকে অনুমান করে নিতে হবে। যেমন ঃ

और हिंदी गाने भी ।

जी बिल्कुल ।

जी हाँ, लगेंगी ।

পাঠে সাক্ষাৎকারের দৃশ্য দেওয়া হয়েছে। সাক্ষাৎকার সমিতি অধ্যক্ষ ও দুজন সদস্য নিয়ে গঠিত। রাজভাষা অধিকারী পদপ্রার্থী শ্রী দিবাকর সমিতির সামনে সাক্ষাৎকার দিচ্ছেন। অধ্যক্ষ প্রার্থীর শিক্ষাগত যোগ্যতা ও অভিজ্ঞতা জানার পর অন্য সদস্যদের প্র.ন করার অনুরোধ করলেন।

2.0 পাঠ इंटरव्यू (সাক্ষাৎকার)

'राजभाषा अधिकारी' पद के लिए इंटरव्यू

दिवाकर : सर ! क्या मैं अंदर आ सकता हूँ ?

अध्यक्ष : आइए, आइए ।

(दिवाकर का प्रवेश)

दिवाकर : आप सभी को मेरा नमस्कार !

अध्यक्ष : बैठिए !

दिवाकर : धन्यवाद सर !

अध्यक्ष : आपका नाम ?

दिवाकर : जी, मेरा नाम दिवाकर है ।

अध्यक्ष : आजकल आप कहाँ काम करते हैं ?

दिवाकर : जी, मैं चेन्नई के एक कॉलेज में हिंदी पढ़ाता हूँ ।

अध्यक्ष : अच्छा, अच्छा! आप हिंदी पढ़ाते हैं ? हिंदी में आप क्या पढ़ाते हैं ?

दिवाकर : जी, मैं आधुनिक कविता पढ़ाता हूँ ।

अध्यक्ष : आपने एम. ए. कहाँ से किया है ?

दिवाकर : जी, मैंने मद्रास विश्वविद्यालय से एम. ए. किया है ।

अध्यक्ष : डॉ. सक्सेना ! आप कुछ पूछना चाहेंगे ?

सक्सेना : अध्यापन छोड़कर आप इस पद पर आना चाहते हैं । कोई खास कारण ?

दिवाकर : सर, कॉलेज में मैं अस्थायी हूँ । फिर राजभाषा का कार्य मुझे ज्यादा पसंद है।

सक्सेना : क्या आपको पता है कि जिस पद के लिए आप यहाँ आए हैं, उसमें आपको कौन से काम करने होंगे ?

दिवाकर : जी ! राजभाषा अधिकारी के रूप में कार्यालय में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन से संबंधित कार्य करने होंगे ।

सक्सेना : अच्छा ! कोई प्रमुख कार्य बताइए ।

दिवाकर : सर ! अनुवाद की अपेक्षा मौलिक रूप से हिंदी में ही प्रारूपण-टिप्पण को बढ़ावा देना होगा ।

सक्सेना : आपको पता होगा कि संविधान के कौन से अनुच्छेद में हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया है ?

दिवाकर : जी, संविधान के अनुच्छेद 343 में ।

अध्यक्ष : डॉ. स्वामी, आप कुछ पूछना चाहेंगे ?

डॉ. स्वामी : आपका प्रिय कवि कौन है ?

दिवाकर : मेरे प्रिय कवि हैं - गोस्वामी तुलसीदास ।

डॉ. स्वामी : और आपका प्रिय उपन्यासकार ?

दिवाकर : प्रेमचंद ।

डॉ. स्वामी : प्रेमचंद का कौन-सा उपन्यास आपको अधिक पसंद है ?

दिवाकर : जी 'निर्मला' मुझे बहुत अच्छा लगता है ।

डॉ. स्वामी : कारण ?

दिवाकर : सर ! क्योंकि इसमें वर्तमान सामाजिक बुराइयों पर प्रकाश डाला गया है ।

डॉ. स्वामी : क्या आप अब भी कुछ पढ़ते रहते हैं ?

दिवाकर : जी हाँ, मुझे भाषा और साहित्य में विशेष रुचि है ।

अध्यक्ष : डॉ. गोपालन, आप कुछ पूछना चाहेंगे ?

डॉ. गोपालन : क्या दक्षिण भारत में छात्र हिंदी पढ़ने में रुचि लेते हैं ?

दिवाकर : जी हाँ ! बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ हिंदी पढ़ते हैं ।

डॉ. गोपालन : क्या पढ़ने के अलावा भी उनमें हिंदी के प्रति लगाव दिखता है ?

दिवाकर : जी बिल्कुल । वे हिंदी फिल्में और धारावाहिक खूब पसंद करते हैं । और हिंदी गाने भी। वहाँ हिंदी मेलों में काफी भीड़ रहती है ।

डॉ. गोपालन : विश्वविद्यालय के अलावा चेन्नई में हिंदी सीखने की क्या स्थिति है ?

दिवाकर : चेन्नई में तो कई स्थानों पर हिंदी की पढ़ाई होती है । और दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा उन्हें प्रमाण-पत्र भी देती है ।

अध्यक्ष : आपने अभी बताया था कि आपकी रुचि हिंदी साहित्य में भी है ।

दिवाकर : जी महोदय !

अध्यक्ष : आपने कहा था कि कवि तुलसीदास आपको बहुत पसंद हैं । उनकी कुछ रचनाओं के नाम बताइए।

दिवाकर : जी, रामचरितमानस तो उनकी विश्वप्रसिद्ध रचना है। इसके आतिरिक्त विनय पत्रिका और कवितावली आदि भी हैं। ।

अध्यक्ष : आपने ठीक कहा । क्या आप कुछ आधुनिक रचनाकारों के बारे में भी बता सकते हैं?

दिवाकर : जी हाँ ! मैंने छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा को भी पढ़ा है ।

अध्यक्ष : आपने अज्ञेय की कोई रचना पढ़ी है ?

दिवाकर : जी 'नदी के द्वीप' मुझे पसंद है ।

अध्यक्ष : यदि आप चुन लिए गए, तो कब तक अपना कार्यभार ग्रहण कर सकेंगे ?

दिवाकर : मुझे कम से कम एक महीने का समय चाहिए ।

अध्यक्ष : अच्छा, धन्यवाद

दिवाकर : धन्यवाद सर । नमस्कार ।

3.0 शब्दावली

अध्यक्ष	अध्यक्ष / सभापति	प्रिय	प्रिय
अध्यापन	अध्यापना	वर्तमान	वर्तमान
पद	पद	सामाजिक	सामाजिक
अस्थायी	अस्थायी	प्रकाश डालना	आलोकपात करा
राजभाषा	राजभाषा	साहित्य	साहित्य
कार्यालय	कार्यालय	छात्र	छात्र
कार्यान्वयन	वास्तवायन	रुचि/लगाव	चि / तीव्र इच्छा
प्रमुख	मुख्य	धारावाहिक	धारावाहिक
अनुवाद	अनुवाद	भीड़	भीड़
प्रारूपण	खसड़ा	स्थिति	स्थिति
टिप्पण	मन्तव्य	प्रमाण-पत्र	प्रमाण पत्र
अनुच्छेद	अनुच्छेद	आधुनिक	आधुनिक
दर्जा	श्रेणी	रचनाकार	रचनाकार / साहित्यकार

4.0 নমুনা ও ব্যবহার

4.1 জী- এর ব্যবহার

জী সম্মানসূচক শব্দ বাংলায় যেমন শ্রীযুক্ত / মহাশয় ব্যবহার করা হয়। হিন্দীতে জী নানাভাবে ব্যবহৃত হয়। যেমন :-

(ক) কোন জিজ্ঞাসার উত্তরে কিছু বলার আগে (ভাবার সময় নেওয়ার জন্য)। যেমন ঃ

আপনে এম. এ. কব কিয়া ?

জী, পিছলে বর্ষ ।

মি. দিবাকর, জিস পদ কে লিএ আপ আএ হৈং উসমেং আপকো কৌন-সে কাম করনে হোংগে ?

জী, রাজভাষা অধিকারী কে রূপ মেং কার্যালয মেং রাজভাষা হিংদী কে কার্যান্বয়ন সে সংবংধিত কার্য করনে হোংগে ।

(খ) 'আজ্ঞে' বা 'আবার বলুন শুনতে পাই নি' এই ধরনের ভাব প্রকাশের জন্য সাধারণতঃ জী ব্যবহার করা হয়। অনেক সময় টেলিফোনে কথাবার্তা চালাকালিন জী-র সামান্য দীর্ঘায়িত ও বলাঘাত উচ্চারণ করা হয়।

ক্যা আপনে দংগল ফিল্ম দেখী হৈ ?

জী ? সাফ সুনাই নহীং দে রহা হৈ ।

মৈং পূছ রহী হূঁ, ক্যা আপনে আমির খান কী ফিল্ম দংগল দেখী হৈ ?

জী হাঁ, দেখী হৈ ।

(গ) কথোপকথনে শ্রোতা মন দিয়ে কথা শুনছে এমন ভাব প্রকাশের জন্য জী-এর ব্যবহার করা হয়। ঠিক বাংলায় যেমন কথা শুনতে শুনতে বারবার 'হ্যাঁ' 'হ্যাঁ' বলা হয়। যেমন ঃ

কল আপ দফ়্তর গই থীং ?

জী ।

ক্যা আপ বিশ্ব পুস্তক মেলা দেখনে গএ থে ?

জী ।

(ঘ) জী কখনো ককনো অচ্ছা জী -র সংক্ষিপ্ত রূপেও ব্যবহৃত হয়। যেমন ঃ

কল তীন বজে তক আ জানা ।

জী ।

কমরা বিল্কুল সাফ হোনা চাহিএ ।

জী ।

(ঙ) জী কখনো-কখনো নামের পরেও বসে, যেমন বাংলাতে সম্মানসূচক শ্রী বা শ্রীমতী লেখা হয়। যেমন ঃ

পবন জী চাচা জী

কুমুদ জী মামী জী

শ্রীমতী জী

4.2 অসমাপিকা যোগে যৌগিক ক্রি য়ার ব্যবহার।

কিছু যৌগিক ক্রি য়া নিম্নলিখিত রূপে লেখা হয় :-

(ক) (i)- না অসমাপিকা + সমাপিকা ক্রি য়া (पढ़ना + चाहता है, पढ़ना + जानता है)

নিম্নলিখিত বাক্যগুলি পড়ুন এবং ক্রি য়া রূপের ব্যবহার লক্ষ্য ক ন :-

1	2	3	4
क्या	आप आप तुम डॉ. मेहता	कुछ हिंदीतर भाषियों को साहित्यिक हिंदी बंगला में डिप्लोमा परीक्षा अज्ञेय का उपन्यास	पूछना चाहेंगे ? पढ़ाना चाहेंगे ? पास करना चाहते हो ? पढ़ना चाहते हैं ?

দ্রষ্টব্য : লক্ষ্য ক ন যে উপরোক্ত বাক্যগুলিতে করনা, পূছনা, পঢ়না ইত্যাদি ক্রি য়ারূপের কোনো পরিবর্তন হয়নি। অন্য দুটি ক্রি য়া রূপ, জাননা, সীখনা অনির্দিষ্ট অসমাপিকা ক্রি য়ার সঙ্গে যুক্ত হয়েছে। যেমন ঃ – জাননা

मैं नाव चलाना जानता हूँ ।	अमित जादू दिखाना जानता है ।
मैं कागज के फूल बनाना जानता हूँ ।	वह नारियल के पेड़ पर चढ़ना जानता है ।
मोहन सिंह स्कूटर की सफाई करना जानता है ।	वह इडली बनाना जानता है ।

– সীখনা

मैं नाव चलाना सीख रहा हूँ ।

मैं कागज के फूल बनाना सीखता हूँ ।

मोहन सिंह स्कूटर की सफाई करना सीख रहा है ।

वे टेनिस खेलना सीख रहे हैं ।

(ii) এবার নিম্নলিখিত বাক্যগুলি পড়ুন। লক্ষ্য করবেন যে ক্রিয়াপদ কর্মের অনুসারী এবং অসমাপিকা আ, –এ, –ঈ অন্ত হয়েছে।

नंदिनी गुड़िया बनाना सीख रही है ।

मैं सिलाई करना सीख रही हूँ ।

वह एक और भाषा पढ़ना सीख रहा है ।

वे कंप्यूटर चलाना सीख रहे हैं ।

1	2 (কর্ম)	3
मैंने	कुछ केले	खरीदने चाहे ।
मोहन ने	हिंदी में चिट्ठी	लिखनी चाही ।
मोहन ने	बंगला में डिप्लोमा की परीक्षा	पास करनी चाही ।
मैंने	चिट्ठी रजिस्ट्री डाक से	भेजनी चाही ।
सरला ने	मनीआर्डर से पचास रुपये	भेजने चाहे ।
पिता जी ने	कार की सफाई	करवानी चाही ।

লক্ষ্য ক ন যে, কর্তা + ने গঠনে অসমাপিকা কর্মের বচন ও লিঙ্গর অনুসারী হয়। এখন কর্তা + को বাক্য গঠনের কয়েকটি উদাহরণ দেখুন ঃ

1	2 (কর্ম)	3
मुझे	हिंदी में कविता	करनी आती है ।
तुम्हें	बातें ही	बनानी आती हैं ।
क्या तुम्हें	कागज के फूल	बनाने आते हैं ।
क्या आपको	उर्दू के अक्षर	लिखने आते हैं ।

দ্রষ্টব্য :- (i) বলা যেতে পারে যে, যখন কর্তার পরে অনুসর্গ (ने/को) বসে তখন ক্রিয়া ও অসমাপিকা উভয়ই বচন ও লিঙ্গের দিক থেকে কর্মের অনুসারী হয়।

(ii) কর্তা + কো যুক্ত কয়েকটি ক্রিয়াপদ গঠনে অসমাপিকা - আ, -এ, -ই, অন্ত হয়ে থাকে। যেমন ঃ হোনা, পড়্তা এবং চাহিএ প্রভৃতি।

1	2	3
মুঝে	হর মহীনে পচাস রুপএ	দেনে হোংগে ।
সরলা কো	টাইপ কা কাম ভী	করনা পড়্তা হৈ ।
আপকো	ইতনী দের নহীং	লগানী চাহিএ ।[1]
মোহন কো	ঔর ভী বহুত সে কাম	করনে হোতে হৈং ।

(খ) নে অসমাপিকা + ক্রিয়া (পঢ়্নে + লগতা হৈ, পঢ়্নে + দেতা হৈ)

(i) নিচের বাক্যগুলি পড়ুন এবং নে অসমাপিকা + লগনা -র ক্রিয়াপদ লক্ষ্য ক ন।

1	2	3
বটন দবাতে হী	র৉কেট	ঊপর উঠনে লগতা হৈ ।[2]
শাম হোতে হী	মচ্ছর	কাটনে লগতে হৈং ।
ঠীক নৌ বজে	সাযরন (সাইরন)	বজনে লগতে হৈং ।
মৈং বাহর নিকলা কি	বারিশ	হোনে লগী ।
ধীরে-ধীরে	নাব কী রফ্তার	তেজ হোনে লগী ।[3]

দ্রষ্টব্য :- (i) তৃতীয় সারিতে উল্লিখিত যৌগিক ক্রিয়াগুলি শু করা / আরম্ভ করার ভাব ব্যক্ত করেছে। এ ধরনের বাক্যে ক্রিয়ার সাথে সব সময়-নে যুক্ত থাকে।

(ii) নিম্নলিখিত উদাহরণগুলিতে-নে যুক্ত অসমাপিকা + দেনা ক্রিয়া গঠন লক্ষ্য ক ন।

পহলে মুঝে বোলনে দেং ।

মচ্ছরোং নে রাত ভর সোনে নহীং দিয়া ।[4]

অগর আপ শাংতি সে কাম করনে দেং তো কিতনা অচ্ছা হো ।[5]

---

1. আপনার এত দেরি করা উচিত নয়।
2. বোতাম টিপতেই রকেট ওপরে উঠতে শু করে।
3. আস্তে আস্তে নৌকার গতি দ্রুত হতে লাগল।
4. মশা সারারাত ঘুমোতে দেয় নি।
5. আপনি শান্তিতে কাজ করতে দিলে ভাল হয়।

4.3 ভবিষ্যৎ অর্থে অতীত রূপের ব্যবহার।

ক্রিয়ার অতীত কালের রূপ (আয়া, গয়া) সাধারণতঃ অতীত কালই বোঝায়। যদিও কোনো কোনো ক্ষেত্রে তা ভবিষ্যৎ নির্দেশক হতে পারে। নিম্নলিখিত বাক্যগুলিতে অগর/যদি এবং তো -এর ব্যবহার লক্ষ্য ক ন ঃ

যদি আপ	চুন লিए गए	तो कब तक काम पर	आ सकेंगे ?
यदि आरक्षण	हो गया	तो मैं कल ही यहाँ से	चला जाऊँगा ।
अगर वह दस बजे तक नहीं	आया	तो मैं उसके पास	चला जाऊँगा ।
यदि बारिश	हुई	तो फसल अच्छी	हो जाएगी ।
यदि आप अभी	चले गए	तो आपको गाड़ी	मिल जाएगी ।
अगर उसने इलाज नहीं	करवाया	तो बीमारी	बढ़ जाएगी ।

দ্রষ্টব্য : (i) উপযুক্ত বাক্যগুলিতে প্রত্যেকটিতে দুটি খণ্ডবাক্য আছে। অগর/যদি অতীত বাচক ক্রিয়াপদ ভবিষ্যৎ অর্থে ব্যবহৃত হয়েছে।

(ii) তো -যুক্ত খণ্ডবাক্য যখন ভবিষ্যৎ রূপে থাকে তখন অগর/যদি সাধারণতঃ অতীত অর্থ বোঝায়।

(iii) উপরের উদাহরণগুলির গঠন রীতিতে অনেক সময় অগর/যদি যুক্ত খণ্ডবাক্যে ক্রিয়ার ভাব অভিপ্রায়সূচক হতে পারে। যেমন ঃ

যদি আপ চুন লিए जाएँ तो कब तक काम पर आ सकेंगे ?

अगर आप अपनी मातृभाषा में पढ़ें तो अच्छा होगा ।

(iv) সাধারণতঃ এরকম ক্ষেত্রে আমরা ভবিষ্যৎ কালও ব্যবহার করতে পারি।

अगर दो दिन में पैसे जमा नहीं करेंगे तो जुर्माना देना पड़ेगा ।

5.0 প্রশ্ন ও উত্তর

5.1 আপনার সাহায্যের জন্য পাঠ ভিত্তিক কিছু প্রশ্নের উত্তর নিচে দেওয়া হল।

প্রশ্ন 1 : छायावाद के प्रमुख रचनाकार कौन-कौन हैं ?

উত্তর : जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ।

प्रश्न 2 : प्रेमचंद के किसी उपन्यास का नाम बताइए ?

उत्तर : सेवासदन

प्रश्न 3 : तुलसीदास और सूरदास की काव्य भाषा क्या थी ?

उत्तर : तुलसीदास की अवधी और सूरदास की ब्रज भाषा ।

प्रश्न 4 : राजभाषा अधिकारी का क्या काम है ?

उत्तर : केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना ।

— * —

पाठ / পাঠ-12

1.0 এক নজরে পাঠ

2.0 পাঠ - 'तुम कब जाओगे, अतिथि' (व्यंग्य কথা / ব্যঙ্গ গল্প)

3.0 গল্পের সারাংশ

4.0 শব্দাবলী

5.0 ব্যাকরণ / প্রয়োগ

6.0 প্র.। ও উত্তর

1.0 এক নজরে পাঠ

'तुम कब जाओगे, अतिथि' প্রখ্যাত ব্যঙ্গকার শরদ যোশী দ্বারা রচিত। আগত জনৈক অতিথির বেশী দিন থাকায় গৃহকর্তার আতিথেয়তার অপব্যবহার, এই গল্পে প্রকাশ করা হয়েছে। এই রকম বিরূপ পরিস্থিতি গৃহকর্তার পারিবারিক পরিবেশকে বিঘ্নিত করে তোলে।

2.0 পাঠ - तुम कब जाओगे, अतिथि (তুমি কবে যাবে, অতিথি)

-शरद जोशी

आज तुम्हारे आगमन के चतुर्थ दिवस पर यह प्रश्न बार-बार मन में घुमड़ रहा है - तुम कब जाओगे, अतिथि ?

तुम्हारे ठीक सामने एक कैलेंडर है। देख रहे हो ना ! इसकी तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फडफ़ड़ाती रहती हैं । विगत दो दिनों से मैं तुम्हें दिखाकर तारीखें बदल रहा हूँ । तुम जानते हो, अगर तुम्हें हिसाब लगाना आता है कि यह चौथा दिन है, तुम्हारे सतत आतिथ्य का चौथा भारी दिन ! पर तुम्हारे जाने की कोई संभावना प्रतीत नहीं होती । लाखों मील लंबी यात्रा करने के बाद वे दोनों एस्ट्रॉनाट्स भी इतने समय चाँद पर नहीं रुके थे, जितने समय तुम एक छोटी-सी यात्रा कर मेरे घर आए हो । तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित कर चुके, तुमने एक अंतरंग निजी संबंध मुझसे स्थापित कर लिया, तुमने मेरी आर्थिक सीमाओं की बैजनी चट्टान देख ली, तुम मेरी काफी मिट्टी खोद चुके । अब तुम लौट जाओ, अतिथि ! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात् हाईटाइम है। क्या तुम्हें तुम्हारी पृथ्वी नहीं पुकारती ?

उस दिन जब तुम आए थे, मेरा हृदय किसी अज्ञात आशंका से धड़क उठा था । अंदर-ही-अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया । उसके बावजूद एक स्नेह-भीगी मुस्कराहट के साथ मैं तुमसे गले मिला था और मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते की थी। तुम्हारे सम्मान में ओ अतिथि, हमने रात के भोजन को एकाएक उच्च मध्यमवर्ग के डिनर में बदल दिया था । तुम्हें स्मरण होगा कि दो सब्जियों और रायते के अलावा हमने मीठा भी बनाया था । इस सारे उत्साह और लगन के मूल में एक आशा थी । आशा थी कि दूसरे दिन किसी रेल से एक शानदार मेहमान नवाजी की छाप अपने हृदय में ले तुम चले जाओगे। हम तुमसे रुकने के लिए आग्रह करेंगे, मगर तुम नहीं मानोगे और एक अच्छे अतिथि की तरह चले जाओगे । पर ऐसा नहीं हुआ । दूसरे दिन भी तुम अपनी अतिथि-सुलभ मुस्कान लिए घर में ही बने रहे। हमने अपनी पीड़ा पी ली और प्रसन्न बने रहे । स्वागत-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर हम तुम्हें ले जा चुके थे वहाँ से नीचे उतर हमने फिर दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की और रात्रि को तुम्हें सिनेमा दिखाया । हमारे सत्कार का यह आखिरी छोर है, जिससे आगे हम किसी के लिए नहीं बढ़े। इसके तुरंत बाद भावभीनी विदाई का वह भीगा हुआ क्षण आ जाना चाहिए था, जब तुम विदा होते और हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाते । पर तुमने ऐसा नहीं किया ।

तीसरे दिन की सुबह तुमने मुझसे कहा, "मैं लॉन्ड्री में कपड़े देना चाहता हूँ।"

यह आघात अप्रत्याशित था और इसकी चोट मार्मिक थी । तुम्हारे सामीप्य की बेला एकाएक यों रबर की तरह खिंच जाएगी, इसका मुझे अनुमान न था । पहली बार मुझे लगा कि अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है ।

"कहाँ है लॉन्ड्री ?"

"चलो चलते हैं ।" मैंने कहा और अपनी सहज बनियान पर औपचारिक कुर्ता डालने लगा ।

"कहाँ जा रहे हैं ?" पत्नी ने पूछा ।

"इनके कपड़े लॉन्ड्री पर देने हैं ।" मैंने कहा ।

मेरी पत्नी की आँखें एकाएक बड़ी-बड़ी हो गईं । आज से कुछ बरस पूर्व उनकी ऐसी आँखें देख मैंने अपने अकेलेपन की यात्रा समाप्त कर बिस्तर खोल दिया था । पर अब जब वे ही आँखें बड़ी होती हैं तो मन छोटा होने लगता है। वे इस आशंका और भय से बड़ी हुई थीं कि अतिथि अधिक दिनों ठहरेगा।

और आशंका निर्मूल नहीं थी अतिथि । तुम जा नहीं रहे। लॉन्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो । तुम्हारे भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो । तुम्हें देखकर फूट पड़ने वाली मुस्कराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त हो गई है । ठहाकों के रंगीन गुब्बारे जो कल तक इस कमरे के आकाश में उड़ते थे, अब दिखाई नहीं पड़ते । बातचीत की उछलती

हुई गेंद चर्चा के क्षेत्र के सभी कोणों से टप्पे खाकर फिर सेंटर में आकर चुप पड़ी है । अब इसे न तुम हिला रहे हो, न मैं । कल से मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो । शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए । परिवार, बच्चे, नौकरी, फिल्म, राजनीति, रिश्तेदारी, तबादले, पुराने दोस्त, परिवार-नियोजन, महँगाई, साहित्य और यहाँ तक कि आँख मार-मारकर हमने पुरानी प्रेमिकाओं का भी जिक्र कर लिया और अब एक चुप्पी है । सौहार्द अब शनैः-शनैः बोरियत में रूपांतरित हो रहा है । भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं । पर तुम जा नहीं रहे। किस अदृश्य गोंद में तुम्हारा व्यक्तित्व यहाँ चिपक गया है, मैं इस भेद को सपरिवार नहीं समझ पा रहा हूँ । बार-बार प्रश्न उठ रहा है - तुम कब जाओगे, अतिथि?

कल पत्नी ने धीरे से पूछा था, "कब तक टिकेंगे ये ?"

मैंने कंधे उचका दिए "क्या कह सकता हूँ।"

"मैं तो आज खिचड़ी बना रही हूँ । हल्की रहेगी ।"

"बनाओ ।"

सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो रही थी । डिनर से चले थे, खिचड़ी पर आ गए । अब भी अगर तुम अपने बिस्तर को गोलाकार रूप नहीं प्रदान करते तो हमें उपवास तक जाना होगा । तुम्हारे मेरे संबंध एक संक्रमण के दौर से गुजर रहे हैं । तुम्हारे जाने का यह चरम क्षण है। तुम जाओ न अतिथि ।

तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है ना ? मैं जानता हूँ । दूसरों के यहाँ अच्छा लगता है । अगर बस चलता तो सभी लोग दूसरों के यहाँ रहते, पर ऐसा नहीं हो सकता । अपने घर की महत्ता के गीत इसी कारण गाए गए हैं । 'होम' को इसी कारण 'स्वीट-होम' कहा गया है कि लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें । तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है, पर सोचो प्रिय, कि शराफत भी कोई चीज़ होती है और गेट आउट भी एक वाक्य है, जो बोला जा सकता है ।

अपने खर्राटों से एक और रात गुंजायमान करने के बाद कल जो किरण तुम्हारे बिस्तर पर आएगी वह तुम्हारे यहाँ आगमन के बाद पाँचवें सूर्य की परिचित किरण होगी । आशा है, वह तुम्हें चूमेगी और तुम घर लौटने का सम्मानपूर्ण निर्णय ले लोगे । मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी । उसके बाद मैं स्टेंड नहीं कर सकूंगा और लड़खड़ा जाऊँगा । मेरे अतिथि, मैं जानता हूँ कि अतिथि देवता होता है, पर आखिर मैं भी मनुष्य हूँ । मैं कोई तुम्हारी तरह देवता नहीं । एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते । देवता दर्शन देकर लौट जाते हैं । तुम लौट जाओ अतिथि । इसी में तुम्हारा देवत्व सुरक्षित रहेगा । इसके पूर्व कि मैं अपनी वाली पर उतरूँ लौट जाओ ।

उफ्, तुम कब जाओगे, अतिथि ?

3.0 গল্পের সারাংশ (कथा का सार)

লেখক के घर में एक अतिथि आया है । प्रारंभ में उसका बहुत आदर-सत्कार हुआ । अतिथि ऐसा है कि जाने का नाम ही नहीं लेता। इस बात से परिवार के लोग दुखी हो गए । लेखक चाहता है कि किसी प्रकार अतिथि विदा हो । किंतु उसे ऐसा संकेत दिखाई नहीं पड़ता । पहले मेहमान के लिए बढ़िया भोजन बनाया जाता था । अब खिचड़ी और उपवास तक की स्थिति आ गई है ।

भारतीय परंपरा में अतिथि को देवता माना गया है । लेखक सोचता है देवता तो दर्शन देकर चले जाते हैं । यह अतिथि जाने का नाम क्यों नहीं ले रहा है?

4.0 शब्दावली

अतिथि	अतिथि	गरिमा	गरिमा
आगमन	आगमन	भावभीनी विदाई	आन्तरिक विदाय
सतत	निरन्तर	आघात	आघात
संभावना	सम्भावना	अप्रत्याशित	अप्रत्याशित
अंतरंग	अन्तरङ्ग	चोट	चोट
चट्टान	शिलाखन्ड	मार्मिक	मार्मिक
अज्ञात	अज्ञात	सदैव	सदैव
आशंका	आशङ्का	औपचारिक	आनुष्ठानिक
बटुआ	बटुया	निर्मूल	निर्मूल
स्नेह-भीगी	स्नेहसिक्त	चादर	चादर
मुस्कराहट	स्मित हासि	सलवटें	कुँचकान
शानदार	शानदार	तबादला	बदलि
मेहमाननवाज़ी	आतिथेयता	सौहार्द	सौहार्द्य
आग्रह	आग्रह	शनैः-शनैः	धीरे धीरे
अतिथि-सुलभ मुस्कान	अतिथिसुलभ हासि	ऊष्मा	ऊष्मा
		बोरियत	बोर हओया
स्वागत-सत्कार	स्वागत अभ्यर्थना	रूपांतरित	रूपान्तरित

चरम-क्षण	चरम मुहूर्त	खर्राटे	नाक डाका
शराफत	भद्रता	गुंजायमान	गुञ्जायमान

5.0 व्याकरण / प्रयोग

5.1 पर्यायवाची शब्द

चाँद – राकेश, शशि, रजनीश

ज़िक्र – उल्लेख, वर्णन

आघात – हमला, चोट

ऊष्मा – गर्मी, ताप

अंतरंग – घनिष्ठ, आंतरिक

5.2 विलोम शब्द

प्रसन्न –	अप्रसन्न	भय –	निर्भय
नीचे –	ऊपर	पुण्य –	पाप
संभव –	असंभव	अच्छा –	बुरा
आखिरी –	पहली	परिचित –	अपरिचित
सम्मान –	अपमान	आगमन –	प्रस्थान
प्रत्याशित –	अप्रत्याशित		

5.3 मुहावरा पाठे व्यवहृत वागधारा

मिट्टी खोदना = (अपमान करा / असहाय करा) असहाय की मिट्टी खोदने से अच्छा है, उसकी सहायता करना।

कंधे उचकाना = (अस्वीकार करा) पिता जी के पूछने के बावजूद बेटा कंधे उचकाकर चला गया।

अपनी वाली पर उतरना = (रूढ़ आचरण करा) रमेश की खीज इतनी बढ़ गई कि वह अपनी वाली पर उतरने को तैयार हो गया।

पीड़ा पी लेना = (मानसिक यन्त्रणा सह्य करा) अधिकारी द्वारा डाँटे जाने पर सहायक को बुरा तो लगा, किंतु वह अपनी पीड़ा पी गया।

6.0 प्रश्न और उत्तर

पाठ-आधारित कुछ प्रश्नों के उत्तर नीचे दिए गए हैं :

प्रश्न 1. पाठ के अनुसार 'होम' को 'स्वीट होम' क्यों कहा गया है ?

उत्तर 'होम' को 'स्वीट होम' इसलिए कहा गया है कि लोग दूसरे के 'होम' की 'स्वीटनेस' को काटने न दौड़ें।

प्रश्न 2. अतिथि की कौन-सी बात लेखक को बुरी तरह चुभ गई ?

उत्तर अतिथि का यह वाक्य कि वह लॉन्ड्री में कपड़े देना चाहता है, लेखक को बुरी तरह चुभ गया।

प्रश्न 3. 'तुम कब जाओगे, अतिथि' कथन में लेखक का क्या आशय है ?

उत्तर अतिथि के अधिक दिनों तक टिक जाने से लेखक परेशान था।

— * —

पाठ / पाठ-13

1.0 पाठ - मेरा बचपन (आत्मकथा / आत्मजीवनी)

2.0 शब्दावली

3.0 पाठेर सारांश

4.0 प्र.न ओ उत्तर

5.0 पाठे व्यवहृत वाक्यांश

6.0 व्याकरण

1.0 पाठ मेरा बचपन (आमार छेलेवेला)

(यह पाठ भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम जी की आत्मकथा 'अग्नि की उड़ान' का अंश है ।)

मेरा जन्म मद्रास राज्य (अब तमिलनाडु) के रामेश्वरम कस्बे में एक मध्यम वर्गीय तमिल परिवार में हुआ था । मेरे पिता जैनुलाबदीन की कोई बहुत अच्छी औपचारिक शिक्षा नहीं हुई थी और न ही वे कोई बहुत धनी व्यक्ति थे । इसके बावजूद वे बुद्धिमान थे और उनमें उदारता की सच्ची भावना थी । मेरी माँ, आशियम्मा, उनकी आदर्श जीवनसंगिनी थीं । मुझे याद नहीं है कि वे रोजाना कितने लोगों को खाना खिलाती थीं; लेकिन मैं यह पक्के तौर पर कह सकता हूँ कि हमारे सामूहिक परिवार में जितने लोग थे, उससे कहीं ज्यादा लोग हमारे यहाँ भोजन करते थे ।

बचपन में मेरे तीन पक्के दोस्त थे - रामानंद शास्त्री, अरविंदन और शिवप्रकाशन । ये तीनों ही ब्राह्मण परिवारों से थे । रामानंद शास्त्री तो रामेश्वरम मंदिर के सबसे बड़े पुजारी पक्षी लक्ष्मण शास्त्री का बेटा था । अलग-अलग धर्म, पालन-पोषण, पढ़ाई-लिखाई को लेकर हममें से किसी भी बच्चे ने कभी भी आपस में कोई भेदभाव महसूस नहीं किया । आगे चलकर रामानंद शास्त्री तो अपने पिता के स्थान पर रामेश्वरम मंदिर का पुजारी बना, अरविंदन ने तीर्थयात्रियों को घुमाने के लिए टेंपो चलाने का कारोबार कर लिया और शिवप्रकाशन दक्षिण रेलवे में खान-पान का ठेकेदार हो गया ।

प्रतिवर्ष होनेवाले श्री सीता-राम विवाह समारोह के दौरान हमारा परिवार विवाह-स्थल तक भगवान श्रीराम की मूर्तियाँ ले जाने के लिए विशेष प्रकार की नावों का बंदोबस्त किया करता था । यह विवाह-स्थल तालाब के बीचों-बीच स्थित था और इसे 'रामतीर्थ' कहते थे । यह हमारे घर के पास ही

था । मेरी माँ और दादी घर के बच्चों को सोते समय 'रामायण' के किस्से और पैगंबर मुहम्मद से जुड़ी घटनाएँ सुनाती थीं ।

जब मैं रामेश्वरम के प्राइमरी स्कूल में पाँचवीं कक्षा में था तब एक दिन एक नए शिक्षक हमारी कक्षा में आए । उन्होंने मुझे उठाकर पीछे वाली बेंच पर चले जाने को कहा । मुझे बहुत बुरा लगा । रामानंद शास्त्री को भी यह बहुत खला । मुझे पीछे की पंक्ति में बैठाए जाते देख वह काफी उदास नजर आ रहा था । उसके चेहरे पर जो रुआँसी के भाव थे, उनकी मुझपर गहरी छाप पड़ी ।

स्कूल की छुट्टी होने पर हम घर गए और सारी घटना घरवालों को बताई । यह सुनकर लक्ष्मण शास्त्री ने उस शिक्षक को बुलाया और कहा कि उसे निर्दोष बच्चों के दिमाग में इस तरह सामाजिक असमानता एवं सांप्रदायिकता का विष नहीं घोलना चाहिए । हम सब भी उस वक्त वहाँ मौजूद थे । लक्ष्मण शास्त्री ने उस शिक्षक से साफ-साफ कह दिया कि या तो वह क्षमा माँगे या फिर स्कूल छोड़कर यहाँ से चला जाए। उस शिक्षक ने अपने किए व्यवहार पर न सिर्फ दुख व्यक्त किया बल्कि लक्ष्मण शास्त्री के कड़े रुख एवं धर्मनिरपेक्षता में उनके विश्वास से उस नौजवान शिक्षक में अंततः बदलाव आ गया ।

मेरे विज्ञान के शिक्षक शिव सुब्रह्मण्य अय्यर कट्टर सनातनी ब्राह्मण थे और उनकी पत्नी घोर रूढ़िवादी थीं । लेकिन वे कुछ-कुछ रूढ़िवाद के खिलाफ हो चले थे । उन्होंने इन सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने के लिए अपनी तरफ से काफी कोशिशें कीं, ताकि विभिन्न वर्गों के लोग आपस में एक-दूसरे के साथ मिल सकें और जातीय असमानता खत्म हो । वे मेरे साथ काफी समय बिताते थे और कहा करते - ''कलाम, मैं तुम्हें ऐसा बनाना चाहता हूँ कि तुम बड़े शहरों के लोगों के बीच एक उच्च शिक्षित व्यक्ति के रूप में पहचाने जाओगे ।''

एक दिन उन्होंने मुझे खाने पर अपने घर बुलाया । उनकी पत्नी इस बात से बहुत ही परेशान एवं भयभीत थीं कि उनकी पवित्र और धर्मनिष्ठ रसोई में एक मुसलमान युवक को भोजन पर आमंत्रित किया गया है । उन्होंने अपनी रसोई के भीतर मुझे खाना खिलाने से साफ इनकार कर दिया । शिव सुब्रह्मण्य अय्यर अपनी पत्नी के इस रुख से जरा भी विचलित नहीं हुए और न ही उन्हें क्रोध आया । बल्कि उन्होंने खुद अपने हाथ से मुझे खाना परोसा और फिर बाहर आकर मेरे पास ही अपना खाना लेकर बैठ गए । उनकी पत्नी यह सब रसोई के दरवाजे के पीछे खड़ी देखती रहीं । मुझे आश्चर्य हो रहा था कि क्या वे मेरे चावल खाने के तरीके, पानी पीने के ढंग और खाना खा चुकने के बाद उस स्थान को साफ करने के तरीके में कोई फर्क देख रही थीं । जब मैं उनके घर से खाना खाने के बाद लौटने लगा तो अय्यर महोदय ने मुझे फिर अगले हफ्ते रात के खाने पर आने को कहा । मेरी हिचकिचाहट को देखते हुए वे बोले, ''इसमें परेशान होने की जरूरत नहीं है । एक बार जब तुम व्यवस्था बदल डालने का फैसला कर लेते हो तो ऐसी समस्याएँ सामने आती ही हैं ।''

अगले हफ्ते जब मैं शिव सुब्रह्मण्य अय्यर के घर रात्रिभोज पर गया तो उनकी पत्नी ही मुझे रसोई में ले गईं और उन्होंने खुद अपने हाथों से मुझे खाना परोसा ।

2.0 শব্দাবলী

कस्बा	ছোট শহর/ শহরতলী	विवाह-स्थल	বিবাহ স্থল
मध्यम वर्ग	মধ্যবিত্ত	बंदोबस्त	বন্দোবস্ত
औपचारिक	আনুষ্ঠানিক	बीचों-बीच	মাঝামাঝি
शिक्षा	শিক্ষা	किस्से	গল্প / কিস্‌সা
धनी	ধনী	पैगंबर	পৈগম্বর
बुद्धिमान	বুদ্ধিমান	घटनाएँ	ঘটনা
उदारता	উদারতা	पीछे वाली बेंच	পেছনের বেঞ্চ
आदर्श	আদর্শ	खलना	খারাপ লাগা
जीवनसंगिनी	জীবনসঙ্গীনী	उदास	উদাস
रोजाना	দৈনিক	रुआँसी	কাঁদো কাঁদো
पक्के तौर पर	পাকাপাকি	गहरी छाप	গভীর ছাপ
सामूहिक परिवार	যৌথ পরিবার	स्कूल की छुट्टी होने पर	স্কুলে ছুটির পর
पक्के दोस्त	ঘনিষ্ঠ বন্ধু		
भेदभाव	ভেদাভেদি	सारी घटना	সমস্ত ঘটনা
महसूस करना	অনুভব করা	निर्दोष	নির্দোষ
तीर्थयात्री	তীর্থযাত্রী	दिमाग	মস্তিষ্ক
कारोबार	কারবার	सामाजिक	সামাজিক
खान-पान	খাওয়া দাওয়া	असमानता	অসমান
ठेकेदार	ঠিকেদার	सांप्रदायिकता	সাম্প্রদায়িকতা
प्रतिवर्ष	প্রতি বছর	वक्त	সময়
समारोह	সমারোহ	मौजूद	উপস্থিত
के दौरान	সেই সময়ে	व्यवहार	ব্যবহার

कड़े रुख	कड़ा आचरण	उच्च शिक्षित	উচ্চ শিক্ষিত
नौजवान	নবযুবক / ত ণ	धर्मनिष्ठ	ধর্মনিষ্ঠ
अंतत:	অন্ততঃ	खाना परोसना	খাবার পরিবেশন করা
रूढ़िवादी	গোঁড়া	हिचकिचाहट	সংকোচ

3.0 पाठेর সারাংশ

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम जी के इस आत्मकथा–अंश में रामेश्वरम में व्याप्त सामाजिक समता और उदारता का वर्णन है । अपने बचपन की घटनाओं के माध्यम से उन्होंने तमिलनाडु के रामेश्वरम क्षेत्र के लोगों के बीच प्रेम, सौहार्द, आपसी समझदारी का चित्रण किया गया है । इस पाठ का यह संदेश है कि व्यवस्था सुधार की कोशिश में अड़चनें आती ही हैं जिनका समाधान संभव है ।

4.0 প্র.ন ও উত্তর

प्रश्न 1. इस पाठ के अंतर्गत श्री सुब्रह्मण्य अय्यर ने कलाम को पुन: अपने यहाँ भोजन पर आमंत्रित किए जाने पर उनकी हिचकिचाहट को देखकर क्या कहा ?

उत्तर सुब्रह्मण्य अय्यर ने कलाम की हिचकिचाहट को देखकर कहा, ''इसमें परेशान होने की जरूरत नहीं है । एक बार जब तुम व्यवस्था बदल डालने का फैसला कर लेते हो तो ऐसी समस्याएँ सामने आती ही हैं ।''

प्रश्न 2. पाठ की किन बातों से रामेश्वरम के लोगों के बीच आपसी मेल–जोल का पता चलता है ?

उत्तर कलाम के सामूहिक परिवार में जितने लोग थे, उससे कहीं ज्यादा लोग उनके यहाँ भोजन करते थे । कलाम का परिवार रामेश्वरम में श्री सीता–राम विवाह समारोह के अवसर पर श्रीराम की मूर्तियाँ ले जाने के लिए नावों का प्रबंध किया करता था । उनकी माँ और दादी बच्चों को रामायण तथा पैगंबर मुहम्मद की कहानियाँ सुनाती थीं । आपसी प्रेम और मेल–जोल के कारण ही कलाम को श्री सुब्रह्मण्य अय्यर के यहाँ भोजन पर आमंत्रित किया जाता था ।

5.0 পাঠে ব্যবহৃত বাক্যাংশ

बुरा लगना	খারাপ লাগা	मेरे भाई के विवाह समारोह में चाचा जी का न आना मुझे बहुत बुरा लगा ।
गहरी छाप	গভীর ছাপ	विवेकानंद जी के विचारों की मेरे मन पर गहरी छाप है ।

विष घोलना	বিষিয়ে দেওয়া	बच्चों के मन में आपसी भेदभाव का विष नहीं घोलना चाहिए ।
उदास नजर आना	উদাস হওয়া	अपना रुचिकर व्यवसाय न मिलने के कारण राधिका उदास नजर आ रही थी ।

6.0 ব্যাকরণ

'इक' प्रत्यय जोड़कर बनाए गए कुछ शब्दों के विशेषण रूप निम्नलिखित हैं :-

समूह + इक = सामूहिक

समाज + इक = सामाजिक

वर्ष + इक = वार्षिक

मास + इक = मासिक

सप्ताह + इक = साप्ताहिक

दिन + इक = दैनिक

पक्ष + इक = पाक्षिक

अर्थ + इक = आर्थिक

दर्शन + इक = दार्शनिक

विचार + इक = वैचारिक

धर्म + इक = धार्मिक

— * —

पाठ / পাঠ -14

1.0 এক নজরে পাঠ

2.0 পাঠ - कार्यालय में बातचीत (वार्तालाप / কথাবার্তা)

3.0 শব্দাবলী

4.0 ব্যাকরণ / বাক্য গঠন
(i) কর্মবাচ্য গঠন
(ii) সরকারী ভাষার বৈশিষ্ট্য

5.0 পাঠের সারাংশ

6.0 সরকারী কাজে ব্যবহৃত ভাষার ওপর নোট

1.0 এক নজরে পাঠ

হিন্দী কেন্দ্রীয় সরকারের রাজভাষা অর্থাৎ সরকারী ভাষা। এই পাঠে বর্তমানে সরকারী কার্যালয়ে যে ধরণের হিন্দী ব্যবহৃত হয় কথোপকথনের ভঙ্গিতে তা প্রকাশ করা হয়েছে। কিছু ইংরাজী শব্দ ও অভিব্যক্তি ইচ্ছাকৃতভাবে পাঠে ব্যবহার করা হয়েছে যাতে প্রযুক্তিগত পরিভাষা ও অভিব্যক্তি হিন্দীতে শেখা এবং একই সঙ্গে ইংরাজীর অনুরূপ পরিভাষার সঙ্গে পরিচিত হওয়া যায়। সরকারী কাজে ব্যবহৃত হিন্দী বাক্যের একটি বৈশিষ্ট্য হল পরোক্ষ ও কর্মবাচ্যতা যেমন 'सरकार ने मोहन को अनुमति दी ।' এই ধরনের বাক্য সাধারণতঃ সরকারী কাজে ব্যবহার করা হয় না। 'मोहन को अनुमति दी गई ।' অথবা 'मोहन को अनुमति मिली' ইত্যাদি বাক্যগুলি সরকারী ভাষার যথাযথ অভিব্যক্তি ।

2.0 পাঠ कार्यालय में बातचीत (কার্যালয়ে কথাবার্তা)

1. किसी निदेशालय में उपनिदेशक का कमरा, सुबह के साढ़े नौ बजे हैं । उप निदेशक श्री गोपालन अपनी कुर्सी पर बैठे हैं ।

(अनुभाग अधिकारी बनर्जी का फाइलों के साथ प्रवेश)

2. बनर्जी : नमस्कार साहब ! कुछ जरूरी फाइलें आपके लिए मार्क थीं । मैं स्वयं ले आया हूँ।

गोपालन : ओह धन्यवाद, मिस्टर बनर्जी ।

बनर्जी : यह एफ. आर. श्रीमती खन्ना का आवेदन है ।

(गोपालन कागज़ हाथ में लेते हैं ।)

गोपालन : एफ. आर. को हिंदी में क्या कहते हैं मि. बनर्जी ?

बनर्जी : जी, एफ. आर. को नई आवती कहते हैं ।

गोपालन : अच्छा, तो इस पर मुझसे डिस्कस . . . . चर्चा करना चाहते हैं ?

बनर्जी : जी ।

3. गोपालन : इसमें आपके इनीशियल के नीचे एक हफ्ते पहले की तारीख लिखी है । क्या कहते हैं इनीशियल को ?

बनर्जी : आद्यक्षर ।

गोपालन : इस पत्र पर इतने दिनों बाद चर्चा क्यों की जा रही है ?

बनर्जी : मैं पिछले सप्ताह बहुत व्यस्त रहा ।

गोपालन : तो बताइए, यह आवती किस संबंध में है ?

बनर्जी : जी, श्रीमती खन्ना भवन निर्माण के लिए ऋण लेना चाहती हैं ।

4. गोपालन : (पत्र पढ़कर) श्रीमती खन्ना ने जमीन खरीद ली है और मकान बनवाने के लिए कर्ज चाहती हैं । इस पर विचार करने से पहले मैं यह जानना चाहता हूँ कि इन्होंने जमीन खरीदने की अनुमति कब ली थी ? प्रीवियस पेपर्स, पहले के कागज़ कहाँ हैं ?

बनर्जी : उन्हें अनुमति लेने के लिए एक निर्धारित प्रपत्र पहले दिया जा चुका है । किंतु अभी तक उन्होंने वह प्रपत्र प्रस्तुत नहीं किया है । वे कल कह रही थीं कि इस प्रपत्र को भरकर आज खुद आपके पास लाएँगी।

गोपालन : मेरे पास ? मेरे पास क्यों, अनुभाग में ही क्यों नहीं दे देतीं ? आज आप एक कार्यालय आदेश जारी कीजिए कि व्यक्तिगत मामलों से संबंधित आवेदन, अभ्यावेदन आदि सीधे उच्च अधिकारियों के पास जाकर प्रस्तुत न किए जाएँ ।

बनर्जी : जी साहब ।

गोपालन : और श्रीमती खन्ना से, पहले जमीन खरीदने के दस्तावेज मिलने दीजिए ।

बनर्जी : जी साहब । (अनुभाग अधिकारी का प्रस्थान)

(श्रीमती खन्ना का प्रवेश)

5. श्रीमती खन्ना : नमस्कार ।

गोपालन : नमस्कार, कहिए आपके मकान के लिए कर्जवाला मामला है ?

श्रीमती खन्ना : जी नहीं, वह तो अलग है । मैं तो प्रशासन और स्थापना अनुभाग से किसी तकनीकी अनुभाग में स्थानांतरण चाहती हूँ ।

गोपालन : स्थानांतरण ? आप तो सहायक अनुभाग अधिकारी हैं, फिर तकनीकी अनुभाग में स्थानांतरण कैसे ?

श्रीमती खन्ना : जी, माना कि मैं सहायक अनुभाग अधिकारी हूँ मगर मैंने हिंदी में एम.ए. भी किया है । यदि मुझे राजभाषा संबंधी अनुभाग में लगाया जाए तो आगे बढ़ने के अवसर मिल सकते हैं ।

गोपालन : राजभाषा संबंधी ? क्या अनुवाद वगैरह ?

श्रीमती खन्ना : जी हाँ ।

गोपालन : श्रीमती खन्ना, आप सहायक अनुभाग अधिकारी हैं । तकनीकी अनुभाग में भी आपको वही काम करना होगा जैसे फाइल तैयार करना, नोट प्रस्तुत करना । उस अनुभाग में भी अनुवादक के रूप में पदोन्नति नहीं हो सकेगी । वहाँ तकनीकी सहायक अनुवादक का काम कर रहे हैं । उनकी तरक्की भी वरिष्ठता क्रम से होती है । उनकी संख्या अभी काफी है ।

फिर आपका कैडर तो . . . . कैडर को हिंदी में क्या कहते है ?

श्रीमती खन्ना : जी, संवर्ग

गोपालन : हाँ, वही तो । आपका संवर्ग भी तो अलग है ।

श्रीमती खन्ना : फिर भी सीधी भर्ती का मौका तो मिलेगा ?

गोपालन : भर्ती नियमावली में ऐसी तरक्की का कोई प्रावधान नहीं है । अभी तो डायरेक्ट रिक्रूटमेंट यानी सीधी भर्ती बंद है । लगभग दो वर्षों तक किसी पद के रिक्त होने की बात सोचना बेकार है ।

श्रीमती खन्ना : मुझे अपना भाग्य आजमाने दीजिए ।

गोपालन : अच्छा, विचार किया जाएगा । अभी हम किसी और जरूरी काम में लगे हैं । हमने आपकी बात ध्यान में रख ली है ।

श्रीमती खन्ना : अच्छा साहब, धन्यवाद ।

(प्रस्थान)

3.0 শব্দাবলী

পৈরা – 1	
কার্যালয়	কার্যালয়
নিদেশালয়	নির্দেশালয়
উপনিদেশক	উপনির্দেশক
অনুভাগ অধিকারী	শাখা আধিকারিক
প্রবেশ	প্রবেশ
পৈরা – 2	
ফাইল (স্ত্রী) মিসিল	ফাইল
আবেদন	আবেদন
নই আবতী (স্ত্রী)	নতুন প্রাপ্তি / স্বীকারপত্র
চর্চা করনা	আলোচনা করা / চর্চা করা
পৈরা – 3	
আদ্যক্ষর	ছোট সই / স্বাক্ষর
ব্যস্ত	ব্যস্ত
কর্জ	ধার
জমীন	জমি
পৈরা – 4	
বিচার করনা	বিচার করা
অনুমতি	অনুমতি
নির্ধারিত	নির্ধারিত
প্রপত্র	প্রপত্র / নির্ধারিত করা
প্রস্তুত করনা	প্রস্তুত করা
অনুভাগ	অনুভাগ
কার্যালয় আদেশ	কার্যালয় আদেশ
ব্যক্তিগত মামলে	ব্যক্তি গত বিষয়
অভ্যাবেদন	পুনরাবেদন
আদি	আদি
উচ্চ অধিকারী	উর্দ্ধতন আধিকারিক
দস্তাবেজ	নথিপত্র
পৈরা – 5	
প্রশাসন	প্রশাসন
স্থাপনা	স্থাপনা
তকনীকী	প্রযুক্তি গত
রাজভাষা	রাজভাষা
স্থানাংতরণ	স্থানান্তরণ/ বদলি
অনুবাদক	অনুবাদক
পদোন্নতি	পদোন্নতি
বরিষ্ঠতা ক্রম	বরিষ্ঠতা ক্র ম
সংবর্গ	কর্মীবর্গ
ভর্তী নিয়মাবলী	ভর্ত্তির নিয়মাবলী
প্রাবধান	ব্যবস্থা

3.1 এই পাঠে কিছু প্রযুক্তি গত অভিব্যক্তি ও তার বাংলা অনুবাদ নীচে দেওয়া হয়েছে।

(a)	कुछ जरूरी फाइलें आपके लिए थीं ।	কিছু জ রী ফাইল আপনার জন্য ছিল।
(b)	यह नई आवती श्रीमती खन्ना का आवेदन है।	এই নতুন প্রাপ্তি / স্বীকারপত্রটি শ্রীমতী খান্নার আবেদন পত্র
(c)	आज आप एक कार्यालय आदेश जारी कीजिए ।	আপনি আজ একটি সরকারী আদেশ জারী ক ন।
(d)	प्रार्थी द्वारा व्यक्तिगत मामलों से संबंधित आवेदन, अभ्यावेदन आदि सीधे उच्च अधिकारियों के पास जाकर प्रस्तुत न किए जाएँ ।	ব্যক্তি গত বিষয়ে আবেদন পত্র, প্রতিবেদন পত্র ইত্যাদি সরাসরি উর্দ্ধতন আধিকারিকের কাছে গিয়ে যেন পেশ না করা হয়।
(e)	मैं प्रशासन और स्थापना अनुभाग से किसी तकनीकी अनुभाग में स्थानांतरण चाहती हूँ ।	আমি প্রশাসনিক এবং স্থাপনা বিভাগ থেকে কোনো প্রযুক্তি অনুভাগে / শাখায় বদলি হতে চাই।
(f)	उस अनुभाग में भी आपकी अनुवादक के रूप में पदोन्नति नहीं हो सकेगी ।	ওই অনুভাগেও অনুবাদক রূপে আপনার পদোন্নতি হবে না।
(g)	उनकी तरक्की भी वरिष्ठता क्रम से होती है।	তাঁদের পদোন্নতিও বরিষ্ঠতা ক্র মের ভিত্তিতে হয়।
(h)	भर्ती नियमावली में ऐसी तरक्की की कोई व्यवस्था नहीं है ।	নিয়োগের নিয়মানুযায়ী এরকম পদোন্নতির কোন ব্যবস্থা নেই।

4.0 ব্যকরণ / বাক্যগঠন

4.1 কর্মবাচ্য গঠন

রাজভাষা হিন্দীতে কর্মবাচ্যে বাক্যগঠন খুবই প্রচলিত। সরকারী দপ্তরে যে কাজ করে তার চেয়ে কৃত কাজটি বেশী গু ত্বপূর্ণ। তাই কাজের নৈর্ব্যক্তি ক বৈশিষ্ট্য ভাষার কর্মবাচ্য গঠনের মধ্যে প্রকাশিত হয়। যেমন ঃ

आपके मामले पर विचार किया जाएगा ।

कर्ज की स्वीकृति दी जाएगी ।

कार्यालय आदेश जारी किया जाए ।

কর্মবাচ্য ক্রিয়ার গঠনে দুটি উপাদান থাকে। প্রথম উপাদানটি সবসময় মুখ্য ক্রিয়ার অতীত কাল হয় ও দ্বিতীয় উপাদানটি যা কর্মবাচ্য গঠন করে তা জা এর নিম্নরূপ গঠন অনুসারী হয়।

মুখ্য ক্রিয়া	ক্রিয়ার অতীত রূপ	জা-এর একটি গঠন	কর্মবাচ্য গঠন
কহ	কহা	জাতা হৈ	কহা জাতা হৈ
লিখ	লিখা	জা রহা হৈ	লিখা জা রহা হৈ
পঢ়	পঢ়া	গয়া	পঢ়া গয়া
ভেজ	ভেজা	জাএগা	ভেজা জাএগা

নীচের বাক্যগুলিতে কর্মবাচ্য গঠন ও ব্যবহার লক্ষ্য ক ন :-

1. কহা জাতা হৈ কি যহ কিলা পাংডবোং নে বনবায়া থা ।
2. ইস সংবংধ মেং আপকো পত্র লিখা জা রহা হৈ ।
3. যহ পত্র কল পঢ়া গয়া ।
4. ইস বর্ষ ভারত সে গেহূঁ বাহর নহীং ভেজা জাএগা ।

(ক)(i) কর্মবাচ্য গঠনে সকর্মক ক্রিয়া কর্মের লিঙ্গ ও বচন অনুসারে হয়। কর্তা অনুসারে হয় না। নীচের উদাহরণগুলি লক্ষ্য ক ন :-

1. যহ কিলা (পুং, একবচন) পাংডবোং দ্বারা বনবায়া গয়া থা ।
2. যে ফ্লৈট (পুং, বহুবচন) ডী. ডী. এ. দ্বারা বনাএ গএ হৈং ।
3. যহ কিতাব (স্ত্রী, একবচন) মহাদেবী বর্মা দ্বারা লিখী গঈ থী ।
4. যে চিট্ঠিয়াঁ (স্ত্রী, বহুবচন) সহায়ক দ্বারা টাইপ কী গঈ থীং ।

(ii) কখনো কখনো কিছু অকর্মক ক্রিয়া ব্যবহার করে নেতিবাচক অক্ষমতা প্রকাশ করা হয়ে থাকে। তখন কর্তার সঙ্গে দ্বারা-র বদলে সে ব্যবহার করা হয়। যেমন ঃ

1. মৈং বহুত থক গয়া হূঁ, মুঝসে চলা নহীং জাতা ।
2. খাঁসী কে কারণ গীতা সে বোলা নহীং জাতা ।

(খ) যদি বাক্যে দুটি কর্ম থাকে তাহলে সকর্মক ক্রিয়া মুখ্য কর্মপদের অনুযায়ী হয় (যাতে কো অনুসর্গ যুক্ত হয় না)। নীচে কিছু উদাহরণ দেওয়া হল:-

1. সহায়ক দ্বারা উপসচিব কো নোট (পুং) ভেজা জা রহা হৈ ।

2. सरकार द्वारा बाढ़ पीड़ितों को कंबल (पुं, बहुवचन) बांटे गए ।

3. दफ्तर में अधिकारियों को हिंदी (स्त्री, एकवचन) पढ़ाई जाती है ।

(ग) कर्मवाच्य गठनে কর্তা से, के द्वारा अनुसृत হয়। যখন কোনো সর্বনাম কর্তা রূপে ব্যবহৃত হয় তখন द्वारा-র পরিবর্তে से, के द्वारा ব্যবহার করা হয়।

1. यह किताब मेरे द्वारा लिखी गई है । (मैं + के द्वारा)

2. ये मकान हमारे द्वारा बनाए गए हैं । (हम + के द्वारा)

কিন্তু কর্তা যদি বিশেষ্য হয় তাহলে সাধারণতঃ के -র প্রয়োগ হয় না। যেমন ঃ

1. ये चिट्ठियाँ मोहन द्वारा लिखी गई हैं ।

2. यह पत्र श्रीमती खन्ना द्वारा भेजा गया था ।

নীচে দেওয়া যুগ্ম বাক্যগুলি তুলনা করলে হিন্দীতে কর্তৃবাচ্য ও কর্মবাচ্যের পার্থক্য বোঝা যাবে। হিন্দীতে কর্তৃবাচ্য ও কর্মবাচ্যের বাক্যগঠনে ব্যতিত্র ম ও পরিবর্তন লক্ষ্য ক ন।

(1) कर्ता + द्वारा

1. वे इस मामले की जाँच करेंगे ।

   उनके द्वारा इस मामले की जाँच की जाएगी ।

2. मंत्री ने भाषण दिया ।

   मंत्री द्वारा भाषण दिया गया ।

(2) कर्ता + से

1. मोहन यह चिट्ठी नहीं पढ़ सकेगा ।

   मोहन से यह चिट्ठी (स्त्री) नहीं पढ़ी जा सकेगी ।

2. वह काम नहीं कर सकती ।

   उससे काम नहीं किया जाता ।

(3) कर्ता का लोप (কর্তার লোপ)

1. ऐसी किताब कोई नहीं बेचता ।

   ऐसी किताब नहीं बेची जाती ।

2. ईसाई लोग क्रिसमस दिसंबर में मनाते हैं ।

   क्रिसमस दिसंबर में मनाया जाता है ।

3. লোগ কহতে হৈং কি পহলে যহাঁ এক কিলা থা ।

কহা জাতা হৈ কি পহলে যহাঁ এক কিলা থা ।

এবার পাঠে উল্লিখিত বাক্যগুলির কর্মবাচ্য গঠন লক্ষ্য ক ন।

1) উন্হেং অনুমতি লেনে কে লিএ এক নির্ধারিত প্রপত্র বহুত পহলে দিয়া জা চুকা হৈ ।

অনুমতি নেওয়ার জন্য একটি নির্দ্ধারিত প্রপত্র ইতিমধ্যেই তাকে দেওয়া হয়েছে।

2) ব্যক্তিগত মামলোং সে সংবংধিত আবেদন সীধে উচ্চ অধিকারিয়োং কে পাস প্রস্তুত ন কিএ জাএঁ ।

ব্যক্তি গত বিষয় সম্পর্কিত আবেদন পত্র সরাসরি উর্দ্ধতন আধিকারিকের কাছে গিয়ে যেন পেশ না করা হয়।

3) অচ্ছা, বিচার কিয়া জাএগা ।

ঠিক আছে, ভেবে দেখা হবে।

4.2 সরকারী কাজে ব্যবহৃত ভাষার বৈশিষ্ট্য ঃ

পরোক্ষ অভিব্যক্তি র ব্যবহার জানতে কিছু গু ত্বপূর্ণ উপায় ঃ

(ক) কর্মবাচ্য গঠনের প্রয়োগ (ভেজা জা চুকা হৈ, পত্র লিখা গয়া হৈ।) সম্পর্কে বিস্তারিত ভাবে ব্যাখ্যা করা হয়েছে।

(খ) কর্মবাচ্য গঠনে ক্রি য়ার প্রয়োগ

(হোনা, মিলনা, খুলনা, বিকনা, বননা) ইত্যাদি কিছু ক্রি য়ারূপ হিন্দীতে স্বাভাবিক ভাবেই গঠনের দিক দিয়ে কর্মবাচ্য বোধক। বাংলা অনুবাদে এগুলিকে কর্মবাচ্যেই রাখতে হবে। যেমন ঃ

(i)	আপকী পদোন্নতি নহীং হো সকতী ।	আপনার পদোন্নতি সম্ভব নয়
(ii)	ইস কার্য কে লিএ আপকো সময়োপরি ভত্তা (O·T·A) মিলেগা ।	দেওয়া হয়
(iii)	ইস বাজার মেং দুকানেং কিতনে বজে খুলতী হৈং ?	খোলা হয়
(iv)	সভী কপড়ে বিক গএ ।	বিক্রি হয়ে গেছে
(v)	বেতন-বিল বন রহে হৈং ।	তৈরি হচ্ছে

(ग) अनुज्ञा रूपेर बदले सम्भावक रूपेर (पत्र भेजें, चर्चा करें) व्यवहार ः

(i) आज ही कार्यालय आदेश जारी करें ।

(ii) उत्तर जल्दी भेजें ।

(iii) इस संबंध में आवश्यक निर्देश दें ।

(iv) इस मामले पर शीघ्र निर्णय लें ।

5.0 पाठेर सारांश

पाठेर एकटि सारांश एखाने देওয়া হল। সারাংশটি প্রতিবেদন রূপে লিখিত।

कार्यालय में बातचीत

उपनिदेशक के कार्यालय में आते ही श्री बनर्जी फाइलों के साथ उनके कमरे में आए । एक आवेदन पत्र श्रीमती खन्ना का था । उन्होंने मकान बनवाने के लिए ऋण की प्रार्थना की है । उपनिदेशक पिछले कागजात देखना चाहते हैं । इसी बीच श्रीमती खन्ना उनके कमरे में आती हैं । उपनिदेशक ने सोचा कि वह अपने कर्ज के आवेदन पत्र के बारे में चर्चा करने आई हैं । किंतु श्रीमती खन्ना दूसरी प्रार्थना लेकर आई थीं । वे किसी तकनीकी अनुभाग में स्थानांतरण चाहती थीं, क्योंकि उन्होंने हिंदी विषय में एम. ए. पास किया है ।

उपनिदेशक ने उन्हें समझाया कि आप सहायक अनुभाग अधिकारी हैं । इसलिए तकनीकी अनुभाग में भी आपको फाइल प्रस्तुत करने का काम करना होगा । तकनीकी अनुभाग में अनुवादक के रूप में आपकी पदोन्नति नहीं हो सकती । सीधी भर्ती की कोई व्यवस्था नहीं है और इस समय अनुवादक की कोई जगह खाली भी नहीं है ।

6.0 राजभाषा हिंदी (সরকারী কাজে ব্যবহৃত ভাষার ওপরে নোট)

स्वतंत्र होने के बाद भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी भाषा को स्वीकृत किया । संविधान के भाग 17, 120 और 210 में सरकार की भाषा नीति के प्रावधान हैं। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी संघ की राजभाषा होगी । इसके साथ ही सरकारी कामकाज में भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय रूप का प्रयोग किया जाएगा । राजभाषा संबंधी प्रावधानों के अनुपालन हेतु राजभाषा अधिनियम, 1963, राष्ट्रपति के आदेश, राजभाषा संकल्प, संघ के शासकीय प्रयोजनों के प्रयोग के लिए बने राजभाषा नियम, 1976 और अन्य

आदेश आदि भी समय-समय पर जारी हुए हैं । इनके अनुसार विविध मदों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग पर बल दिया गया है । इसके लिए हिंदी शिक्षण, कंप्यूटर प्रशिक्षण, शब्दावली निर्माण और अनुवाद प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था भी की गई है । जनता और सरकार के बीच राजकाज की भाषा के रूप में हिंदी का निरंतर विकास हो रहा है ।

— * —

पाठ / পাঠ-15

1.0 निबंध लेखन (প্রবন্ধ লিখন)

2.0 पाठ - हमारे मसाले (আমাদের মশলা)

3.0 पेड़ों का महत्व (গাছের গু ত্ব)

4.0 योग (যোগ)

5.0 भारतीय सिनेमा का वर्तमान (ভারতীয় সিনেমার বর্তমান)

6.0 अभ्यास

1.0 निबंध लेखन (প্রবন্ধ লিখন) কিছু সূত্র

1.1 আপনাদের অনুশীলনের জন্য এখানে প্রবন্ধ দেওয়া হয়েছে। ভাল এবং সহজ হিন্দীতে নিজেদের ভাবনা চিন্তা অভিব্যক্তি করতে প্রবন্ধ লেখা অন্যতম সহজতম পদ্ধতি।

আপনাদের স্বরচিত প্রবন্ধ আমাদের জানতে সাহায্য করবে যে বিভিন্ন পাঠের মাধ্যমে আপনারা হিন্দী বাক্য গঠন কতটা শিখতে পেরেছেন।

1.2 এই পাঠে নমুনা স্বরূপ সহজ হিন্দীতে, 300 শব্দে লেখা চারটি প্রবন্ধ দেওয়া হয়েছে। প্রবন্ধগুলিতে পূর্ব পাঠত্র ম অনুসারে শব্দাবলী ব্যবহৃত হয়েছে। প্রয়োজন মত প্রসঙ্গ অনুযায়ী কিছু নতুন শব্দ অর্থসহ প্রয়োগ করা হয়েছে।

1.3 (ক) প্রবন্ধগুলি সরবে পাঠ ক ন এবং অর্থ বোঝার চেষ্টা ক ন।

(খ) দ্বিতীয়বার পড়ুন। প্রয়োজনমত শব্দাবলী থেকে শব্দের অর্থ জেনে নিন।

(গ) যে বাক্যগুলি আপনার গু ত্বপূর্ণ মনে হবে তার নীচে দাগ দিন।

(ঘ) একটি আলাদা কাগজে সূত্রগুলি লিখুন। এছাড়াও যদি কোন সূত্র গু ত্বপূর্ণ মনে হয় তাহলে সেগুলি যুক্ত করতে পারেন।

(ঙ) প্রবন্ধে আপনার মত অন্তর্ভূক্ত করে নির্বাচিত সূত্রগুলি পল্লবিত ক ন। এর ফলে দেখবেন যে প্রদত্ত বিষয়ে মৌলিক প্রবন্ধ প্রায় রচিত হয়ে গেছে।

2.0 पाठ - हमारे मसाले (আমাদের মশলা)

प्राचीन काल से ही मसालों का प्रयोग होता रहा है । खाने को स्वादिष्ट बनाने के अतिरिक्त मसाले स्वास्थ्यवर्धक भी होते हैं । ये आयुर्वेदिक तथा देशी चिकित्सा पद्धति में विभिन्न रूपों में प्रयुक्त होते हैं । एक ज़माने में भारत में मसाले खरीदने के लिए आने वाले विदेशी व्यापारी मसालों को सोने, कीमती पत्थर, हीरे-जवाहरात से भी अधिक महत्व देते थे ।

विभिन्न पेड़-पौधों के अलग-अलग भागों जैसे; जड़, छाल, फूल, पत्ते आदि का मसालों के रूप में प्रयोग होता है । सभी मसालों की अलग-अलग सुगंध और गुण होते हैं । कुछ प्रमुख मसाले इस प्रकार हैं :-

हल्दी

यह हल्दी नामक पौधे की जड़ होती है । पिसी हुई हल्दी का प्रयोग व्यापक रूप से प्राय: प्रत्येक रसोई में होता है । इससे व्यंजन में पीलापन आता है । कच्ची हल्दी को दवा के रूप में भी प्रयोग में लाया जाता है । भारतीय मान्यता के अनुसार अनेक शुभ कार्यों में भी हल्दी का प्रयोग होता है ।

अदरक

हल्दी की भाँति अदरक भी एक पौधे की जड़ है जिसका प्रयोग विविध व्यंजनों में अनेक प्रकार से होता है । यह स्वाद में तीखी और स्वभाव में गर्म मानी जाती है । पारंपरिक व्यंजनों के अतिरिक्त यह केक, बिस्कुट, कुकीज़ आदि में भी प्रयुक्त होती है । यह भी एक औषधीय मसाला है । सूखी अदरक को सोंठ कहते हैं ।

दालचीनी / तेजपात

दालचीनी के पेड़ मध्यम आकार के होते हैं । ये आर्द्र-उष्ण क्षेत्रों में उगाए जाते हैं । पेड़ के तनों की छाल दालचीनी कही जाती है । इसका सूखी छाल और पाउडर के रूप में उपयोग होता है । इसके सूखे पत्ते तेजपात या तेजपत्ता कहलाते हैं ।

काली मिर्च

'ब्लैक गोल्ड' के नाम से प्रख्यात काली मिर्च को मसालों का सम्राट कहा जाता है । यह स्वाद में तीखी और स्वभाव में गर्म होती है । विश्वभर में इसका प्रयोग होता है । कहा जाता है कि यह अरब व्यापारियों के माध्यम से यूरोप पहुँची और इसके गुणों से प्रभावित होकर यूरोपीय व्यापारी इसका संपूर्ण व्यापार अपने नियंत्रण में लेने को आतुर हो गए । काली मिर्च के व्यवसाय से अर्जित धन का उपनिवेशवादी लड़ाइयों में उपयोग किए जाने के प्रमाण मिलते हैं ।

लौंग

लौंग मूलत: भारतीय पौधा माना जाता है । यह केरल में सर्वाधिक उगाया जाता है । इसका सूखा हुआ फूल मसाले के रूप में प्रयुक्त होता है । इससे व्यंजन में सुगंध और स्वाद की वृद्धि होती है । स्वभाव में इसे गर्म मसालों में गिना जाता है ।

उपर्युक्त मसालों के अतिरिक्त जीरा, धनिया, मिर्च, सौंफ, इलायची, जायफल, खसखस, जावित्री, हींग, केसर आदि अनेक मसालों का व्यापक प्रयोग विविध रूपों में होता है ।

2.1 भारतीय मसाले

हल्दी	হলুদ	अदरक	আদা
लौंग	লবঙ্গ	इलायची (छोटी)	এলাচ (ছোট)
काली मिर्च	গোলমরিচ	जीरा	জিরা
सौंफ	মৌরী	दालचीनी	দা চিনি
इलायची (बड़ी)	এলাচ (বড়)	जायफल	জায়ফল
जावित्री	জয়ত্রী	धनिया	ধনে
केसर	জাফরান	तेजपात (तेजपत्ता)	তেজপাতা
हींग	হিং	लाल मिर्च	লাল লঙ্কা
हरी मिर्च	কাঁচা লঙ্কা	खस-खस	পোস্ত

2.2 शब्दावली

प्राचीन काल	প্রাচীন কাল	गरम	গরম
स्वास्थ्यवर्धक	স্বাস্থ্যবর্দ্ধক	औषधीय	ঔষধিয়
देशी चिकित्सा पद्धति	দেশী চিকিৎসা পদ্ধতি	आर्द्र-उष्ण	আর্দ্র-উষ্ণ
जवाहरात	জহরত	नियंत्रण	নিয়ন্ত্রণ
छाल	গাছের ছাল	उपनिवेशवादी	উপনিবেশবাদী
कच्ची हल्दी	কাঁচা হলুদ	स्वादिष्ट	সুস্বাদু
शुभ कार्य	শুভ কার্য্য	आयुर्वेदिक	আয়ুর্বেদিক

हीरा	হিরে	पारंपरिक	পারম্পরিক / ঐতিহ্যময়
जड़	মূল	मध्यम आकार	মধ্যম আকার / মাঝারি
व्यंजन	ব্যঞ্জন	व्यापारी	ব্যবসায়ী
मान्यता	মান্যতা	अर्जित	অর্জিত
तीखी	ঝাল		

3.0 पेड़ों का महत्व

पेड़ लगाना हर आदमी की एक सामाजिक जिम्मेदारी है । यह बात पहले जितनी सच थी, आज भी उतनी ही सच है ।

ईंधन और इमारती लकड़ी के लिए लोग पहले भी पेड़-पौधों को काटा करते थे । लेकिन साथ ही साथ वे नए-नए पेड़ भी लगाते रहते थे । इस कारण पेड़-पौधों की कमी नहीं हो पाती थी । आजकल लोग पेड़ों को धड़ाधड़ काटते जा रहे हैं, लेकिन वे नए पेड़ नहीं लगा रहे । इस कारण हमारे देश के बहुत-से घने जंगल उजड़ते जा रहे हैं । लोग पेड़ों को काट-काटकर शहरों की सड़कों को चौड़ा कर रहे हैं । सड़कों के किनारे छायादार पेड़ कम होते जा रहे हैं । बाग-बगीचे कट रहे हैं और उनकी जगह ऊँची-ऊँची इमारतें बन रही हैं । जगह-जगह नए-नए कारखाने खुल रहे हैं । इससे हमें कई तरह की सुविधाएँ तो मिल रही हैं, लेकिन हमारे देश के मौसम पर इसका बुरा असर पड़ रहा है ।

हरे-भरे और ऊँचे-ऊँचे पेड़ बादलों को अपनी तरफ खींचते हैं । इससे ठीक समय पर वर्षा होती है । फसल अच्छी होती है । सूखा नहीं पड़ता । नदी-नालों में पानी भरा रहता है । पशुओं को हरा चारा आसानी से मिलता रहता है । पेड़-पौधों की जड़ों के कारण धरती की मिट्टी जमी रहती है । वृक्ष मिट्टी के कटाव को रोकते हैं । बारिश के पानी का बहाव जमीन की उपजाऊ मिट्टी को अपने साथ बहाकर नहीं ले जा पाता ।

पेड़-पौधे हवा को शुद्ध करते हैं । आजकल मोटर-गाड़ियों की संख्या बढ़ गई है । इन गाड़ियों से निकलने वाला धुआँ और कल-कारखानों की चिमनियों से निकलने वाला धुआँ हवा को अशुद्ध कर रहा है । यह धुआँ आसपास के वायुमंडल को दूषित कर रहा है । आज पेड़-पौधों की कमी के कारण हमें साफ हवा नहीं मिल पा रही है । हजारों लोग गंदी वायु में साँस ले रहे हैं। बहुत से लोगों को भयंकर बीमारियाँ हो रही हैं । दूषित हवा को साफ करने के लिए हरे-भरे पेड़ों की बहुत आवश्यकता है।

आज हमने पेड़ों की जरूरत को फिर से समझा है । ठीक समय पर वर्षा होने, खेतों की उपजाऊ मिट्टी के बहाव को रोकने और वातावरण को स्वच्छ रखने के लिए लोग जगह-जगह पेड़ लगा रहे हैं । वृक्षारोपण के इस काम में बड़ों के साथ-साथ स्कूलों के बच्चे भी उत्साह से भाग ले रहे हैं । धरती को फिर से हरा-भरा बनाने के काम में आज सभी जुटे हुए हैं ।

3.1 शब्दावली

सामाजिक	সামাজিক	सूखा	খরা
पौधा	ছোট গাছ	चारा	চারা
जिम्मेदारी	দায়িত্ব	कटाव	কাটা
धड़ाधड़	ধড়াধড়	बहाव	বওয়া
उजड़ना	নষ্ট হওয়া	उपजाऊ	উর্বর
छायादार	ছায়াদার	चिमनी	চিমনী
इमारत	ভবন	वायुमंडल	বায়ুমণ্ডল
कारखाना	কারখানা	दूषित करना	দূষিত করা
मौसम	আবহাওয়া	वृक्षारोपण	বৃক্ষারোপণ
फसल	ফসল		

4.0 योग

योग के दो अर्थ हैं - एक अर्थ है 'जोड़' और दूसरा अर्थ है 'अनुशासन' । योग अभ्यास द्वारा अनुशासन को सिखाता है । यह एक आध्यात्मिक अभ्यास है, जो शरीर और मस्तिष्क के संतुलन के साथ ही प्रकृति के करीब आने के लिए ध्यान के माध्यम से किया जाता है ।

महर्षि पतंजलि योग दर्शन के प्रवर्तक हैं । उन्होंने योग के आठ अंगों का उल्लेख किया है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि । प्राचीन समय में हिंदू, बौद्ध और जैन धर्म के लोगों द्वारा योग किया जाता था । योग के आठ अंगों में से आसन व्यायाम का ही एक अद्भुत प्रकार है और स्वस्थ जीवन जीने का विज्ञान है । योग वह क्रिया है जो शरीर के अंगों की गतिविधियों और सांसों को नियंत्रित करती है ।

दरअसल, बिना किसी समस्या के जीवन भर तंदुरुस्त रहने का सबसे अच्छा, सुरक्षित आसान तरीका योग है । इसके लिए यम-नियम के अतिरिक्त शरीर के क्रियाकलापों और श्वास लेने के सही तरीकों का नियमित अभ्यास करने की आवश्यकता है । यह शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के बीच संपर्क को नियमित करता है । बुरी परिस्थितियों, अस्वास्थ्यकर जीवन शैली, तनाव आदि के कारण शरीर और मस्तिष्क का परेशानियों से बचाव करता है ।

सुबह योग का नियमित अभ्यास करना लाभदायक है । योग के विभिन्न आसन शारीरिक और मानसिक मजबूती के साथ ही अच्छाई की भावना का निर्माण करते हैं । इस कारण सामाजिक भलाई को बढ़ावा मिलता है । योग के नियमित अभ्यास से स्व-अनुशासन और आत्म जागरूकता का विकास होता है । आधुनिक जीवन में योग के लाभों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ की सभा ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की है । भारत के बाहर योग को योगा (योगा) के नाम से जाना जाता है ।

4.1 शब्दावली

योग	যোগ	अनुशासन	অনুশাসন
अभ्यास	অভ্যাস	आध्यात्मिक	আধ্যাত্মিক
मस्तिष्क	মস্তিষ্ক	प्रकृति	প্রকৃতি
ध्यान	ধ্যান	माध्यम	মাধ্যম
महर्षि	মহর্ষি	दर्शन	দর্শন
प्रवर्तक	প্রবর্তক	अद्‌भुत	অদ্ভুত
गतिविधियाँ	গতিবিধি	तंदुरुस्त	স্বাস্থ্যবান
सुरक्षित	সুরক্ষিত	तरीका	পদ্ধতি
आत्मा	আত্মা	जीवन शैली	জীবন পদ্ধতি
तनाव	তনাও / চিন্তা	आत्म जागरूकता	আত্মজাগরন
विकास	বিকাশ	घोषणा	ঘোষণা

5.0 भारतीय सिनेमा का वर्तमान

विश्वस्तर पर आज मनोरंजन उद्‌योग का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है । साथ ही इसके प्रति लोगों की रुचि भी बढ़ी है । मनोरंजन के नए–नए आयाम लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। मनोरंजन

के क्षेत्र में भारतीय सिनेमा की महत्वपूर्ण भूमिका है । फिल्मों में नई तकनीकों का विकास होने लगा है ।

आजादी के बाद देश के नव निर्माण में भारतीय फिल्मों ने खुलकर हाथ बँटाया । मौजूदा समय में फिल्में जरूर व्यावसायिक जरूरतों के हिसाब से बन रही हैं । लेकिन इनकी सामाजिक प्रतिबद्धता लुप्त नहीं हुई । वास्तव में, मनुष्य ने अपने जीवन और प्रकृति के यथार्थ को अभिव्यक्त करने के लिए जितनी कलाओं का आविष्कार किया, उनमें सिनेमा ने सबसे अधिक प्रभावशाली माध्यम के रूप में खुद को स्थापित किया है ।

भारतीय चलचित्र ने 20वीं शती के आरंभिक काल से ही विश्व के चलचित्र जगत पर गहरा प्रभाव छोड़ा है । भारतीय सिनेमा के अंतर्गत भारत के विभिन्न भागों एवं विभिन्न भाषाओं में बनने वाली फिल्में आती हैं । भारतीय फिल्मों का अनुकरण पूरे दक्षिण एशिया तथा मध्य पूर्व में हुआ । भारत में सिनेमा की लोकप्रियता का इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि यहाँ सभी भाषाओं में मिलकर प्रतिवर्ष 1000 तक फिल्में बनी हैं । यह संख्या हॉलीवुड में बनने वाली फिल्मों से लगभग 40 प्रतिशत ज्यादा है । फिल्म उद्योग में प्रतिवर्ष 20,000 करोड़ का व्यवसाय होता है । लगभग 20 लाख लोगों का रोजगार इस उद्योग पर निर्भर है । हिंदी फिल्में कुल बनने वाली फिल्मों के एक तिहाई से अधिक नहीं होतीं । लेकिन व्यवसाय में उनकी भागीदारी लगभग दो तिहाई है । वैसे तो भारतीय (विशेषत: हिंदी) फिल्में पाँचवें दशक से ही भारतीय उपमहाद्वीप के बाहर भी देखी जाती थीं । खास तौर पर अफ्रीका के उन देशों में जहाँ भारतीय बड़ी संख्या में काम के सिलसिले में जाकर बस गए थे । लेकिन पिछले दो दशकों में भारतीय फिल्मों ने अमरीका, यूरोप और एशिया के दूसरे क्षेत्रों में भी अपने बाजार का विस्तार किया है । यह भी गौरतलब है कि भारत में अब भी हॉलीवुड फिल्मों की हिस्सेदारी चार प्रतिशत ही है जबकि यूरोप, जापान और दक्षिण अमरीकी देशों में यह हिस्सा कम से कम 40 प्रतिशत है ।

भारत की फिल्मों ने कहानी कहने की जो शैली विकसित की और जिसे प्राय: बाजारू, अरचनात्मक और अकलात्मक कहकर तिरस्कृत किया जाता रहा, उसी ने भारतीय फिल्मों को हॉलीवुड के वर्चस्व में जाने से बचाए रखा । 20वीं शती में हॉलीवुड तथा चीनी फिल्म उद्योग के साथ भारतीय सिनेमा भी वैश्विक उद्योग बन गया ।

5.1 শব্দাবলী

विश्वस्तर	বিশ্বস্তর	अभूतपूर्व	অভূতপূর্ব
मनोरंजन	মনোরঞ্জন	विस्तार	বিস্তার
उद्योग	উদ্যোগ	आयाम	মাত্রা / মাত্রিক

नव निर्माण	নবনির্মাণ	दो तिहाई	দুই তৃতীয়াংশ
प्रतिबद्धता	প্রতিবদ্ধতা	दशक	দশক
यथार्थ	যথার্থ	उपमहाद्वीप	উপ মহাদ্বীপ
अभिव्यक्त	অভিব্যক্ত	गौरतलब	ধ্যাতব্য
कला	কলা	अरचनात्मक	অসৃজনশীল
आविष्कार	আবিষ্কার	अकलात्मक	অশিল্পসুলভ
अनुकरण	অনুকরণ	तिरस्कृत	তিরস্কৃত
एक तिहाई	এক তৃতীয়াংশ	वर्चस्व	কর্তৃত্ব
भागीदारी	ভাগিদারী	वैश्विक	বৈশ্বিক

6.0 अभ्यास

निम्नलिखित विषयों पर 200 शब्दों में निबंध तैयार कीजिए ।

(1) परिश्रम सफलता की कुंजी है ।

(2) सादा जीवन उच्च विचार

(3) समय ही सबसे बड़ा धन है

(4) फेस बुक, व्हाट्स ऐप

— * —

पाठ / পাঠ -16

1.0 पाठ - अनुवाद (অনুবাদ)

2.0 अनुवाद के नमूने (অনুবাদকের নমুনা)

3.0 अनुवाद अभ्यास

1.0 पाठ अनुवाद (অনুবাদ)

1.1 आपनारा जानेन ये प्रत्येक भाषार निजस्व वैशिष्ट्य हय। ताई एकटि भाषा थेके अन्य आर एकटि भाषाय येमन इंराजी थेके हिन्दीते वा विपरीत भावे कोन पाठेर शाब्दिक अनुवाद यथायथ मनोग्राही हय ना। कोनो विषय एमन भावे अनुवाद करते हवे याते पाठेर मौलिकत्व बजाय थाके।

1.2 अनुवादेर आगे निम्नलिखित विषयगुलि भालो करे जेने निन।

(i) मूल पाठटि भालो करे पड़ुन एवं अर्थ बोझार चेष्टा क न।

(ii) पाठर प्रत्येकटि वाक्य मनोयोग दिये पड़ुन।

(iii) ये शब्दगुलि कठिन मने हवे तार नीचे दाग दिन, अभिधान देखे सेगुलिर सठिक अर्थ जेने निन।

(iv) प्रत्येकटि वाक्येर खसड़ा अनुवाद क न।

(v) वाग्धारा ओ प्रवाद वाक्येर अनुवादेर समय यथेष्ठ सतर्क हओया उचित।

(vi) खसड़ा अनुवाद शेष हले वाक्यगुलि प्रयोजन मतो संशोधन परिमार्जन करे निन।

(vii) अनुदित पाठटि लिखुन।

2.0 अनुवाद के नमूने (अनुवादेर नमुना)

यहाँ नमूने के तौर पर कतिपय उदाहरण दिए हैं । कृपया पढ़िए ।

2.1 अनुवाद-1 लघु कथा (छोटगल्प)

मोहन ओ सोहन दुई बन्धु। मोहन खुब भालो छिल ओ सोहन छिल स्वार्थपर। एकदिन तारा जङ्गल दिये	मोहन और सोहन दोस्त थे । मोहन अच्छा मित्र था पर सोहन स्वार्थी था । एक बार वे जंगल से

যাচ্ছিল। তারা একটি ভাল্লুককে আসতে দেখল এবং দুজনেই ভয় পেল। মোহনের কথা না ভেবে সোহন তক্ষুণি গাছে উঠে পড়ল।	जा रहे थे । उन्होंने एक भालू को आते देखा । वे डर गए । सोहन तुरंत एक पेड़ पर चढ़ गया । उसने मोहन पर ध्यान नहीं दिया ।
মোহল মাটিতে শুয়ে পড়ল। তারপর সে তার নি ঃাস বন্ধ করে পড়ে রইল। ভাল্লুকটি এলো এবং তাকে শুঁকলো। মোহন মরে গেছে ভেবে ভাল্লুকটি চলে গেল। সোহন নীচে নামল। মোহনের কাছে গিয়ে জিজ্ঞাসা করলো। ভাল্লুক তোমার কানে কানে কি বললো? মোহন উত্তর দিলো ভাল্লুক বললো স্বার্থপর বন্ধুর থেকে দূরে থাকো।	मोहन ज़मीन पर लेट गया। उसने अपनी सांस रोक ली । भालू आया और उसे सूँघा । उसने सोचा कि मोहन मर गया है । वह चला गया । सोहन नीचे उतरा । वह मोहन के पास गया और पूछा, ''भालू ने तुम्हारे कान में क्या कहा ?'' मोहन ने जवाब दिया, ''भालू ने कहा कि स्वार्थी मित्रें से सतर्क रहें ।''

2.2 অনুবাদ-2 লঘুকথা (ছোটগল্প)

একজন চাষীর একটি আশ্চর্য মুর্গী ছিল। মুর্গীটি রোজ সোনার ডিম পারতো। চাষী খুব তাড়াতাড়ি বড় লোক হয়ে গেল। চাষী খুব লোভী ছিল সে ভাবলো যে মুর্গীর পেটে এরকম আরো ডিম আছে। সে সমস্ত ডিম একসঙ্গে পেতে চাইল, তাই একটি উপায় বের করলো। মুর্গীটিকে মেরে ফেলল। কিন্তু তার পেটে কোন ডিম পাওয়া গেল না। চাষীর খুব দুঃখ হল। কিন্তু অনেক দেরী হয়ে গেছে। মুর্গীটি তার হাতছাড়া হয়ে গেল।	एक किसान रहता था । उसके पास एक अनोखी मुर्गी थी । वह मुर्गी रोज़ सोने का अंडा देती थी । किसान जल्दी ही धनी बन गया । किसान लालची था । उसने सोचा मुर्गी के अंदर ऐसे कई अंडे हैं। वह चाहता था कि सभी अंडे एक साथ मिलें । उसको एक उपाय सूझा । उसने मुर्गी को मार दिया। पर उसको अंदर से कोई अंडा नहीं मिला । किसान उदास हुआ। पर बहुत देर हो चुकी थी। उसने अपने मुर्गी खो दी थी ।

2.3 অনুবাদ-3 बातचीत (কথোপকথন)

ইন্দিরা इंदिरा	:	কি মজা পরীক্ষা শেষ হয়ে গেছে। চলো এবার আমরা পুর্বোত্তর রাজ্যে বেড়াতে যাই।	बहुत मजे की बात है, परीक्षा समाप्त हो गई। चलो इस बार हम पूर्वोत्तर चलते हैं ।

টেরেসা তেরেসা	:	নিশ্চই, খুব ভালো কথা। তুমি কোথায় যেতে চাও।	जरूर, यह अच्छा है। तुम कहाँ जाना चाहोगी ?
ইন্দিরা इंदिरा	:	আমি চেরাপুঞ্জী যেতে চাই।	मैं चेरापूंजी जाना चाहूँगी ।
টেরেসা तेरेसा	:	এখন ওখানে যাওয়ার সময় নয়, এইসময় ওখানে হয়তো খুব বৃষ্টি হচ্ছে, বরঞ্চ চলো শিলং যাই।	वह इस समय जाने लायक जगह नहीं है । वहाँ इस मौसम में ज्यादा बारिश हो रही होगी, चलो शिलाँग चलते हैं ।
ইন্দিরা इंदिरा	:	শিলং কেন?	शिलाँग क्यों ?
টেরেসা तेरेसा	:	ইন্দিরা, আমি ওখানে থেকেছি, তোমারও ভালো লাগবে। আর এখন ওখানের আবহাওয়াও খুব সুন্দর।	इंदिरा, मैं वहाँ रह चुकी हूँ । तुमको भी अच्छा लगेगा और इस समय वहाँ का मौसम बहुत अच्छा होगा ।
ইন্দিরা इंदिरा	:	ঠিক আছে। তাহলে শিলং-এই চলো। বলতো, গরম জামা কাপড় নিতে হবে কি?	ठीक है, फिर शिलाँग ही चलते हैं । लेकिन यह बताओ, गरम कपड़े भी साथ ले चलें ?
টেরেসা তেরেসা	:	দরকার নেই। আবহাওয়া খুব সুন্দর। রাতে একটু ঠান্ডা হতে পারে একটা সোয়েটার নিলেই হবে।	जरूरी नहीं है । मौसम सुहावना है । रातें ठंडी हो सकती हैं । इसलिए एक स्वेटर साथ रख सकते हैं ।
ইন্দিরা इंदिरा	:	কিভাবে যাব?	वहाँ जाएँगे कैसे ?
টেরেসা তেরেসা	:	দিল্লী থেকে গুয়াহাটির প্লেনে যাওয়া যেতে পারে, সেখান থেকে বাস অথবা গাড়ীতে শিলং।	दिल्ली से गुवाहाटी के लिए हवाई जहाज़ से जा सकते है । वहाँ से बस या कार से शिलाँग ।
ইন্দিরা इंदिरा	:	গুয়াহাটী থেকে শিলং কত দূর?	गुवाहाटी से शिलाँग की दूरी कितनी है ?
টেরেসা তেরেসা	:	প্রায় একশো কিলোমিটার। গাড়ীতে চার ঘণ্টা লাগবে।	लगभग 100 किलोमीटर दूर है । कार से चार घंटे लग सकते हैं ।

2.4 অনুবাদ -4 বাতচীত (কথোপকথন)

কিশন বললো, 'নৌকোয় আমরা সুরক্ষিত।'	किशन ने कहा "हम नाव में बिल्कुल सुरक्षित हैं।"
পশুরা কেবল শুকনো ডাঙ্গায় পৌঁছতে চায়। তারা একে অন্যের শিকার করবে না। হরিণ আজ রাতে চিতা ও বাঘের হাত থেকে সুরক্ষিত। শুয়ে ঘুমিয়ে পড়। আমি আজ নজরদারী করবো।	"जानवर केवल सूखी जमीन पर पहुँचना चाहते हैं। वे एक–दूसरे का शिकार तक नहीं करेंगे । हिरन आज रात तेंदुए और बाघ से सुरक्षित है । लेटो, और सो जाओ । मैं निगरानी करूँगा ।"
সীতা আড়মরা ভেঙ্গে চোখ বন্ধ করলো। নৌকোর দুই ধারে জলের কুলকুল শব্দে সে ঘুমিয়ে পড়ল। এমন সময় কোনো পাখীর ডাকে তার ঘুম ভেঙে গেল। কনুই-এ ভড় দিয়ে উঠে সে দেখল কিশন জেগে আছে।	सीता ने अंगड़ाई ली और आँखें बंद कर लीं । नाव के किनारे पर पानी की थपकियों ने उसे सुला दिया इतने में किसी पक्षी की चहचहाहट ने उसे जगा दिया । वह कोहनी के बल थोड़ा उठी, देखा कि किशन जगा हुआ था ।

2.5 অনুবাদ -5 বাতচীত (কথোপকথন)

হাউজ দ্যাট! উইকেট কিপার বল ধরে চেঁচিয়ে উঠলো।	"हाउ ईज़ दैट !" विकेट कीपर गेंद को अपने हाथों में उठाते हुए चिल्लाया ।
হাউজ দ্যাট - স্লিপ ফিল্ডাররাও চেঁচিয়ে উঠল।	"हाउ इज़ दैट !" स्लिप फील्डर्स ने दुहराया ।
কি হলো? ফাস্ট বোলার গর্জে আম্পায়ারের দিকে তাকালো।	"क्या हुआ ?" अंपायर को घूरते हुए तेज गेंदबाज़ गरजा ।
আউট্! আম্পায়ার বললো।	"आउट !" अंपायर ने कहा।
স্কুল টিমের ক্যাপ্টেন সুরজ আস্তে আস্তে প্যাভেলিয়নের দিকে চলে গেল, যা বাস্তবে মাঠের শেষে থাকা একটি টিন-শেড্।	और स्कूल टीम का कप्तान सूरज धीरे-धीरे उस पैवेलियन (मंडप) की ओर चल रहा था-जो वास्तव में मैदान के अंत में एक उपकरण-शेड था ।
স্কোর 4 উইকেটে 53 রান ছিল। জেতার জন্য আরও ষাট রান দরকার ছিল এবং ভালো	स्कोर 4 विकेट पर 53 रन था । जीत के लिए साठ रन और बनाने थे, और केवल एक अच्छा

ব্যাটসম্যান একজনই ছিল। বাকীরা সবাই বোলার ছিল যাদের থেকে বেশী রান পাওয়ার আশা ছিল না।	बल्लेबाज बचा रहा । बाकी सभी गेंदबाजा थे जिनसे ज्यादा रन बनाने की उम्मीद नहीं की जा सकती थी ।

3.0 অনুবাদ অভ্যাস – 1

কৃপয়া নিম্নলিখিত কা হিংদী মেং অনুবাদ কীজিএ ।

তাপমাত্রা 10 ডিগ্রী পড়ে গেল, 48 ঘণ্টায় 9° ডিগ্রী বেড়ে যায়।

নিউ দিল্লী ঃ গত 48 ঘণ্টায় দিল্লীর তাপমাত্রার অস্বাভাবিক পরিবর্তন লক্ষ্য করা যায়। সোমবারের তাপমাত্রা 10 ডিগ্রী পড়ে যায়। আবার মঙ্গলবারে তাপমাত্রার পারদ 9° ডিগ্রী বেড়ে যায়।

গত দুদিনে আবহাওয়ার এমন অস্বাভাবিক ওঠানামা সম্পর্কে আঞ্চলিক আবহাওয়া বিভাগের আবহাওয়াবিদরা জানিয়েছে গত ছ বছরে গ্রীষ্মকালে বিশেষতঃ মে জুন মাসে এরকম ঘটনা ঘটেনি।

একজন জনৈক আধিকারিক জানিয়েছেন, 'গত 48 ঘণ্টায় শহরে তাপমাত্রা প্রায় 19 ডিগ্রীর পরিবর্তন হয়েছে। প্রথম ঘণ্টায় তাপমাত্রা 10 ডিগ্রীরও বেশি পড়ে যায় - 39.6 ডিগ্রী থেকে 29.4 ডিগ্রী। তারপর 9 ডিগ্রী বেড়ে গিয়ে 29.4 ডিগ্রী থেকে 38.3 ডিগ্রী হয়ে যায়।'

বিশেষজ্ঞদের মতে পশ্চিমী ঝঞ্ঝা এবং ঘুর্ণিঝড়ের কারণে রবিবারে বজ্র বিদ্যুৎ সহ বৃষ্টিপাত হওয়ার ফলে তাপমাত্রআর আপেক্ষিক পরিবর্তন ঘটে। ফলস্বরূপ সমস্ত ব্যবস্থা অস্বাভাবিক হয়ে যায়।

শব্দার্থ

খুবই কম	बहुत कम	ওঠা-নামা	उतार–चढ़ाव
তাপমান	तापमान	ঝড়-বৃষ্টি	आँधी–तूफान
বিবিধতা	वैविध्य / विविधता	পশ্চিমী ঝঞ্ঝা	पश्चिमी विक्षोभ
আবহাওয়াবিদ	मौसम विशेषज्ञ	পারদ	पारा
অসাধারণ / সামান্য	असाधारण / असामान्य		

3.2 अनुवाद अभ्यास – 2

निम्नलिखित खंड का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए

स्वच्छ भारत अभियान क्या है

स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रीय स्वच्छता मुहिम है । ये एक बड़ा आंदोलन है जिसके तहत भारत को 2019 तक पूर्णत: स्वच्छ बनाना है । इसमें स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को आगे बढ़ाया गया है । इस मिशन को 2 अक्टूबर 2014 (145 वें जन्म दिवस) को बापू के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर आरंभ किया गया है और 2 अक्टूबर 2019 (बापू के 150 वें जन्म दिवस) तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है । भारत के शहरी विकास तथा पेयजल और स्वच्छता मंत्रलय के तहत इस अभियान को ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में लागू किया गया है । इस मिशन का पहला स्वच्छता अभियान (25 सितंबर 2014) भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा इसके पहले शुरु किया जा चुका था । इसका उद्देश्य सफाई व्यवस्था की समस्या का समाधान निकालना साथ ही, सभी को स्वच्छता की सुविधा के निर्माण द्वारा पूरे भारत में बेहतर मल–प्रबंधन करना है ।

शब्दार्थ

अभियान	অভিযান
राष्ट्रीय	জাতীয়
स्वच्छता	স্বচ্ছতা
मुहिम	প্রচার
आंदोलन	আন্দোলন
पेयजल	পানীয় জল
मल	ময়লা

— * —

पाठ / পাঠ -17

1.0 পাঠ - 'चंपा, पढ़ लेना अच्छा है' (कविता / কবিতা)

2.0 গদ্যরূপ

3.0 শব্দাবলী

4.0 ভাবানুবাদ (भावानुवाद)

5.0 কবিতার মূল ভাব (कविता का केंद्रीय भाव)

6.0 প্র.ন ও উত্তর

1.0 পাঠ - चंपा पढ़ लेना अच्छा है (চম্পা লেখাপড়া করা ভালো)

–त्रिलोचन शास्त्री

चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती
मैं जब पढ़ने लगता हूँ वह आ जाती है
खड़ी-खड़ी चुपचाप सुना करती है
उसे बड़ा अचरज होता है ;
इन काले चिह्नों से कैसे ये सब स्वर
निकला करते हैं ।

चंपा सुंदर की लड़की है
सुंदर ग्वाला है : गाय-भैंसें रखता है
चंपा चौपायों को लेकर
चरवाही करने जाती है ।

चंपा अच्छी है
चंचल है
नटखट भी है
कभी-कभी ऊधम करती है
कभी-कभी वह कलम चुरा लेती है

जैसे-तैसे उसे ढूंढ़कर जब लाता हूँ
पाता हूँ - अब कागज गायब
परेशान फिर हो जाता हूँ ।
चंपा कहती है :
तुम कागद ही गोदा करते हो दिन भर
क्या यह काम बहुत अच्छा है
यह सुनकर मैं हँस देता हूँ
फिर चंपा चुप हो जाती है ।

उस दिन चंपा आई, मैंने कहा कि
चंपा, तुम भी पढ़ लो
हारे गाढ़े काम सरेगा

गांधी बाबा की इच्छा है -
सब जन पढ़ना-लिखना सीखें
चंपा ने यह कहा कि
मैं तो नहीं पढूँगी
तुम तो कहते थे गांधी बाबा अच्छे हैं
वे पढ़ने-लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढूँगी ।

मैने कहा चंपा, पढ़ लेना अच्छा है
ब्याह तुम्हारा होगा, तुम गौने जाओगी,
कुछ दिन बालम सँग-साथ रह चला जाएगा जब कलकत्ता
बड़ी दूर है वह कलकत्ता
कैसे उसे संदेसा दोगी
कैसे उसके पत्र पढ़ोगी
चंपा पढ़ लेना अच्छा है ।

चंपा बोली : तुम कितने झूठे हो, देखा,
हाय राम, तुम पढ़-लिखकर इतने झूठे हो

मैं तो ब्याह कभी न करूँगी
और कहीं जो ब्याह हो गया
तो मैं अपने बालम को सँग-साथ रखूँगी
कलकत्ता मैं कभी न जाने दूँगी
कलकत्ते पर बजर गिरे ।

2.0 गद्यरूप गद्य क्रम

पैरा-1

चंपा कागज पर लिखे काले-काले अक्षर नहीं पहचानती । जब मैं पढ़ना शुरू करता हूँ, तो वह पास खड़ी होकर चुपचाप सुनती है । इन काले अक्षरों को पढ़कर कैसे ये स्वर निकाले जाते हैं, यह देखकर उसे बड़ा आश्चर्य होता है ।

पैरा-2

चंपा सुंदर नाम के ग्वाले की बेटी है ।

सुंदर के पास गाय और भैंसें हैं । चंपा गाय-भैंसों को चराती है ।

पैरा-3

चंपा एक अच्छी लड़की है । वह चंचल और नटखट भी है । कभी-कभी शरारत भी करती है और मेरी कलम चुरा लेती है । किसी तरह से जब कलम ढूँढ़ लेता हूँ, तब पता लगता है, कागज़ भी गायब है । मैं फिर से परेशान हो जाता हूँ ।

पैरा-4

चंपा मुझसे पूछती है कि क्या लिखना इतना अच्छा काम है, तुम दिनभर लिखते रहते हो ?

पैरा-5

एक दिन जब चंपा आई तो मैंने उससे कहा कि तुम भी पढ़ना-लिखना सीख लो । मुश्किल में तुम्हारे काम आएगा ।

गांधी जी की इच्छा भी यही है कि सभी लोग पढ़ना-लिखना सीखें ।

चंपा ने कहा, मैं नहीं पढूँगी । और पूछा तुम तो गांधी जी को अच्छा कहते थे, तब वे पढ़ने-लिखने की बात कैसे कह सकते हैं ? मैं नहीं पढूँगी ।

पैरा–6

मैंने चंपा से कहा, पढ़ना–लिखना अच्छा है । जब तुम्हारा ब्याह होगा और गौने के बाद पति के घर जाओगी और तुम्हारा पति कुछ दिन तुम्हारे साथ रहकर काम–काज के लिए कलकत्ता चला जाएगा । कलकत्ता तो बहुत दूर है, तब उसे संदेश कैसे भेजोगी ? उसके पत्र कैसे पढ़ोगी ? इसलिए चंपा, पढ़ना–लिखना अच्छा है ।

पैरा–7

चंपा ने आश्चर्य से मुझे देखकर कहा, तुम कितना झूठ बोलते हो ? हाय राम, तुम पढ़ लिखकर भी इतना झूठ बोलते हो ।

मैं कभी विवाह नहीं करूँगी, और यदि विवाह हो भी गया तो हमेशा पति को साथ ही रखूँगी। उसे कलकत्ता कभी न जाने दूँगी । बिजली गिरे कलकत्ते पर ।

3.0 शब्दावली

काले–काले	कालो कालो
अक्षर	অক্ষর
चीन्हती	চেনা
चुपचाप	চুপচাপ
अचरज	আশ্চর্য / বিস্ময়
चिह्न	চিহ্
चौपाया	গবাদী পশু
चरवाई	গোচারণ
चंचल	চঞ্চল
नटखट	দুষ্টু
ऊधम	উৎপাত করা
गायब	উধাও
गोदना	হিজিবিজি কাটা
हारे–गाढ़े	কঠিন সময়ে
इच्छा	ইচ্ছা
सरेगा	সম্পন্ন করা
ब्याह	বিয়ে
गौना	বিয়ের বেশ কিছু সময়ের পরে মেয়েকে বাপের বাড়ী থেকে শ্বশুরবাড়ী পাঠানোকে গৌনা বলে।
बालम	স্বামী
संदेशा	বার্তা
झूठे	মিথ্যুক
बजर (वज्र)	বজ্র

4.0 ভাবানুবাদ

कवि एक चरवाहे की बेटी चंपा को साक्षर बनने के लिए प्रेरित करते हैं ।

पैरा–1

चंपा निरक्षर है । जब मैं बोलकर पढ़ता हूँ । तब वह उत्सुकता से मुझे सुनती है, उसे बहुत हैरानी होती है कि ये काले–काले अक्षर मुँह से कैसे बोले जा रहे हैं ?

पैरा–2

चंपा का परिचय देते हुए कवि कहता है कि चंपा सुंदर नाम के एक ग्वाले की बेटी है । सुंदर गाय–भैंस पालता है । चंपा उन गाय–भैंसों को चराने के लिए ले जाती है ।

पैरा–3

चंपा के स्वभाव का चित्रण करते हुए कवि आगे कहता है कि चंपा चंचल, नटखट और ऊधमी लड़की है । कभी कलम चुराकर तो कभी कागज चुराकर मुझे परेशान करती है ।

पैरा–4

लिखित भाषा के विषय में चंपा के कौतुहल का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि मुझे दिनभर कागज़ पर लिखते हुए देखकर चंपा के मन में प्रश्न उठता है, क्या लिखना बहुत अच्छा काम है ?

पैरा–5

सभी लोगों में पढ़ने–लिखने की आवश्यकता पर बल देते हुए कवि कहता है, मैंने एक दिन चंपा से कहा कि वह पढ़ना–लिखना सीखे । हमेशा काम आएगा । गांधी जी ने साक्षरता पर बल दिया था ।

चंपा पढ़ने–लिखने का महत्व नहीं समझ सकी और पूछने लगी कि गांधी बहुत अच्छे व्यक्ति हैं । फिर वे पढ़ने–लिखने की बात कैसे कर सकते हैं ? मैं तो नहीं पढूँगी ।

पैरा–6

पढ़ने–लिखने के महत्व पर बल देते हुए कवि चंपा को समझाता है कि जब विवाह के पश्चात तुम पति के घर जाओगी तो कुछ दिन बाद तुम्हारा पति काम–काज के लिए कलकत्ता जा सकता है । अगर तुमको पढ़ना–लिखना नहीं आता होगा तो उसको संदेशा कैसे भेज सकोगी ? वह अगर तुम्हें पत्र लिखेगा तो उस पत्र को कैसे पढ़ सकोगी । इसलिए पढ़ना–लिखना सीखना बहुत जरूरी है ।

पैरा–7

यह सुनकर चंपा अचरज में पड़ गई और बोली कि क्या पढ़–लिखकर भी व्यक्ति झूठ बोलता है ? मैं विवाह नहीं करूँगी और यदि विवाह हो भी गया तो हमेशा अपने पति को साथ रखूँगी । उसे अकेले कलकत्ता नहीं जाने दूँगी, कलकत्ते का सत्यानाश हो ।

5.0 কবিতার মূল ভাব (कविता का केंद्रीय भाव)

इस कविता में कवि लड़कियों की साक्षरता पर बल देता है । और कहता है कि लड़कियों का भी साक्षर होना आवश्यक है । पढ़–लिख लेने पर जीवन सुगम हो जाता है । जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति भी उत्पन्न हो जाती है ।

6. প্রশ্ন ও উত্তর

प्रश्न–1. इस कविता के आधार पर चंपा का परिचय दीजिए ।

उत्तर चंपा एक ग्वाले की लड़की है । वह अनपढ़ है । वह गाय–भैंसों को चराने ले जाती है ।

प्रश्न–2. चंपा के स्वभाव का वर्णन कीजिए ।

उत्तर चंपा चंचल और नटखट स्वभाव की लड़की है । उसे शरारत करने में आनंद आता है । लिखे हुए शब्द को देखकर उसके मन में कौतुहल उत्पन्न होता है ।

प्रश्न–3. कवि क्या कहकर चंपा को साक्षर बनने के लिए प्रेरित करता है ?

उत्तर कवि चंपा से कहता है कि अगर तुम पढ़ना लिखना नहीं सीखोगी तो अपने पति को संदेश कैसे भेजोगी और उसका पत्र कैसे पढ़ोगी ।

प्रश्न–4. चंपा कवि को कैसे परेशान करती है ?

उत्तर चंपा कभी कवि की कलम चुरा लेती है तो कभी कागज़ छुपा देती है ।

— * —

पाठ / पाठ-18

1.0 पाठ विषयक

2.0 पाठ - समाचार पत्र (संवाद पत्र)

1.0 पाठ विषयक

वर्तमा पाठटि छोटो संवादपत्रेर आकारे परिकल्पना करा हयेछे, याते राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक ও खेलाधूला विषयगुलि सम्मिलित आछे।

2.0 पाठ समाचार पत्र **(संवाद पत्र)**

1. हिमाचल में तीसरे दिन भूकंप के झटके नई दिल्ली : 20 दिसंबर हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले में रविवार सुबह फिर से भूकंप के झटके महसूस किए गए । यह झटका 3.5 तीव्रता से आया । शुक्रवार, शनिवार को भी चंबा में झटके आए थे ।	**2. कलाम पर बैक्टीरिया का नाम** नई दिल्ली : 20 दिसंबर नासा के वैज्ञानिकों ने उनके द्वारा खोजे गए एक नए जीव को भारत के पूर्व राष्ट्रपति और अंतरिक्ष वैज्ञानिक ए पी जे अब्दुल कलाम का नाम दिया है । नासा की प्रयोगशाला ने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के फिल्टरों में इस जीवाणु को खोजा ।
3. लोगों को मरने के लिए नहीं छोड़ा जा सकता है नई दिल्ली : 20 दिसंबर, कार्यालय संवाददाता द्वारा राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने दिल्ली में प्रदूषण के जानलेवा स्तर तक पहुँचने पर केंद्र, दिल्ली, पंजाब और हरियाणा सरकार को नोटिस भेजा है । साथ ही, कहा कि सरकार जहरीली धुंध के कारण अपने नागरिकों को मरने के लिए नहीं छोड़ सकती । आयोग ने इस खतरे से निपटने के लिए उचित कदम नहीं उठाने को	**4. पहली बार, दूसरे सोलर सिस्टम की कोई चीज हमारी आकाशगंगा में आई** एजेंसियाँ, वाशिगंटन अंतरिक्ष में एक रहस्यमय चीज के दिखने से नासा के वैज्ञानिक हैरान हैं । माना जा रहा है कि ऐसा पहली बार है कि बाहर से हमारी आकाशगंगा में कोई वस्तु आई है । वैज्ञानिकों के अनुसार यह कोई धूमकेतु या कॉमेट हो सकता है । यह चीज दिखने में काफी छोटी थी लेकिन काफी तेजी से घूमती नजर आ रही थी । उनके अनुमान के मुताबिक इसकी स्पीड 15 माइल प्रति सेकंड थी । साथ ही हाल में ही यह

लेकर प्राधिकारियों की निंदा की । आयोग ने सरकारों से हालात से निपटने के लिए उठाए जा रहे एवं प्रस्तावित कदमों की दो सप्ताह के भीतर रिपोर्ट मांगी है ।	पृथ्वी के ऑर्बिट से करीब 15 मिलियन की दूरी से गुजरी थी । इसका नाम फिलहाल 'ए/2017यूआई' रखा गया है और इससे पृथ्वी को किसी भी तरह का खतरा होने की बात से इन्कार किया गया है ।
5. इमरजेंसी में इन्टरनेट बंद करना आसान नहीं संवाददाता नई दिल्ली : केंद्र सरकार ने सभी राज्यों से कहा है कि वे लॉ एंड ऑर्डर या ऐसे मुद्दों के आधार पर जब भी किसी खास क्षेत्र में इन्टरनेट सेवा को बंद करें तो इसके लिए बनी नीति के तहत ही करें । साथ ही इसके लिए जरूरी मानकों को भी फॉलो करने को कहा है।	**6. सिम का क्लोन बनाकर ठगी का नया धंधा** नई दिल्ली : 20 दिसंबर अगर आप मोबाइल नेटवर्क सर्विस प्रोवाइडर कंपनी के कस्टमर केयर को सिम नंबर की कोई जानकारी दे रहे हैं, तो जरा सावधान हो जाइए। कहीं ऐसा न हो कि शातिर ठग आपके सिम का क्लोन तैयार कर बैंक खाते से जीवन भर की गाढ़ी कमाई हड़प लें ।
7. 1.7 लाख को एयर लिफ्ट कराने वाले मैथ्यु नहीं रहे मुंबई 20 दिसंबर रियल स्टोरी पर बनी फिल्म एयर लिफ्ट को भारतीय दर्शकों के साथ दुनिया भर में तारीफें मिलीं । असल जिंदगी में एयर लिफ्ट के नायक मैथुनी मैथ्यु थे जिनका 81 वर्ष की उम्र में शुक्रवार को कुवैत में निधन हो गया है । इराक जंग के दौरान कुवैत से 1 लाख 70 हजार भारतीयों को सुरक्षित निकालने में मैथ्यु ने अभूतपूर्व मदद की ।	**8. दिल्ली के चिड़ियाघर में एक साल में 171 वन्य जीवों की मौत** नई दिल्ली 20 दिसंबर एक वर्ष के भीतर दिल्ली चिड़ियाघर में वन्यजीवों की मृत्यु के मामलों में दो गुना का इजाफा हुआ है । बीते वर्ष दिल्ली के चिड़ियाघर में गर्मी और सर्दी से सबसे अधिक मौतें हुई ।
9. बारिश से मौसम हुआ सुहाना नई दिल्ली 20 दिसंबर	**10. मेरी कॉम ने पक्का किया अपना छठा मेडल** एजेंसियां, हो चि मिन्ह सिटी (वियतनाम)

रविवार वीकेंड का दिन राजधानीवासियों के लिए तापमान में आई तेजी से न्यूनतम आर्द्रता के लिए खास व राहत भरा रहा । राजधानी के कुछ हिस्सों में सुबह करीब साढ़े छह बजे तेज हवाओं के साथ पहले हल्की बूँदाबाँदी हुई । फिर शाम चार बजे विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग समय पर हुई रिमझिम बारिश । इसके पहले धूलभरी तेज हवा चली, लेकिन बाद में हुई बारिश ने मौसम सुहाना कर दिया ।	दिग्गज बॉक्सर एम सी मेरी कॉम ने एशियाई महिला बॉक्सिंग चौंपियनशिप में पहुँचकर इस महाद्वीपीय प्रतियोगिता में अपना छठा मेडल पक्का किया ।
11. भारत में फैला फुटबॉल एजेंसियाँ, कोलकाता फीफा प्रेजिडेंट जियानी इनफैनटिनो ने कहा है कि भारत अब फुटबॉल कंट्री बन गया है। जियानी गुरुवार को यहाँ पहुँचे । उन्हें आज फीफा काउंसिल की बैठक की अध्यक्षता करनी है । इसके बाद वह शनिवार को अंडर–17 वर्ल्ड कप के फाइनल के दौरान भी मौजूद रहेंगे और विजेता टीम को ट्रॉफी प्रदान करेंगे ।	**12. महिला क्रिकेट टीम ने जीती चार देशों की सीरीज** हमारे विशेष संवाददाता द्वारा भारतीय महिलाओं ने वर्ल्ड कप से पहले बड़ा टूर्नामेंट जीत लिया है । उसने चार देशों के वनडे टूर्नामेंट के फाइनल में मेजबान दक्षिण अफ्रीका को 8 विकेट से पराजित किया । टूर्नामेंट में भारत, दक्षिण अफ्रीका के अलावा आयरलैंड और जिंबाब्वे की टीमों ने हिस्सा लिया । आई सी सी वर्ल्ड कप 24 जून से इंग्लैंड में खेला जाएगा ।

বিশেষ বৈশিষ্ট্য

সংবাদ উপস্থাপিত করার ধরণ এবং ভাষা ব্যবহারের নিম্নলিখিত বৈশিষ্ট্যগুলি লক্ষ্য ক ন।

(ক) শিরোনাম সংক্ষিপ্ত ও আকর্ষক হয় এবং এতে সংবাদ সারাংশ প্রতিফলিত হয়ে থাকে। যেমন ঃ

कलाम पर बैक्टीरिया का नाम

बारिश से मौसम हुआ सुहाना

(খ) সাধারণতঃ সংবাদ পত্রগুলি দুটি প্রধান সূত্র থেকে সংবাদ সংগ্রহ করে থাকে।

i) কেন্দ্রীয় মিডিয়া নেটওয়ার্কের মাধ্যমে যে সংবাদ সংস্থা খবর পাঠায় ঃ

प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया, समाचार भारती, युनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया

ii) নিজস্ব প্রতিনিধি এবং সংবাদ দাতার মাধ্যমে যেমন ঃ

বিশেষ প্রতিনিধি বিশেষ প্রতিনিধি

খেল সংবাদদাতা ত্রীড়া সাংবাদিক

(গ) সংবাদের শু তেই সাধারণতঃ সংবাদ সংস্থার নাম দেওয়া হয়। যেমন ঃ

বার্তা – য়ুনাইটেড ইংডিয়া বার্তা

প্রে. ট্র. – প্রেস ট্রস্ট অঁফ ইংডিয়া

রা. – রায়টর

স. ভা. – সমাচার ভারতী

যু. ন্যূ. – যুনাইটেড ন্যূজ

একই রকমভাবে সংবাদ পত্রের নিজস্ব সাংবাদিক এবং সংবাদদাতার উল্লেখ করা হয়।

হমারে বিশেষ সংবাদদাতা দ্বারা নিজস্ব বিশেষ সংবাদদাতা দ্বারা।

হমারে বিশেষ প্রতিনিধি দ্বারা নিজস্ব বিশেষ প্রতিনিধি দ্বারা।

খেল সংবাদদাতা দ্বারা ত্রীড়া সংবাদদাতা দ্বারা

(ঘ) অসমর্থিত সংবাদ বা সংবাদ সূত্রের গোপনীয়তা রক্ষার জন্য সাধারণতঃ নিম্নলিখিত বয়ানটি ব্যবহার করা হয়।

বিশ্বস্ত সূত্রों के अनुसार বি শ্বস্ত সূত্র অনুসারে।

मालूम हुआ है कि জানা গেছে যে।

(ঙ) সংবাদ পত্রে সাধারণতঃ যখন ব্যক্তি বিশেষের বিবৃতি প্রকাশ করা হয় তখন তা পরোক্ষ উক্তি তে করা হয়। হিন্দীতে প্রত্যক্ষ এবং পরোক্ষ উক্তি তে তেমন উল্লেখযোগ্য কোনো পার্থক্য থাকে না সে ক্ষেত্রে উদ্ধৃতি চিহ্ন তুলে দিয়ে কি ব্যবহার করা হয়। ইংরাজির মত সর্বনাম এবং ক্রি য়ার কোন পরিবর্তন হিন্দীতে হয় না। যেমন ঃ

প্রত্যক্ষ : सिंधिया ने कहा, पाठ्य पुस्तकों को संशोधित करने की जरूरत है ।

অপ্রত্যক্ষ : सिंधिया ने कहा कि पाठ्य पुस्तकों को संशोधित करने की जरूरत है ।

লক্ষ্য ক ন উল্লিখিত দুটি বাক্যের গঠন রীতিতে উল্লেখযোগ্য কোন পার্থক্য নেই।

— * —

पाठ / পাঠ-19

1.0 पाठ - हम सब सुमन एक उपवन के (कविता / কবিতা)

2.0 कविता का गद्य रूप (কবিতার গদ্যরূপ)

3.0 शब्दावली

4.0 भावार्थ (ভাবার্থ)

5.0 प्रश्न ও উত্তর

1.0 पाठ - हम सब सुमन एक उपवन के (একই বাগানের ফুল আমরা)

- द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

1. हम सब सुमन एक उपवन के ।
एक हमारी धरती सबकी
जिसकी मिट्टी में जनमे हम ।
मिली एक ही धूप हमें है
सींचे गए एक जल से हम ।।
पले हुए हैं झूल-झूलकर
पलनों में हम एक पवन के ।
हम सब सुमन एक उपवन के ।।

2. रंग-रंग के रूप हमारे
अलग-अलग है क्यारी-क्यारी ।
लेकिन हम सबसे मिलकर ही
इस उपवन की शोभा सारी ।।
एक हमारा माली, हम सब
रहते नीचे एक गगन के ।
हम सब सुमन एक उपवन के ।।

3. काँटों में खिलकर हम सबने
हँस-हँसकर है जीना सीखा ।
एक सूत्र में बँधकर हमने
हार गले का बनना सीखा ।।
सबके लिए सुगंध हमारी,
हम शृंगार धनी-निर्धन के ।
हम सब सुमन एक उपवन के ।।

2.0 कविता का गद्य रूप (কবিতার গদ্যরূপ)

पद–1

हम सब एक उपवन के सुमन हैं । हम सबकी धरती एक है, उसी की मिट्टी में हम जन्मे हैं । हमें एक ही जैसी धूप मिली है और हम एक ही जल से सींचे गए हैं । हम एक ही पवन के पालने में झूल झूलकर पले हैं । हम सब एक उपवन के सुमन हैं ।

पद–2

हमारे रूप रंग अलग-अलग हैं । हमारी क्यारी भी अलग-अलग है । लेकिन इस उपवन की सारी शोभा हम सबसे मिलकर है । हम सब एक ही गगन के नीचे रहते हैं और हमारा माली भी एक ही है । हम सब एक ही उपवन के फूल हैं ।

पद–3

हम सब ने काँटों में खिलकर हँस-हँसकर जीना सीखा है । एक सूत्र में बंधकर हमने गले का हार बनना सीखा है । हमारी सुगंध सबके लिए है चाहे धनी हो या निर्धन, हम सबके शृंगार हैं । हम सब एक ही उपवन के सुमन हैं ।

3.0 शब्दावली

पद-1

सुमन	সুমন / ফুল	मिट्टी	মাটি
उपवन	উপবন	जनमे	জন্ম
धरती	ধরনী	धूप	রৌদ্র
सींचना	সিঞ্চন করা	जल	জল

पलना	दोलना	झूल-झूलकर	दुले दुले
पलना	पालन करा	पवन	पवन

पद – **2**

रंग	रङ	क्यारी	फूलेर बागान
रूप	रूप	शोभा	शोभा
अलग	आलादा		
माली	मालो	गगन	गगन

पद – **3**

कांटे	काँटा	जीना	बाँचा
बाँधना	बाँधा	लिखना	लेखा
सीखना	शेखा	हार	हारा
हँसना	हाँसा	सूत्र	सूतो
सुगंध	सुगन्ध	निर्धन	निर्धन
शृंगार	शृङ्गार	धनी	धनी

भावार्थ

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी ने इस कविता में अनेकता में एकता के भाव को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है ।

कवि ने इस कविता में बच्चों के माध्यम से एकता की भावना जगाते हुए कहा कि :-

हम सब एक ही बगीचे के फूलों की तरह हैं । हम सब जाति, धर्म और पंथ की भावना से मुक्त हैं ।

कवि कहना चाहता है कि हम अलग-अलग होते हुए भी एक हैं ।

पद – **1**

हम सब एक ही बगीचे के फूलों की तरह हैं । हम सबकी धरती एक है और हम सब उसी से जन्मे हैं । हम सभी को एक ही प्रकार की धूप मिली है और एक ही जल से सींचे गए हैं । अर्थात

हमारी परवरिश समान भारतीय परिवेश में हुई है । हम सब एक ही बगीचे के फूलों की तरह हैं ।

हम जिस पालने में झूल-झूलकर बड़े हुए हैं, उसे एक ही पवन ने झुलाया है । हम सब एक बगीचे के फूलों की तरह हैं ।

पद – 2

हमारे रंग-रूप में भले ही विभिन्नता है, हम अलग-अलग प्रांतों में पले-बढ़े हैं । लेकिन हम इस देश की शोभा इसी प्रकार बढ़ा रहे हैं जिस प्रकार बगीचे में अलग-अलग क्यारियों में खिलने वाले फूल बगीचे की शोभा बढ़ा रहे हैं ।

जिस तरह एक माली बगीचे में लगे हुए फूलों की देखभाल करता है उसी तरह हम सबका जन्मदाता, पालन-पोषण करने वाला एक ईश्वर है । हम उसी की छत्र–छाया में रह रहे हैं ।

पद – 3

कष्टों और अभावों में भी हमने खुशी-खुशी जीवन को जीना सीखा है । हमने आपस में मिलजुलकर रहना सीखा है । हम सब प्रेम और एकता के सूत्र में बंधकर देश का सम्मान बढ़ा रहे हैं; उसी तरह जैसे माला व्यक्ति की शोभा बढ़ाती है।

हमारे लिए सभी समान हैं । सबके भीतर परोपकार की भावना है । हम सब एक हैं ।

4.1 कविता का केंद्रीय भाव (কবিতার মূল ভাব)

भारत विविधताओं का देश है । अनेक प्रांतों, धर्मो, जातियों, वर्गों, भाषाओं के होते हुए भी हम सब एकता के सूत्र में बंधे हुए हैं । 'अनेकता में एकता' हमारी विशेषता है ।

5.0 प्रश्न और उत्तर (প্রশ্ন ও উত্তর)

प्रश्न–1. 'हम सब सुमन एक उपवन के' का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर इन पंक्तियों का तात्पर्य है 'अनेकता में एकता' ।

प्रश्न–2. कवि धरती, मिट्टी, धूप और जल के माध्यम से क्या बताना चाहता है ?

उत्तर कवि इन तत्वों से सबके पालन-पोषण की बात बताता है । उपर्युक्त सभी तत्व समान रूप से सबके विकास में सहायक हैं।

प्रश्न–3. इस कविता में माली से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर माली से तात्पर्य है हमारा पालन-पोषण करने वाला, सृष्टि का निर्माता, ईश्वर ।

प्रश्न–4. 'अलग–अलग है क्यारी–क्यारी लेकिन हम सबसे मिलकर ही, इस उपवन की शोभा सारी' का भाव स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर विभिन्न प्रांतों, धर्मों, जातियों, वर्गों भाषाओं के होते हुए भी सब भारतीय हैं। भारत की शोभा इसी एकता में है ।

प्रश्न–5. इस कविता से हमें क्या संदेश मिलता है ?

उत्तर इस कविता में कवि ने एकता का संदेश दिया है ।

— * —

পাঠ / পাঠ -20

1.0 সার লেখন / সংক্ষেপণ (সার সংক্ষেপন)

1.1 সার সংক্ষেপন সম্পর্কে

2.0 পল্লবন (গল্প পল্লবিত করা)

2.1 গল্প পল্লবন সম্পর্কে

1.0 সার লেখন / সংক্ষেপণ (সার সংক্ষেপন)

1.1 সার সংক্ষেপন সম্পর্কে

প্রদত্ত পাঠের অপরিহার্য বিষয়গুলি একত্রিত করে ছোটো আকারে লেখাকেই সার সংক্ষেপ বলে।

সার সংক্ষেপ সাধারণতঃ মূল পাঠের এক তৃতীয়াংশ হওয়া উচিত।

যতদূর সম্ভব মূল পাঠের শব্দ এবং বাক্যের পুনরাবৃত্তি ও ব্যবহার এড়িয়ে চলা উচিত।

মূল পাঠে অভিব্যক্ত দৃষ্টিকোন ছাড়া সার সংক্ষেপনে কোনরকম নিজস্ব দৃষ্টি ভঙ্গি থাকা উচিত নয়।

প্রদত্ত পাঠটি ভাল করে পড়ুন এবং আলাদা কাগজে মূল সংকেতগুলি লিখুন। সার সংক্ষেপনের সংকেতগুলি বিস্তারিত করে উপযুক্ত শীর্ষক দিন।

সার সংক্ষেপনের জন্য প্রদত্ত হিন্দী পাঠটি কিছু অপরিচিত শব্দ এবং বাক্যাংশ থাকার জন্য কঠিন মনে হতে পারে তাই পাঠের শেষে কঠিন শব্দের এবং বাক্যাংশের প্রাসঙ্গিক অর্থ দেওয়া হয়েছে। এইগুলি পাঠটি বুঝতে আপনাদের সাহায্য করবে।

1.2 নিম্নলিখিত অনুচ্ছেদের সার সংক্ষেপ লিখুন।

উদাহরণ–1

প্রत्येक राष्ट्र के जीवन-निर्वाह के लिए यह आवश्यक है कि देश की प्राकृतिक संपत्ति की रक्षा की जाए तथा उस संपत्ति को उन्नति देने के पूरे-पूरे प्रयत्न किए जाएँ । देश की कृषि, देश की खानों की पैदावार तथा देश की दस्तकारी की बिना रक्षा किए, बिना उसकी उन्नति किए तथा बिना देश के धन को देश से बाहर जाने से रोके किसी भी देश में बच्चों का पालन अथवा उन्हें दरिद्रता तथा दुष्काल के भयंकर परिणामों से बचाना सर्वथा दुष्कर है । साथ ही हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि राष्ट्रीय जीवन तथा राष्ट्रीय उन्नति के लिए देश की प्राकृतिक संपत्ति को उन्नति देने की अपेक्षा देश की

मानसिक और नैतिक संपत्ति को उन्नति देना अधिक आवश्यक कार्य है । जो राष्ट्र अपनी मानसिक संपत्ति की उचित रक्षा करता है तथा उसे उन्नत बनाने के पूरे-पूरे प्रयत्न करता है, केवल वह राष्ट्र ही मान, उत्साह तथा स्वतंत्रता के साथ इस संसार में जीवित रह सकता है । राष्ट्र के बालक-बालिकाएँ राष्ट्र की मानसिक और नैतिक संपत्ति हैं, जो प्राकृतिक संपत्ति से अधिक मूल्यवान और महत्व की हैं। जो राष्ट्र इस धन की उचित रक्षा और उन्नति नहीं करता वह उन्नति के पथ से हटकर अवनति के गड्ढे की ओर फिसलने लगता है ।

जिस संपत्ति की ओर हम अभी संकेत कर आए हैं, उनकी रक्षा और वृद्धि उचित शिक्षा के प्रभाव से ठीक-ठीक तभी हो सकती है, जब हम अपने कर्तव्यों तथा अधिकारों को समझें और अपने अधिकारों को पूरा करने और अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए कटिबद्ध हों । कर्तव्य-विमूढ़ परतंत्र देशों के लोग अत्यंत लाभप्रद तथा रत्नगर्भा भूमि में रहते हुए भी निर्धन बने रहते हैं । अशिक्षित और अज्ञानांधकार में डूबे हुए दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों के आदिवासी अपने पैरों के नीचे सोने की खानें रखते हुए भी कंगाल हैं । वास्तव में किसी देश की प्राकृतिक संपत्ति की रक्षा तथा वृद्धि उस देश की मानसिक संपत्ति की रक्षा तथा वृद्धि पर ही निर्भर है ।

संक्षेपण

किसी राष्ट्र को समृद्ध तथा उन्नत बनाने के लिए उस राष्ट्र की प्राकृतिक संपदा की रक्षा तथा वृद्धि आवश्यक है । राष्ट्र के बालक-बालिकाओं को भी राष्ट्र–संपत्ति समझा जाता है, जिनके भविष्य की रक्षा राष्ट्र के मानसिक और नैतिक उत्थान से ही संभव है । अधिकारों और कर्तव्यों के सम्यक् ज्ञान से मानसिक और नैतिक उन्नति की रक्षा की जा सकती है, जिसके अभाव में राष्ट्र की प्राकृतिक संपदा की भी रक्षा नहीं की जा सकती ।

1.3 उदाहरण-2

समस्त भारतीय साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता उसके मूल में स्थित समन्वय की भावना है । उसकी यह विशेषता इतनी प्रमुख तथा मार्मिक है कि केवल इसी के बल पर संसार के अन्य साहित्यों के सामने वह अपनी मौलिकता की पताका फहरा सकता है और अपने स्वतंत्र अस्तित्व की सार्थकता प्रमाणित कर सकता है । जिस प्रकार धार्मिक क्षेत्र में भारत के ज्ञान, भक्ति तथा कर्म के समन्वय प्रसिद्ध हैं, ठीक उसी प्रकार साहित्य तथा अन्य कलाओं में भी भारतीय प्रकृति समन्वय की ओर रही है । साहित्यिक समन्वय से हमारा तात्पर्य साहित्य में प्रदर्शित सुख-दुख, उत्थान-पतन, हर्ष-विषाद आदि विरोधी तथा विपरीत भावों के समीकरण तथा एक अलौकिक आनंद में उनके विलीन हो जाने में है । साहित्य के किसी अंग को लेकर देखिए, सर्वत्र यही समन्वय दिखाई देगा । भारतीय नाटकों में ही सुख और दुख के प्रबल घात-प्रतिघात दिखाए गए हैं, पर सबका अवसान आनंद में ही किया गया है । इसका प्रधान कारण

यह है कि भारतीयों का ध्येय सदा से जीवन का आदर्श स्वरूप उपस्थित करके उसका उत्कर्ष बढ़ाने और उसे उन्नत बनाने का रहा है । वर्तमान स्थिति से उसका इतना संबंध नहीं है, जितना भविष्य की संभाव्य उन्नति से है । हमारे यहाँ यूरोपीय ढंग के दुखांत नाटक इसीलिए नहीं दीख पड़ते हैं । यदि आजकल ऐसे नाटक दिखाई पड़ने लगे हैं, तो वे भारतीय आदर्श से दूर और यूरोपीय आदर्श के अनुकरण मात्र हैं ।

संक्षेपण

भारतीय साहित्य की सबसे बड़ी एवं मौलिक विशेषता उसके मूल में विद्यमान समन्वय की भावना है । यहाँ के साहित्य का चरम लक्ष्य आनंद की प्राप्ति है । जिसमें सुख-दुख दोनों का मिश्रण रहता है । आजकल जो कभी-कभी दुखांत साहित्य दिखलाई पड़ने लगता है, उसका कारण पश्चिम की नकल है ।

उक्त अवतरण का शीर्षक दिया जा सकता है 'भारतीय साहित्य की मौलिक विशेषता' ।

1.4 उदाहरण-3

आधुनिक शिक्षा-प्राप्त स्त्रियाँ अच्छी गृहिणियाँ नहीं बन सकतीं, यह प्रचलित धारणा पुरुष के दृष्टि बिंदु से देखकर ही बनाई गई है, स्त्री की कठिनाई को ध्यान में रखकर नहीं । एक ही प्रकार के वातावरण में पले और शिक्षा पाए हुए पति-पत्नी के जीवन तथा परिस्थितियों की यदि हम तुलना करें तो संभव है आधुनिक शिक्षित स्त्री के प्रति कुछ सहानुभूति का अनुभव कर सकें । विवाह से पुरुष को तो कुछ छोड़ना नहीं पड़ता और न उसकी परिस्थितियों में ही कोई अंतर आता है, परंतु इसके विपरीत स्त्री के लिए विवाह मानो एक परिचित संसार को छोड़कर नवीन संसार में जाना है, उसका जीवन नवीन होगा। पुरुष के मित्र, उसकी जीवनचर्या, उसके कर्तव्य सब पहले जैसे ही रहते हैं और वह अनुदार न होने पर भी शिक्षित पत्नी के परिचित मित्रों, अध्ययन तथा अन्य परिचित दैनिक कार्यों के अभाव को नहीं देख पाता । साधारण परिस्थिति होने पर भी घर में इतर कार्यों से स्त्री को अवकाश रहता है, संयुक्त कुटुंब न होने से बड़े परिवार की उलझनें भी नहीं घेरे रहतीं । उसके लिए पुरुष मित्र वर्ज्य हैं और उसे मित्र बनाने के लिए शिक्षित स्त्रियाँ मिलती हैं। अत: एक विचित्र अभाव का बोध उसे होने लगता है । कभी-कभी पति के आने-जाने जैसी छोटी बातों में बाधा देने पर वह विरक्त भी हो उठती है । अच्छी गृहिणी कहलाने के लिए उसे केवल पति की इच्छा के अनुसार कार्य करने तथा मित्रों और कर्तव्यों के अवकाश के समय उसे प्रसन्न रखने के अतिरिक्त और विशेष कुछ नहीं करना होता, परंतु यह छोटा-सा कर्तव्य उसके महान् अभाव को नहीं भर पाता ।

संक्षेपण

आज भी भारतीय शिक्षित नारी को अच्छी गृहिणी के रूप में न देख पाना पुरुषों की एकांगी दृष्टि का परिणाम है । विवाह के बाद बदली हुई उसकी मन: स्थिति तथा परिस्थिति की कठिनाइयों को नहीं

देखा जाता । उसकी रुचियों और भावनाओं की उपेक्षा की जाती है । पुरुष यदि अपने सुख के साथ पत्नी के सुख का भी ध्यान रखे तो वह अच्छी गृहिणी सिद्ध हो सकती है ।

2.0 पल्लवन (पल्लवित करा)

2.1 गल्प ः पल्लवन सम्पर्के

আপনারা জানেন যে নতুন ভাষা শেখার উদ্দেশ্যে শুধু পাঠ বোঝা বা সেই ভাষায় কথাবার্তা বলা নয়, বরং নিজেকে সেই ভাষায় স্বচ্ছন্দ এবং স্পষ্ট ভাবে সম্পূর্ণরূপে প্রকাশযোগ্য করা। ছাত্ররা নতুন ভাষার নানা প্রকারের গঠন রীতি ও অভিব্যক্তি র সাহায্যে যা শিখেছে তা দিয়েই এই উদ্দেশ্য তারা পূরণ করতে পারে।

নতুন ভাষায় ছাত্রদের প্রকাশ করতে পারার শক্তি তার গল্প গড়ে তোলার ক্ষমতা থেকে বোঝা যায়। এই পাঠে কয়েকটি গল্প সংকেত আকারে দেওয়া আছে। প্রদত্ত সংকেতের ভিত্তিতে গল্প গড়ে তোলার জন্য আপনার মনে গল্পের পুরো এবং স্পষ্ট ছবি সঠিকভাবে সাজিয়ে নেওয়া উচিত। সংকেত শুধু গল্পের একটি কঙ্কাল মাত্র। আপনার কাজ সেই কঙ্কালকে অস্থি মজ্জাসহ সুসজ্জিত করে তাতে প্রাণ প্রতিষ্ঠা করা।

এই পাঠে পূর্ণরূপ সহ দুটি গল্পের সংকেত দেওয়া আছে।

গল্প লেখা শু করার আগে নিম্নলিখিত প্রয়োজনীয় বিষয়গুলি লক্ষ্য ক ন ঃ

ক) সংকেতগুলি মনোযোগ দিয়ে পড়ে গল্পের কাঠামো বোঝার চেষ্টা ক ন।

খ) প্রস্তুত গল্পটি পড়ে বাদ যাওয়া সংকেতগুলি রেখাঙ্কিত ক ন।

গ) প্রয়োজন অনুসারে প্রদত্ত শব্দাবলী দেখুন।

ঘ) (i) পাঠের প্রদত্ত নমুনা গল্পের অনুকরণ না করে সংকেতগুলির সাহায্যে নিজের ভাষায় গল্পটি লেখার চেষ্টা ক ন। গল্পটিকে আরও বেশী যথার্থ এবং স্বাভাবিক রূপ দেওয়ার জন্য প্রয়োজন অনুসারে বার্তালাপ শৈলী ব্যবহর করা যেতে পারে।

(ii) ঘটনার পারম্পর্য সম্পর্কে বিশেষ সতর্ক থাকবেন। মনে রাখবেন সংকেতের মধ্যেই ঘটনার পারম্পর্য থাকে।

(iii) প্রদত্ত সংকেতগুলি এমনভাবে পরস্পর সম্পর্ক যুক্ত হবে যাতে গল্পটি যেভাবেই লেখা হোক না কেন তা যেন একটি পরিপূর্ণ গল্প হয়ে ওঠে।

(iv) গল্পের বাক্যগুলি ব্যাকরণগত ভাবে শুদ্ধ হবে এবং আপনার ব্যবহৃত ভাষা হবে সাবলীল।

ঙ) পাঠের প্রদত্ত নমুনা গল্পের সঙ্গে আপনার গল্প মিলিয়ে নিন। মনে রাখবেন আপনার প্রকাশ ভঙ্গি এবং উপস্থাপনা আলাদা হতে পারে কিন্তু গল্পে যেন প্রদত্ত সংকেতগুলি যথাযথ ভাবে ব্যবহৃত হয়।

চ) লিখিত গল্পের সুন্দর একটি শীর্ষক দিন।

নীচে দেওয়া গল্পের সংকেতগুলি পড়ুন :-

2.1 उदाहरण–1

एक किसान ..... बड़ा परिवार ..... चार बेटे ..... आपस में झगड़ना .. .. किसान उदास ..... एक विचार ..... जंगल जाना ..... लकड़ियों का गट्ठर ..... एक-एक लकड़ी ..... बेटों से तुड़वाना ..... आसानी से तोड़ना .... फिर गट्ठर तुड़वाना ..... सबका असमर्थ होना ..... किसान का समझाना .... एकता में बल।

पल्लवन

एक किसान था । उसके परिवार में पत्नी और एक बेटी के अलावा चार बेटे भी थे । उसके बेटे छोटी-छोटी बातों पर आपस में लड़ाई-झगड़ा करते थे। इस कारण किसान बहुत उदास रहता था । उसने अपने बेटों को कई बार समझाया किंतु उनका लड़ना-झगड़ना कम नहीं हुआ । एक दिन किसान के मन में एक विचार आया । वह कुल्हाड़ी लेकर जंगल गया । वहाँ उसने कुछ लकड़ियाँ तोड़ीं । लकड़ियों का गट्ठर बनाकर वह घर ले आया । उसने अपने बेटों को बुलाया और कहा, "उस गट्ठर में से एक-एक लकड़ी लो और उसे तोड़ो ।" बेटों ने एक-एक लकड़ी ली और आसानी से तोड़ डाली । तब किसान ने उनसे कहा, "अब इस पूरे गट्ठर को तोड़ो।" सब ने जोर लगाया किंतु उस गट्ठर को तोड़ने में असमर्थ रहे। किसान ने बेटों को समझाया, "अब तो तुम समझ गए न ? अकेले-अकेले रहे तो कोई भी तुम्हें नुकसान पहुँचा सकता है । यदि मिलजुलकर रहोगे तो कोई तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं पाएगा। क्योंकि एकता में बल होता है ।"

4.2 उदाहरण–2

जंगल में शेर ..... जानवरों को मारकर खाना ..... जानवर परेशान ..... सबका पंचायत बुलाना ..... विचार-विमर्श करना ..... निर्णय लेना ..... बारी-बारी से शेर का भोजन बनना ..... शेर से निर्णय मानने का अनुरोध करना ..... खरगोश

की बारी ..... देर से पहुँचना ..... शेर का नाराज होना ..... खरगोश द्वारा झूठी कहानी सुनाना ..... पहले दूसरे शेर से निबटना ..... कुएँ में परछाईं देखना ..... शेर का कुएँ में छलाँग लगाना।

पल्लवन

एक जंगल में एक शेर रहता था । वह जब-तब जंगल के अन्य जानवरों पर हमला करता, उन्हें मार देता। इस कारण सभी जानवर बहुत परेशान थे । एक दिन सभी जानवरों ने पंचायत बुलाई । इस पंचायत में लोमड़ी, भालू, हाथी, हिरन, भैंसा, भेड़िया, जंगली सुअर, बंदर, खरगोश आदि एकत्रित हुए । इस समस्या पर सभी ने विचार-विमर्श किया ।

सभी ने मिलकर यह निर्णय लिया कि प्रति दिन शेर के पास एक जानवर सवेरे-सवेरे जाएगा जिसे खाकर शेर अपनी भूख शांत कर लिया करेगा । सबने शेर से यह निर्णय मान लेने का अनुरोध किया । इस प्रकार प्रतिदिन शेर के पास एक-एक जानवर बारी-बारी से जाने लगा। एक दिन शेर के पास जाने की बारी एक खरगोश की थी। वह जानबूझकर शेर के पास देर से पहुँचा । शेर उस पर बहुत नाराज हुआ । तब खरगोश ने शेर को एक झूठी कहानी सुनाई । उसने बताया कि वह तो सवेरे-सवेरे आ ही रहा था । रास्ते में एक दूसरे शेर ने उसे मारने की कोशिश की । तब खरगोश ने उसे बताया कि वह उसे नहीं मारे । यदि मार दिया तो हमारे शेर राजा बहुत नाराज हो जाएंगे और आपको छोड़ेंगे नहीं। दूसरे शेर ने खरगोश से कहा कि मैं ही इस जंगल का राजा हूँ और सबसे बलवान हूँ । तुम्हारे राजा मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ पाएंगे । यह सुनकर शेर को बहुत गुस्सा आया। उसने दहाड़ मारकर कहा, "ठीक है, तुम्हें तो मैं बाद में खाऊँगा । पहले मुझे उस दुष्ट शेर के पास ले चलो जो अपने आपको इस जंगल का राजा कहता है ।" खरगोश उसे एक कुएँ के पास ले गया और कहने लगा, "राजन वह दुष्ट शेर इसी कुएँ में छिपा बैठा है ।" शेर ने क्रोधित होकर कुएँ में झाँककर देखा। कुएँ में उसे अपनी परछाईं दिखाई दी । उसे दूसरा शेर समझकर शेर ने कुएँ में छलाँग लगा दी और मारा गया । जंगल के सभी जानवर खरगोश की चतुराई के कारण सुख से रहने लगे ।

— * —

सत्यमेव जयते

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग
পত্রাচার পাঠ্যক্রম বিভাগ
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
কেন্দ্রীয় হিন্দী নিদেশালয়

हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम (बांग्ला माध्यम)
হিন্দী ডিপ্লোমা পাঠ্যক্রম (বাংলা মাধ্যম)

उत्तर पत्र 1-4 **উত্তরপত্র 1-4**

उत्तरपत्र प्राप्ति तिथि { **छात्र / छात्री** : .....
নিদেশালয় : .....

प्राप्तांक **প্রাপ্তাংক**	**1**	..... / 20	**2**	..... / 20	**3**	..... / 20	**4**	..... / 20

आमादेर सङ्गे पत्राचारेर जन्य सर्वदा कोड सह निजेर रोल नं लिखुन

छात्र/छात्री निजेदेर कोड सह रोल नं एवं ठिकाना नीचे लिखुन

रोल नं /
রোল নম্বর

छात्र की मातृभाषा
শিক্ষার্থীর মাতৃভাষা .....

कु./श्रीमती/श्री / কু/শ্রীমতী/শ্রী .....

पता / ठिकाना .....

.....

.....

..... **पिन / PIN**

मूल्यांकन के लिए उत्तर पत्र इस पते पर भेजें:	**মূল্যায়নের জন্য উত্তরপত্র নিম্নলিখিত ঠিকানায় পাঠাবেন :**
उप निदेशक पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग केंद्रीय हिंदी निदेशालय पश्चिमी खंड-VII रामकृष्णपुरम नई दिल्ली-110066 (भारत)	The Deputy Director Dept. of Correspondence Courses Central Hindi Directorate West Block VII Rama Krishna Puram New Delhi - 110066 [INDIA]

उत्तरपत्रे उत्तर लेखार आगे पाठ सयत्ने पड़ुन

प्रश्न : 1. सही उत्तर पर (✓) निशान लगाइए ।

(क) ब्रजभूषण जी की पत्नी क्या करती हैं ?

(1) प्राध्यापिका हैं । ☐

(2) मशहूर वकील हैं । ☐

(3) घरेलू महिला हैं । ☐

(4) पायलट हैं । ☐

(ख) अधेड़ सज्जन कहाँ टहलने जाते थे ?

(1) करोल बाग टहलने जाते थे । ☐

(2) लोधी रोड टहलने जाते थे । ☐

(3) इंडिया गेट टहलने जाते थे । ☐

(4) कनाट प्लेस टहलने जाते थे । ☐

(ग) डॉ. ऋषि कुमार के बच्चे कहाँ रहते हैं ?

(1) दिल्ली ☐

(2) मुंबई ☐

(3) विदेश ☐

(4) लखनऊ ☐

(घ) रमेश ने कहाँ घूमने का कार्यक्रम बनाया ?

(1) शिमला ☐

(2) राजस्थान ☐

(3) केरल ☐

(4) इलाहाबाद ☐

(ङ) ब्रजभूषण और निर्मला होटल में ठहरे थे क्योंकि

(1) धर्मशाला में जगह नहीं मिली थी । ☐

(2) दोस्त ने अपने यहाँ नहीं ठहराया था । ☐

(3) उनकी ट्रेन लेट हो गई थी । ☐

(4) उनकी तबीयत खराब हो गई थी । ☐

प्रश्न : 2. नमूने के अनुसार सही जोड़े मिलाइए ।

(क)	(ख)
(1) सुंदर नगर में	एक मशहूर वकील हैं ।
(2) ब्रजभूषण इलाहाबाद के	इनका अपना क्लीनिक है ।
(3) पता चला कि वे लोग	घूमने का कार्यक्रम बनाया ।
(4) उसने राजस्थान	होटल में ठहरे हैं ।
(5) आजकल वकालत में	टूर पर जा रहे हैं ।
(6) अगली बार हम	और निर्मला जी आए हैं ।
(7) इलाहाबाद से ब्रजभूषण जी	आपके यहाँ ही ठहरेंगे ।
(8) हम लोग राजस्थान के	कोई मजा नहीं रहा ।

प्रश्न : 3. 'आइए, इनसे मिलें' पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

(1) डॉ. ऋषि कुमार का परिचय तीन वाक्यों मे दीजिए ।

.....

.....

.....

.....

.....

(2) ब्रजभूषण जी कौन है ? वे कहाँ रहते हैं ?

.....

.....

.....

(3) डॉ. ऋषि कुमार स्टेशन क्यों नहीं गए ?

.....

.....

.....

(4) डॉ. ऋषि कुमार और ब्रजभूषण जी की दोस्ती कैसे हुई ?

.....

.....

.....

(5) डॉ. ऋषि कुमार राजस्थान घूमने क्यों नहीं जाना चाहते थे ?

.....

.....

.....

प्रश्न : 4. निम्नलिखित शब्दों के हिंदी समानार्थक शब्द लिखिए :–

(1) मित्र ..... (4) सुबह .....

(2) अतिथि ..... (5) मुलाकात .....

(3) प्रसिद्ध ..... (6) रात्रि .....

प्रश्न : 5. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए :–

मेरे गाँव / शहर का नाम ..... है ।

यह ..... राज्य के ..... जिले में बसा है ।

यहाँ ..... भाषा बोली जाती है ।

यहाँ के प्रमुख त्योहार हैं ..... और ..... ।

हम अपने गाँव / शहर को स्वच्छ ..... हैं ।

मुझे अपना गाँव / शहर बहुत ..... लगता है ।

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

   ক) বানান

   খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

   গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

प्रश्न : 1. नमूने के अनुसार वाक्यों को बदलिए ।

नमूना : खबर मिलती और मैं स्टेशन न आता ?

खबर मिलती तो मैं स्टेशन जरूर आता ।

(1) मोहन बुलाता और राधा न जाती ?

....

(2) रमेश कहता और ब्रजभूषण न मानता ?

....

(3) अवसर मिलता और हम राजस्थान न जाते ?

....

(4) मेरे पास रुपए होते और आपको न देता ?

....

प्रश्न : 2. नमूने के अनुसार कोष्ठक में दिए शब्दों के सही रूप लगाकर वाक्यों को पूरा कीजिए?

नमूना : वकील साहब टैक्सी से .... (उतरना)

वकील साहब टैक्सी से उतरे ।

(1) डॉक्टर को ब्रजभूषण जी के आने की खबर नहीं .... । (मिलना)

(2) दो मिनट, भाई साहब मैं अभी .... । (आना)

(3) रमेश ब्रजभूषण जी से .... । (बोलना)

(4) डॉ. कुमार की प्रैक्टिस अच्छी .... । (चलना)

(5) सभा ठीक समय पर शुरू .... । (होना)

प्रश्न : 3. सही परसर्ग (ने/को) लगाकर पूरा कीजिए ।

नमूना : डॉ. कुमार .... अभी तक चिट्ठी नहीं मिली ।

डॉ. कुमार को अभी तक चिट्ठी नहीं मिली ।

(1) रमेश .... डॉ. कुमार से क्या कहा ?

(2) मैं ..... भी राजस्थान नहीं देखा है ।

(3) ब्रजभूषण ..... डॉ. कुमार का पता मालूम नहीं था ।

(4) आप ..... अच्छा नहीं किया ।

प्रश्न : 4. अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

(1) खबर .....

(2) मुलाकात .....

(3) विश्वास .....

(4) स्वागत करना .....

(5) मान लेना .....

प्रश्न : 5. आपके भाई का दोस्त अपनी बहन की शादी में आपको सपरिवार आमंत्रित करने आया है। उस अवसर के लिए एक वार्तालाप तैयार कीजिए ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

ক) বানান

খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

प्रश्न : 1. 'राजस्थान की सैर' पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–

(क) कोटा शहर क्यों प्रसिद्ध है ?

....

....

(ख) बढ़ोली का कौन–सा मंदिर देखने लायक है ?

....

....

(ग) चंबल नदी दक्षिण से किस दिशा में बहती है ?

....

....

(घ) हरावती क्षेत्र के आसपास के शहरों में कौन–सा शहर बहुत प्रसिद्ध है ?

....

....

(ङ) मांडवा के संग्रहालय के बारे में दो वाक्य लिखिए ।

....

....

....

....

(च) रणथंभौर का किला किसने बनवाया था ?

....

....

(छ) बढ़ोली के सुंदर महल किन राजाओं ने बनवाए ?

.....

.....

प्रश्न : 2. निम्नलिखित शब्दों / वाक्यांशों का हिंदी वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

1. कार्यक्रम .....

.....

2. ऐतिहासिक .....

.....

3. प्रसिद्ध .....

.....

4. चाय-वाय .....

.....

5. देखते ही बनते हैं .....

.....

प्रश्न : 3. नमूने के अनुसार वाक्यों को बदलिए :-

नमूना : उनका प्रोग्राम बदल गया क्या ?

कहीं उनका प्रोग्राम तो नहीं बदल गया ?

(क) मैनेजर मुंबई चले गए क्या ?

.....

(ख) उनकी गाड़ी रास्ते में रुक गई क्या ?

.....

(ग) कैशियर ने अपनी छुट्टी बढ़ा ली क्या ?

.....

(घ) आज रात को बारिश होगी क्या ?

.....

प्रश्न : 4. कोष्ठक में दिए शब्दों की सहायता से नमूने के अनुसार वाक्यों को पूरा कीजिए ।

नमूनाः स्वेटर पहन लो नहीं तो ..... **ठंड लग जाएगी** .....। (ठंड)

परीक्षा की तैयारी परिश्रम से करो नहीं तो ..... (असफल)

घाव पर पट्टी बांधते रहें नहीं तो ..... (भरना/ठीक होना)

सड़क पर सावधानी से चलो नहीं तो ..... (दुर्घटना)

स्टेशन समय पर पहुँचो नहीं तो ..... (गाड़ी छूटना)

छाता लेकर बाहर जाओ नहीं तो ..... (भीगना)

प्रश्न : 5. किसी एक ऐतिहासिक जगह का वर्णन कीजिए जिसे आप देखने गए हों ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

ক) বানান

খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

पाठ 4 }: मांडवा – रेगिस्तान का हीरा
पाठ 4

उत्तर पत्र }4
উত্তরপত্র

प्रश्न : 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्यों में दीजिए :-

(क) रमेश कुछ दिनों पहले कहाँ गया था ?

....

....

(ख) मांडवा शहर को किसने बसाया था ?

....

....

(ग) मांडवा की कौन-सी वस्तुएँ दर्शकों का मन मोह लेती हैं ?

....

....

(घ) मांडवा में स्थित संग्रहालय का क्या नाम है ?

....

....

(ङ) वे लोग मांडवा क्यों नहीं गए ?

....

....

प्रश्न : 2. निम्नलिखित शब्दों के हिंदी पर्याय लिखें :-

(क) মরুভূমি ....

(খ) মূর্তি ....

(গ) পর্যটক ....

(ঘ) ব্যবসায়ী ....

(ङ) উট ....

(च) যাদুঘর ....

(छ) মুদ্রা ....

(ज) শিল্পীসুলভ ....

(झ) মখমল ....

(ञ) মধ্য / কেন্দ্র ....

प्रश्न : 3. निम्नलिखित वाक्यों को नमूने के अनुसार बदलिए :–

नमूना : बारिश आती ही होगी ।

बारिश आने ही वाली है ।

(क) मेरा भाई स्कूल से लौटता ही होगा ।

....

(ख) कार्यक्रम शुरू होता ही होगा ।

....

(ग) आखिरी मेट्रो ट्रेन आती ही होगी ।

....

(घ) महेश चार बजे आता ही होगा ।

....

प्रश्न : 4. निम्नलिखित वाक्यों को नमूने के अनुसार प्रेरणार्थक रूप में बदलिए :–

(কোন কাজ কর্তা না করে যদি অন্য কাউকে দিয়ে করায় তাকে নিজস্ব ক্রিয়া বলে। প্রত্যেক বাক্যে কোষ্ঠকে কাজ করা ব্যক্তির উল্লেখ করা হয়েছে।)

नमूना : अधिकारी ने चिट्ठियों का जवाब लिखा । (स्टेनो)

अधिकारी ने स्टेनो से चिट्ठियों का जवाब लिखवाया ।

(क) हम्मीर देव ने यह किला बनाया । (बहुत से कारीगर)

....

(ख) मंत्री जी ने इस समारोह के लिए भाषण लिखा । (सचिव)

.....

(ग) पिता जी ने महेश को गणित पढ़ाया । (मास्टर जी)

.....

(घ) मैंने कल आपका काम कर दिया । (राजेश)

.....

प्रश्न : 5. मांडवा के बारे में एक अनुच्छेद लिखिए ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

ক) বানান

খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग
পত্রাচার পাঠ্যক্রম বিভাগ
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
কেন্দ্রীয় হিন্দী নিদেশালয়

हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम (बांग्ला माध्यम)
হিন্দী ডিপ্লোমা পাঠ্যক্রম (বাংলা মাধ্যম)

उत्तर पत्र 5-8 **উত্তরপত্র 5-8**

উত্তরপত্র প্রাপ্তির তিথি
- ছাত্র / ছাত্রী : ....
- নিদেশালয় : ....

प्राप्तांक প্রাপ্তাংক	5	.... / 20	6	.... / 20	7	.... / 20	8	.... / 20

আমাদের সঙ্গে পত্রাচারের জন্য সর্বদা কোড সহ নিজের রোল নং লিখুন

ছাত্র/ছাত্রী নিজেদের কোড সহ রোল নং এবং ঠিকানা নীচে লিখুন

रोल नं / রোল নম্বর [ ] [ ]

छात्र की मातृभाषा / শিক্ষার্থীর মাতৃভাষা ....

कु./श्रीमती/श्री / কু/শ্রীমতী/শ্রী ....

पता / ঠিকানা ....

....

....

.... पिन / PIN [ ] [ ] [ ] [ ] [ ] [ ]

मूल्यांकन के लिए उत्तर पत्र इस पते पर भेजें:	মূল্যায়নের জন্য উত্তরপত্র নিম্নলিখিত ঠিকানায় পাঠাবেন :
उप निदेशक पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग केंद्रीय हिंदी निदेशालय पश्चिमी खंड-VII रामकृष्णपुरम नई दिल्ली-110066 (भारत)	The Deputy Director Dept. of Correspondence Courses Central Hindi Directorate West Block VII Rama Krishna Puram New Delhi - 110066 [INDIA]

উত্তরপত্রে উত্তর লেখার আগে পাঠ সযত্নে পড়ুন

प्रश्न : 1. बाजार में प्रयोग की जाने वाली सही अभिव्यक्तियों के साथ निम्नलिखित वार्तालाप पूरा कीजिए :

ग्राहक : ....

दुकानदार : बीस रुपए किलो ।

ग्राहक : ....

दुकानदार : भाव कम नहीं होगा ।

ग्राहक : ....

दुकानदार : टमाटर लेंगे ?

ग्राहक : ....

दुकानदार : चालीस रुपये किलो ।

ग्राहक : ....

दुकानदार : अदरक दूँ क्या ?

ग्राहक : ....

दुकानदार : दस रुपये की सौ ग्राम ।

ग्राहक : ....

दुकानदार : पनीर भी लेंगे क्या ?

ग्राहक : नहीं पनीर नहीं चाहिए । ये लो पैसे ।

प्रश्न : 2. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कोष्ठक में दिए गए शब्दों की सहायता से कीजिए :–

1. আমাদের এলাকায় প্রত্যেক রবিবার বাজার বসে। (लगना)

....

2. আমাদের দোকানে একদর, দরদাম করবেন না। (मोल–भाव)

....

3. গরমের ছুটিতে কোথায় বেড়িয়ে এলেন ? (গ্রীষ্ম অবকাশ)

.....

4. এখানে নতুন জিনিস কী পাওয়া যায়? (উপলব্ধ)

.....

5. আমরা যে তরিতরকারী বিক্রী করি তা শুধু সস্তাই নয় তাজাও। (সব্জিয়াঁ)

.....

প্রশ্ন : 3. নিম্নলিখিত के विलोम शब्द लिखिए :-

(1) सुंदर ..... (6) टूटना .....

(2) सस्ता ..... (7) नीचे .....

(3) नई ..... (8) लेना .....

(4) ठीक ..... (9) गाँव .....

(5) हल्का .....

प्रश्न : 4. कोष्ठक में दिए गए शब्दों की सहायता से विभिन्न अवसरों के वार्तालाप हिंदी में तैयार कीजिए ।

(क) ডাক্তারখানায় একজন রুগী

তবিয়ত (স্বাস্থ্য), সমস্যা (সমস্যা), বুখার (জ্বর), দর্দ (ব্যথা), জুকাম (সর্দি), খাঁসী (কাশি), দবা (ওষুধ), খুরাক (খোরাক), গোলী (ট্যাবলেট), সিরপ (সিরাপ), সিরদর্দ (মাথাব্যথা), পর্চী (প্রেসক্রিপশন).

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(খ) ক্রিকেট ম্যাচ

বল্লেবাজী (ব্যাটিং), গেঁদবাজী (বোলিং), বল্লেবাজ (ব্যাটসম্যান), গেঁদবাজ (বোলার), চৌকা (চার), ছক্কা (ছক্কা), পগবাধা (এল বি ডাবল্যু), খিলাড়ী (খেলোয়াড়), দর্শক (দর্শক), মৈদান (ময়দান), সীমারেখা (সীমারেখা), গিল্লী (স্ট্যাম্প).

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

ক) বানান

খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

पाठ 6
পাঠ 6 }: बस टिकेट

उत्तर पत्र
উত্তরপত্র }6

प्रश्न : 1. पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :–

(क) कंडक्टर ने क्यों कहा कि एक-एक करके आइए ?

....

....

....

....

(ख) मनोहर ने लाला जी पर क्या-क्या आरोप लगाए ?

....

....

....

....

(ग) मनोहर के अनुसार बाबू जी दफ्तर में क्या काम करते हैं ?

....

....

....

....

(घ) दिल्ली की बसों में बिना टिकट सफर करने पर कितना जुर्माना हो सकता है ?

....

....

....

....

(ङ) जब बाबू जी गवाही देने के लिए तैयार नहीं हुए तो लाला जी ने क्या कहा ?

.....

.....

.....

.....

(च) कंडक्टर से क्या गलती हुई जिससे सबको थानेदार के पास जाना पड़ा ?

.....

.....

.....

.....

प्रश्न : 2. नीचे के वाक्यों में भविष्यत् काल की क्रियाओं को नमूने के अनुसार संभावनार्थक में बदलें ।

नमूना : आप कल से यहाँ नहीं बैठेंगे ।

आप कल से यहाँ न बैठें ।

(क) आप बिना बुलाए अंदर नहीं आएँगे ।

.....

(ख) मोहन अब देर से नहीं आएगा ।

.....

(ग) वे लोग अभी कहीं नहीं जाएँगे ।

.....

(घ) सुबह छह बजे के बाद बत्तियाँ जलती नहीं रहेंगी ।

.....

(ङ) क्या आप लोग सुबह की गाड़ी से नहीं जाएँगे ?

.....

प्रश्न : 3. नमूने के आधार पर नीचे दिए सुझावों के जवाब दें । केवल मुख्य क्रियाओं को ही रहने दें ।

नमूना : तुम ही यहाँ रुक जाओ ।

मैं यहाँ क्यों रुकूँ ?

(क) तुम ही रमेश की बात मान लो ।

.....

(ख) आप ही दस रुपए दे दें ।

.....

(ग) तुम लोग ही समझौता कर लो ।

.....

(घ) आप ही त्यागपत्र (পদত্যাগপত্র) दे दीजिए ।

.....

(ङ) आप ही चुप हो जाइए ।

.....

प्रश्न : 4. नमूने के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए ।

नमूना : ওদের কাল আসতে বলুন।
उनसे कहें कि वे कल आएँ ।

(क) ওকে / ওনাকে বিমান বন্দর যেতে বলুন।

.....

(ख) ওদের / ওনাদের বসতে বলুন।

.....

(ग) ওদের যাওয়ার জন্য তৈরী হতে বলুন।

.....

(घ) একসপ্তাহের মধ্যে ওদের কাজ শেষ করতে বলুন।

.....

(ङ) আমি কি তাড়াতাড়ি বই ফেরৎ দেওয়ার জন্য তাকে চিঠি লিখব?

.....

(च) আমি কি তাকে আমার সাথে যেতে বলব?

.....

प्रश्न : 5. निम्नलिखित अभिव्यक्तियों / वाक्यांशों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए । आप एक से अधिक वाक्यों का प्रयोग कर सकते हैं ।

(क) पोल खोलना

.....

.....

.....

.....

(ख) लीडरी झाड़ना

.....

.....

.....

.....

(ग) आरोप लगाना

.....

.....

.....

.....

(घ) बुरा-भला कहना

.....

.....

.....

.....

(ङ) जबान संभालकर बात करना

.....

.....

.....

.....

मन्तव्य ও निर्देश

1. উন্নতি প্রয়োজন

ক) বানান

খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

प्रश्न : 1. नमूने के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों को बदलिए ।

नमूना : महात्मा गांधी का जन्म पोरबंदर में हुआ।

महात्मा गांधी पोरबंदर में पैदा हुए।

(i) मेरा जन्म इंगलैंड में हुआ था।

....

(ii) माँ कहती थी कि मेरा जन्म कश्मीर में हुआ था।

....

(iii) उसने भविष्यवाणी की कि मथुरा में एक महापुरुष का जन्म होगा।

....

(iv) हर वर्ष भारत में लाखों बच्चों का जन्म होता है।

....

प्रश्न : 2. (क) निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए । (हिंदी वाक्यों में 'लगना' क्रियापद का प्रयोग घ्यान में रखें ।)

(i) আপনার সঙ্গে তার কি সম্পর্ক।

....

(ii) মোহন ভালো ছেলে বলেই মনে হয়।

....

(iii) বাড়ি তৈরী করতে তার কত সময় লেগেছে।

....

(iv) তোমার কি এখন ক্ষিদে পায় নি?

....

(v) আমার মনে হয় ওরা আসতে পারবে না।

....

(vi) আমার বোন গত মাস থেকে হিন্দী শেখা শুরু করেছে।

.....

(ख) **कोष्ठक में दिए गए बांग्ला वाक्यांशों के हिंदी पर्यायों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।**

(i) ..... पंडित जी पानी नहीं पीते। (যাত্রার সময়)

(ii) प्रोग्राम ..... मंत्री जी को दस बजे आना था। (অনুসারে)

(iii) ..... दिल्ली में आज पानी बरसे। (হতে পারে)

(iv) गर्मियों में ए.सी. .....। (ব্যবহার উপযোগী)

(v) मेरठ के नौचंदी मेले में ..... दुकानें लगती हैं। (বিভিন্ন ধরণের)

(vi) इस दुकान में कपड़ा .....। (রং করা হয়)

प्रश्न : 3. नमूने के अनुसार 'कोई' शब्द की सहायता से दो वाक्यों को जोड़िए।

नमूना: एक लंबा कालर चाहता है। दूसरा चौड़ा कालर चाहता है।
कोई लंबा कालर चाहता है तो कोई चौड़ा।

(i) एक नैनीताल जाना चाहती है। दूसरी कन्याकुमारी जाना चाहती है।

.....

(ii) एक खाना खाना चाहता है। दूसरा फिल्म देखना चाहता है।

.....

(iii) एक सर्दी को पसंद करता है। दूसरा गर्मी को पसंद करता है।

.....

(iv) एक बहुत ज्यादा बातें करता है। दूसरा बिल्कुल नहीं बोलता है।

.....

प्रश्न : 4 निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त प्रत्यय का प्रयोग करते हुए शब्द बनाइए।

(i) धन विशेषण রূপে .....

(ii) प्रेम विशेषण রূপে .....

(iii) चतुर विशेष्य रूपे .....

(iv) महँगा विशेष्य रूपे .....

(v) सरकार विशेषण रूपे .....

(vi) शहर विशेषण रूपे .....

प्रश्न : 4. 'मैं कमीज हूँ' पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

(i) कमीज के पूर्वज कौन रहे होंगे ?

.....

(ii) आदमी के हाथ कौन-सी रुई लगी ?

.....

(iii) सूत कातने के लिए आदमी ने किसका उपयोग किया ?

.....

(iv) कमीज का जन्म कहाँ हुआ था ?

.....

(v) दिल्ली के व्यापारी ने कमीज को कहाँ रखा ?

.....

(vi) दर्जी के यहाँ कमीज ने क्या देखा ?

.....

(vii) इलाहाबाद के मशहूर वकील ब्रजभूषण ने कमीज किसको दे दी ?

.....

(viii) वकील साहब जब हड़बड़ाकर उठे तो उन्होंने क्या देखा ?

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

ক) বানান

খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

प्रश्न : 1. आप हाल ही में कहाँ घूमने गए थे ? इस बारे में अपने मित्र को एक पत्र लिखिए ।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

प्रश्न : 2. अपनी बहन के विवाह का एक निमंत्रण पत्र तैयार कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न : 3. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए :–

উত্তরপত্র .....

আন্তরিক .....

সম্প্রতি .....

উত্তরের অপেক্ষায় .....

নিম্নে উল্লিখিত .....

পত্রাচার .....

প্রসঙ্গে .....

শুভেচ্ছাসহ .....

অনুসন্ধান .....

আবশ্যিক .....

प्रश्न : 4. कृपया निम्नलिखित पत्र के खाली स्थानों को उपयुक्त शब्दों से भरिए।

सेवा में

सहायक निदेशक
पत्राचार पाठयक्रम विभाग
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
पश्चिमी खंड – VII, रामकृष्णपुरम
नई दिल्ली – 110066

मैं आपके यहाँ ..... पाठयक्रम की छात्रा हूँ। मेरा अनुक्रमांक ..... है।

खेद है कि ..... के कारण मैं भरे हुए उत्तर पत्र (संख्या .....) समय पर आपके पास नहीं भेज .....। कृपया इनका मूल्यांकन कराकर शीघ्र ही मेरे पास ..... का कष्ट करें।

भवदीया

.....

प्रश्न : 5. (क) देश के कई भागों में फैल रहे डेंगू और चिकनगुनिया के रोगों से बचाव हेतु उपाय प्रकाशित करने के बारे में संपादक के नाम पत्र लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(ख) अपने इलाके में बढ़ती गंदगी और मच्छरों से बचाव के लिए नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

   ক) বানান

   খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

   গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

सत्यमेव जयते

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग
পত্রাচার পাঠ্যক্রম বিভাগ
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
কেন্দ্রীয় হিন্দী নিদেশালয়

हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम (बांग्ला माध्यम)
হিন্দী ডিপ্লোমা পাঠ্যক্রম (বাংলা মাধ্যম)

उत्तर पत्र 9-12 **উত্তরপত্র 9-12**

উত্তরপত্র প্রাপ্তির তিথি { ছাত্র / ছাত্রী : .... ; নিদেশালয় : ....

प्राप्तांक প্রাপ্তাংক	9	.... / 20	10	.... / 20	11	.... / 20	12	.... / 20

আমাদের সঙ্গে পত্রাচারের জন্য সর্বদা কোড সহ নিজের রোল নং লিখুন

ছাত্র/ছাত্রী নিজেদের কোড সহ রোল নং এবং ঠিকানা নীচে লিখুন

रोल नं / রোল নম্বর [|]

छात्र की मातृभाषा / শিক্ষার্থীর মাতৃভাষা ....

कु./श्रीमती/श्री / কু/শ্রীমতী/শ্রী ....

पता / ঠিকানা ....

....

....

.... पिन / PIN [| | | | |]

मूल्यांकन के लिए उत्तर पत्र इस पते पर भेजें:	মূল্যায়নের জন্য উত্তরপত্র নিম্নলিখিত ঠিকানায় পাঠাবেন :
उप निदेशक पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग केंद्रीय हिंदी निदेशालय पश्चिमी खंड-VII रामकृष्णपुरम नई दिल्ली-110066 (भारत)	The Deputy Director Dept. of Correspondence Courses Central Hindi Directorate West Block VII Rama Krishna Puram New Delhi - 110066 [INDIA]

উত্তরপত্রে উত্তর লেখার আগে পাঠ সযত্নে পড়ুন

पाठ 9 / পাঠ 9 }: बड़े भाई साहब

उत्तर पत्र / উত্তরপত্র }9

प्रश्न : 1. निम्नलिखित में से सही उत्तर चुनकर लिखिए :–

(क) बड़े भाई साहब छोटे भाई से कितने साल बड़े थे ?

(1) पाँच साल (2) नौ साल (3) तीन साल

....

(ख) इस तरह अंग्रेजी पढ़ोगे तो जिंदगी भर पढ़ते रह जाओगे ! किसने कहा ?

(1) अध्यापक ने (2) मित्र ने (3) बड़े भाई साहब ने

....

(ग) "असली चीज तो बुद्धि का विकास है" बड़े भाई साहब ने क्यों कहा ?

(1) क्योंकि छोटा भाई पढ़ता नहीं था ।

(2) क्योंकि वे छोटे भाई को समझा रहे थे ।

(3) क्योंकि छोटा भाई पास होता जा रहा था ।

....

(घ) बड़े भाई साहब पतंग की डोर पकड़कर होस्टल की तरफ दौड़ पड़े क्योंकि ?

(1) वे पतंग अपने पास रखना चाहते थे ।

(2) उनके मन में पतंग उड़ाने की भावना जाग पड़ी ।

(3) वे अपने छोटे भाई को पतंग देना चाहते थे ।

....

प्रश्न : 2. निम्नलिखित अभिव्यक्तियों का वाक्यों में प्रयोग करें :–

(क) अमल करना

....

....

....

(ख) तलवार खींचना

.....

.....

.....

(ग) हँसी-खेल होना

.....

.....

.....

(घ) घाव पर नमक छिड़कना

.....

.....

.....

प्रश्न : 3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

(क) बड़े भाई साहब के तीन उपदेश कहानी से चुनकर लिखिए ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(ख) बड़े भाई साहब कभी कापी पर, कभी किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तस्वीरे क्यों बनाया करते थे ?

.....

.....

.....

.....

(ग) "टाइम टेबल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात ।" यह बात क्यों कही गई ?

.....

.....

.....

.....

(घ) अंग्रेजी पढ़ने के बारे में बड़े भाई साहब की क्या धारणा है ?

.....

.....

.....

.....

प्रश्न : 4. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए :–

(क) আমার দাদার বয়স চৌদ্দ বছর এবং আমার মাত্র নয় ছিল।

.....

(ख) তাঁর আদেশই আমার কাছে আইন ছিল।

.....

(ग) সময় পেলেই আমি দৌড়ে মাঠে চলে যেতাম।

.....

(घ) বাচ্চাদের সঙ্গে ঘুড়ি ওড়াতে তোমার লজ্জা করে না?

.....

(ङ) फेल करेও আমার খারাপ লাগে নি।

.....

প্রশ্ন : 5. পড়াই के साथ-साथ खेल-कूद क्यों जरूरी है ? पाठ के आधार पर तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

ক) বানান

খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

प्रश्न : 1. पाठ 'ऐसे-ऐसे' के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

(क) माँ मोहन के 'ऐसे-ऐसे' कहने पर क्यों घबरा रही थी ?

....

....

....

(ख) मोहन पर हींग, चूरन, पिपरमिंट का असर क्यों नहीं पड़ा ?

....

....

....

(ग) ऐसे कौन-कौन से बहाने होते हैं जिन्हें मास्टर जी एक ही बार में सुनकर समझ जाते हैं ? ऐसे कुछ बहानों के बारे में लिखो ।

....

....

....

(घ) वास्तव में मोहन को क्या बीमारी थी ?

....

....

....

प्रश्न : 2. निम्नलिखित के बारे में अपने विचार लिखिए :-

(क) मोहन के पिता ने वैद्य को 5/- रु. तथा डॉक्टर को 10/- रु. क्यों दिए ?

....

....

....

....

(ख) स्कूल के काम से बचने के लिए मोहन ने कई बार पेट में 'ऐसे-ऐसे' बहाने बनाए । मान लो एक बार उसे सचमुच पेट में दर्द हो गया और उस पर लोगों ने विश्वास नहीं किया, तब मोहन पर क्या बीतेगी ?

.....

.....

.....

.....

(ग) मान लो कि तुम मोहन की तबीयत पूछने जाते हो । तुम अपने और मोहन की बातचीत को संवाद के रूप में लिखो ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न : 3. (क) निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

(1) लोचा-लोचा फिरना

.....

.....

.....

(2) सफेद पड़ना

.....

.....

.....

(3) मुँह उतरना

.....

.....

.....

(4) भला-चंगा होना

.....

.....

.....

(ख) 'कैसा' के सही रूप का प्रयोग करते हुए पूरा कीजिए ।

(1) अब मोहन ..... है ?

(2) कमला स्कूल ..... जाएगी ?

(3) अब तबीयत ..... है ?

प्रश्न : 4. 'ऐसे-ऐसे' एकांकी का सार दस वाक्यों में लिखिए ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न : 5. मास्टर जी ने मोहन की बीमारी के बहाने को कैसे पकड़ा ? फिर उसे कैसे दूर किया ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

ক) বানান

খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

प्रश्न : 1. मान लीजिए कि आप (माधव) किसी स्कूल में भाषा शिक्षक पद के उम्मीदवार हैं। इंटरव्यू बोर्ड द्वारा पूछे गए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–

अध्यक्ष : आपका नाम

माधव : ....

अध्यक्ष : आप कहाँ से आए हैं ?

माधव : ....

अध्यक्ष : आपकी मातृभाषा क्या है ?

माधव : ....

अध्यक्ष : आपको मातृभाषा के अलावा और कौन सी भाषा आती है ?

माधव : ....

अध्यक्ष : एम.ए. आपने कहाँ से किया है ?

माधव : ....

अध्यक्ष : आजकल आप कहाँ काम करते हैं ?

माधव : ....

सदस्य : माधव जी, आपने बताया है कि एम.ए. में आपने अपनी मातृभाषा के साहित्य का अध्ययन किया है। अच्छा, यह बताइए कि आपके विचार से आपकी भाषा का सर्वश्रेष्ठ कवि कौन है ?

माधव : ....

सदस्य : उनकी किसी प्रसिद्ध कविता का नाम बताइए ।

माधव : ....

सदस्य : क्या आप उनकी कविता की दो–चार पंक्तियाँ सुना सकते हैं ?

माधव : ....

.....

.....

.....

सदस्य : इन पंक्तियों का अर्थ हिंदी में समझाइए।

माधव : .....

.....

.....

.....

सदस्य : अच्छा माधव जी, धन्यवाद

माधव : .....

प्रश्न : 2. पाठ के आधार पर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) दिवाकर किस पद के लिए इंटरव्यू देने आया था ?

.....

.....

.....

(ख) उसने किस विषय में कहाँ तक शिक्षा पाई थी ?

.....

.....

.....

(ग) 'रामचरितमानस' किस कवि की रचना है ?

.....

.....

.....

(घ) सूरदास ने किस भाषा में काव्य रचा है?

.....

.....

.....

(ङ) छायावाद के चार प्रमुख रचनाकारों के नाम बताइए।

.....

.....

.....

प्रश्न : 3. नमूने के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों को बदलिए रू.

नमूना : अशोक ने पत्र पढ़ा। (मैंने)

मैंने अशोक से पत्र पढ़वाया।

(क) राजू ने कमरा साफ किया (हम ने)

.....

(ख) लेखक ने नई कविता लिखी। (संपादक ने)

.....

(ग) कुली ने सामान उठाया। (लक्ष्मी ने)

.....

(घ) वकील ने नोटिस भेजा। (प्रमोद ने)

.....

(ङ) डॉक्टर ने कार निकाली। (पिता जी ने)

.....

(च) श्रीमती श्वेता ने बच्चों को पढ़ाया। (प्रिंसिपल ने)

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

   ক) বানান

   খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

   গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

पाठ 12
पाठ 12 }: तुम कब जाओगे, अतिथि

उत्तर पत्र
উত্তরপত্র }12

प्रश्न : 1. (क) पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए ।

(1) 'अतिथि देवता होता है' का क्या आशय है ?

....

....

....

....

(2) आप कैसा अतिथि बनना पसंद करेंगे ?

....

....

....

....

(3) जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन आए ?

....

....

....

....

(4) पति-पत्नी ने मेहमान का स्वागत कैसे किया ?

....

....

....

....

(ख) 'अकेलेपन की यात्रा' में शब्द अकेला के बाद 'पन' प्रत्यय जोड़ने पर अकेलापन शब्द बना है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के साथ पन प्रत्यय जोड़कर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :–

(1) मोटा

.....

.....

(2) छोटा

.....

.....

(3) गीला

.....

.....

(4) अनोखा

.....

.....

(5) लड़का

.....

.....

(ग) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो हिंदी पर्याय लिखिए :–

(1) चाँद : ....

(2) ऊष्मा : ....

(3) घर : ....

(4) पत्नी : ....

(घ) निम्नलिखित के विलोम शब्द लिखिए :–

(1) छोटा : .....

(2) आगमन : .....

(3) पुण्य : .....

(4) आखिरी : .....

प्रश्न : 2. आपके घर में अतिथि आते हैं तो आप कैसा अनुभव करते हैं? छह–सात वाक्यों में लिखिए ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न : 3. (क) 'चाहना' क्रिया की सहायता से दिए गए नमूने के अनुसार वाक्यों को पूरा करें ।

नमूना : क्या तुम कुछ खाना .....

क्या तुम कुछ खाना चाहते हो ?

(1) रमेश, क्या तुम वहाँ जाना .....

(2) क्या हम यह जानना .....

(3) क्या मैं यह कार्य जल्दी से पूरा करना .....

(4) क्या आप प्रेमचंद का उपन्यास पढ़ना .....

(5) क्या तुम रेडियो कार्यक्रम सुनना .....

(ख) दिए गए नमूने के अनुसार वाक्यों को पूरा करें ।

नमूना : शेखर कार चलाना ..... (सीखना)

शेखर कार चलाना सीख रहा है ।

(1) सीता क्रिकेट खेलना ..... (सीखना)

(2) राजेश अभी पढ़ना ..... (सीखना)

(3) मैं कंप्यूटर पर काम करना ..... (सीखना)

(4) वे बागवानी करना ..... (सीखना)

(5) आप सितार बजाना ..... (सीखना)

प्रश्न : 4. नीचे दिए वाक्यों को नमूने के अनुसार पूरा कीजिए ।

नमूना : तुम कब .....

तुम कब जाओगे ?

(1) गीता कब .....

(2) मैं कब .....

(3) वे कब .....

(4) हम कब .....

(5) अशोक कब .....

प्रश्न : 5. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए ।

1. हमने यह फिल्म देख चुके हैं ।

.....

2. घर की सफाई की काम हो चुकी है ।

.....

3. सभी लडकियाँ यहीं खाना खाएगा ।

.....

4. आप कहाँ जा रहे हो ?

.....

5. सूर्य कितने बजे उदय होगी ?

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

ক) বানান

খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग
পত্রাচার পাঠ্যক্রম বিভাগ
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
কেন্দ্রীয় হিন্দী নিদেশালয়

हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम (बांग्ला माध्यम)
হিন্দী ডিপ্লোমা পাঠ্যক্রম (বাংলা মাধ্যম)

उत्तर पत्र 13-16 **উত্তরপত্র 13-16**

উত্তরপত্র প্রাপ্তির তিথি
- ছাত্র / ছাত্রী : ....
- নিদেশালয় : ....

प्राप्तांक প্রাপ্তাংক	13	.... / 20	14	.... / 20	15	.... / 20	16	.... / 20

আমাদের সঙ্গে পত্রাচারের জন্য সর্বদা কোড সহ নিজের রোল নং লিখুন

ছাত্র/ছাত্রী নিজেদের কোড সহ রোল নং এবং ঠিকানা নীচে লিখুন

रोल नं / রোল নম্বর [ ] [ ]

छात्र की मातृभाषा / শিক্ষার্থীর মাতৃভাষা ....

कु./श्रीमती/श्री / কু/শ্রীমতী/শ্রী ....

पता / ঠিকানা ....

....

....

.... पिन / PIN [ ][ ][ ][ ][ ][ ]

मूल्यांकन के लिए उत्तर पत्र इस पते पर भेजें:	মূল্যায়নের জন্য উত্তরপত্র নিম্নলিখিত ঠিকানায় পাঠাবেন :
उप निदेशक पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग केंद्रीय हिंदी निदेशालय पश्चिमी खंड-VII रामकृष्णपुरम नई दिल्ली-110066 (भारत)	The Deputy Director Dept. of Correspondence Courses Central Hindi Directorate West Block VII Rama Krishna Puram New Delhi - 110066 [INDIA]

উত্তরপত্রে উত্তর লেখার আগে পাঠ সযত্নে পড়ুন

प्रश्न : 1. 'मेरा बचपन' पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए ।

(क) श्री सीता-राम का विवाह समारोह कहाँ मनाया जाता था ?

(i) राम तीर्थ तालाब के निकट ☐

(ii) राम तीर्थ तालाब के तट पर ☐

(iii) राम तीर्थ तालाब के बीच में ☐

(ख) नए शिक्षक ने रामानंद और अब्दुल को अलग-अलग बिठाया क्योंकि

(i) दोनों बातूनी थे । ☐

(ii) दोनों भिन्न धर्म के थे । ☐

(iii) दोनों ने शिक्षक से शिकायत की थी । ☐

(ग) श्री शिव सुब्रह्मण्य अय्यर ने दूसरी बार कलाम को घर पर बुलाया क्योंकि

(i) वे उनसे दोस्ती करना चाहते थे । ☐

(ii) पहली बार कलाम को उनका खाना पसंद नहीं आया था । ☐

(iii) वे उनकी हिचकिचाहट दूर करना चाहते थे । ☐

(घ) 'मौका तलाशना' का अर्थ है

(i) अवसर खोजना ☐

(ii) जल्द बाजी में रहना ☐

(iii) खोई हुई चीज़ ढूँढ़ना ☐

(ङ) ''परिवार में जितने लोग थे, उससे कहीं ज्यादा लोग हमारे यहाँ भोजन करते थे ।'' कथन का आशय है

(i) परिवार बहुत बड़ा था । ☐

(ii) भोजन में अन्य लोग भी शामिल होते थे । ☐

(iii) भोजन स्वादिष्ट बनता था । ☐

प्रश्न : 2. पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–

(क) कलाम के पिता का स्वभाव कैसा था ?

.....

.....

.....

.....

(ख) कलाम को विज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षक के बारे में तीन वाक्य लिखिए ।

.....

.....

.....

.....

(ग) कलाम के घर में बच्चों को सोते समय किस तरह की कहानियाँ सुनाई जाती थीं ?

.....

.....

.....

.....

(घ) राष्ट्रपति बनने के बाद डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के जीवन में उनके बचपन का क्या प्रभाव दिखा ?

.....

.....

.....

.....

(ङ) कलाम के बारे में उनके शिक्षक श्री शिव सुब्रह्मण्य अय्यर की क्या कामना थी ?

.....

.....

.....

.....

(च) इस पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

.....

.....

.....

.....

प्रश्न : 3. निम्नलिखित वाक्यांशों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :-

(1) बुरा लगना

.....

.....

(2) गहरी छाप पड़ना

.....

.....

(3) विष घोलना

.....

.....

(4) आमंत्रित करना

.....

.....

(5) उदास नज़र आना

.....

.....

(6) मौका तलाशना

.....

.....

प्रश्न : 4. निम्नलिखित शब्द–समूह के लिए प्रचलित एक शब्द लिखिए :–

(क) सप्ताह में एक बार होने वाला : .....

(ख) वर्ष में एक बार होने वाला : .....

(ग) हर रोज होने वाला : .....

(घ) महीने में एक बार होने वाला : .....

(ड.) पंद्रह दिनों में एक बार होने वाला : .....

प्रश्न : 5. समाज में व्याप्त रूढ़िवाद के विषय में पांच वाक्य लिखिए :–

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

   ক) বানান

   খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

   গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

पाठ 14
পাঠ 14 }: **कार्यालय में बातचीत**

उत्तर पत्र
উত্তরপত্র }14

प्रश्न : 1. 'कार्यालय में बातचीत' पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–

1. अनुभाग अधिकारी उपनिदेशक के कमरे में क्या लेकर गया था?

....

....

....

2. उपनिदेशक ने भवन निर्माण हेतु ऋण मंजूर करने से पहले क्या जानना चाहा था ?

....

....

....

3. श्रीमती खन्ना ने उपनिदेशक से किस लिए मुलाकात की ?

....

....

....

4. श्री गोपालन ने श्री बनर्जी को कैसा कार्यालय आदेश जारी करने के लिए कहा ?

....

....

....

5. श्रीमती खन्ना कहाँ से अपना स्थानांतरण चाहती थीं ?

....

....

....

प्रश्न : 2. निम्नलिखित शब्दों के हिंदी पर्याय दीजिए :-

(1) আকস্মিক ছুটি .....

(3) তাজা রসিদ .....

(3) ছোট সই .....

(4) কার্যালয় আদেশ .....

(5) সরাসরি নিয়োগ .....

(6) প্রতিনিধিত্ব / আবেদন .....

(7) বদলী .....

(8) বরিষ্ঠতা .....

(9) কর্মসংস্থান কেন্দ্র .....

(10) ব্যবস্থা .....

प्रश्न : 3. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी अनुवाद करें :-

(a) এই অনুভাগ থেকে আমি আমার বদলী চাই।

.....

(b) আপনার কর্মীবর্গ আলাদা।

.....

(c) অনুস্মারক তাড়াতাড়ি পাঠিয়ে দিন।

.....

(d) কার্যালয় আদেশ ইস্যু করুন।

.....

(e) উনি প্রশাসনিক ও প্রতিষ্ঠা শাখায় কাজ করেন।

.....

प्रश्न : 4. (a) तथा (b) पर दिए गए वाक्य साँचों के आधार पर तीन वाक्य बनाइए ।

(a) माना कि	मैं सहायक अनुभाग अधिकारी हूँ	मगर	मैंने एम.ए. पास किया है।
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

(b) जब	वे	दस्तावेज प्रस्तुत कर देंगी	तब	हम सोचेंगे।
.....	.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....	.....

प्रश्न : 5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर नमूने के अनुसार दीजिए :–

नमूना: आदेश किसने दिए ? (निदेशक)

आदेश निदेशक द्वारा दिए गए ।

(a) उत्तर का मसौदा किसने तैयार किया ? (विभाग)

.....

(b) फाइलें किसने मार्क कीं ? (अधीक्षक)

.....

(c) पदोन्नति का आदेश कौन जारी करता है ? (स्थापना अनुभाग)

.....

(e) ऋण की व्यवस्था कौन करता है ? (लेखा अनुभाग)

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

   ক) বানান

   খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

   গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

प्रश्न : 1. निम्नलिखित के बारे में दो-दो वाक्य लिखिए :-

इलायची

....

....

....

....

हींग

....

....

....

....

धनिया

....

....

....

....

ज़ीरा

....

....

....

....

प्रश्न : 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(1) कच्ची हल्दी का क्या उपयोग है ?

.....

.....

.....

(2) काली मिर्च में कौन से गुण हैं ?

.....

.....

.....

(3) तेज पत्ता कहाँ से मिलता है ?

.....

.....

.....

(4) पेड़ों के कटने से क्या हानि हुई है ?

.....

.....

.....

(5) पेड़-पौधे मिट्टी का कटाव कैसे रोकते हैं ?

.....

.....

.....

(6) प्रदूषित वायु को शुद्ध करने का मुख्य उपाय क्या है ?

.....

.....

.....

(7) योग दर्शन के प्रवर्तक कौन थे ?

.....

.....

.....

(8) अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कब होता है ?

.....

.....

.....

(9) योग से क्या लाभ है ?

.....

.....

.....

(10) अपनी प्रिय हिंदी फिल्म के बारे में चार वाक्य लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(11) अपनी भाषा के लोकप्रिय कलाकार के बारे में चार वाक्य लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न : 3. निम्नलिखित में से किन्ही दो विषयों पर 150-150 शब्दों में निबंध लिखिए :-

(1) सड़क दुर्घटना

(2) मेरा प्रिय मसाला

(3) ध्वनि प्रदूषण

विषय - 1 .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

विषय – 2 .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

   ক) বানান

   খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

   গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

प्रश्न : 1. (अ) निम्नलिखित शब्दों के बांग्ला समानार्थक शब्द लिखिए :-

सामाजिक जिम्मेदारी : ....

सुविधाएँ : ....

छायादार : ....

वृक्षारोपण : ....

मौसम : ....

शुभकार्य : ....

पारंपरिक : ....

अर्जित : ....

उपनिवेशवादी : ....

स्वास्थ्यवर्धक : ....

(आ) निम्नलिखित शब्दों के हिंदी समानार्थक शब्द लिखिए :-

প্রাচীনকাল : ....

ঔষধীয় : ....

নিয়ন্ত্রণ : ....

হীরে : ....

রন্ধন প্রনালী : ....

বায়ুমন্ডল : ....

ক্ষয় : ....

বিশ্বাস : ....

মূল : ....

উর্বর : ....

प्रश्न : 2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :-

(क) अगला .....

(ख) आखिरी .....

(ग) ऊँचा .....

(घ) दक्षिण .....

(ड.) पुराना .....

प्रश्न : 3. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए :-

(1) আমরা তোমার জন্য অপেক্ষা করছিলাম।

.....

(2) শাজাহান তাজমহল তৈরী করেছিলেন।

.....

(3) কেরলের শাড়ী সম্পর্কে তুমি শুনেছ হয়ত।

.....

(4) কাল সকাল সাতটায় সূর্য উঠবে।

.....

(5) সম্ভবত এটি একমাত্র নদী যা দক্ষিন থেকে উত্তরে বয়ে যাচ্ছে।

.....

प्रश्न : 4. निम्नलिखित वाक्यों के अशुद्ध शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए :-

(1) मनुष्य एक सामाजीक प्राणी है ।

.....

(2) यह आम की लकड़ि है ।

.....

(3) आज का मोसम बहुत सुहावना है ।

.....

(4) बाज़ार में विभिन्न प्रकार के फल बीक रहे थे ।

.....

(5) हमारी अवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं ।

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

ক) বানান

খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

सत्यमेव जयते

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग
পত্রাচার পাঠ্যক্রম বিভাগ
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
কেন্দ্রীয় হিন্দী নিদেশালয়

हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम (बांग्ला माध्यम)
হিন্দী ডিপ্লোমা পাঠ্যক্রম (বাংলা মাধ্যম)

उत्तर पत्र 17-20 **উত্তরপত্র 17-20**

उत्तरपत्र प्राप्ति तिथि { **छात्र / छात्री** : .....
নিদেশালয় : .....

प्राप्तांक **প্রাপ্তাংক**	**17**	..... / 20	**18**	..... / 20	**19**	..... / 20	**20**	..... / 20

आमादेर सङ्गे पत्राचारेर जन्य सर्वदा कोड सह निजेर रोल नं लिखुन

छात्र/छात्री निजेदेर कोड सह रोल नं एवं ठिकाना नीचे लिखुन

रोल नं /
রোল নম্বর

छात्र की मातृभाषा
শিক্ষার্থীর মাতৃভাষা .....

कु./श्रीमती/श्री / কু/শ্রীমতী/শ্রী .....

पता / ठिकाना .....

.....

.....

..... **पिन / PIN**

मूल्यांकन के लिए उत्तर पत्र इस पते पर भेजें:	**মূল্যায়নের জন্য উত্তরপত্র নিম্নলিখিত ঠিকানায় পাঠাবেন :**
उप निदेशक पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग केंद्रीय हिंदी निदेशालय पश्चिमी खंड-VII रामकृष्णपुरम नई दिल्ली-110066 (भारत)	The Deputy Director Dept. of Correspondence Courses Central Hindi Directorate West Block VII Rama Krishna Puram New Delhi - 110066 [INDIA]

उत्तरपत्रे उत्तर लेखार आगे पाठ सयत्ने पड़ुन

प्रश्न : 1. 'चंपा पढ़ लेना अच्छा है' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए ।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

प्रश्न : 2. कविता की निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :-

(क) चंपा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती
मैं जब पढ़ने लगता हूँ वह आ जाती है
खड़ी-खडी चुपचाप सुना करती है
उसे बड़ा अचरज होता है
इन काले-काले चिह्नों से कैसे ये सब स्वर
निकला करते हैं ।

....

....

....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(ख) मैंने कहा, चंपा पढ़ लेना अच्छा है
ब्याह तुम्हारा होगा, तुम गौने जाओगी
कुछ दिन बालम संग-साथ रह चला जाएगा जब कलकत्ता
बड़ी दूर है वह कलकत्ता
कैसे उसे संदेशा दोगी
कैसे उसके पत्र पढ़ोगी
चंपा पढ़ लेना अच्छा है ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न : 3. कविता के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(क) इस कविता के आधार पर बताइए कि गांधी जी की क्या इच्छा थी ?

.....

.....

.....

.....

(ख) कवि चंपा को पढ़ने के लिए कैसे प्रेरित करता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(ग) किसी लड़की को आप पढ़ने के लिए कैसे प्रेरित करेंगे ?

.....

.....

.....

.....

(घ) चंपा क्यों कहती है कि कलकत्ते (कलकत्ता) पर बजर गिरे ।

.....

.....

.....

.....

.....

(ङ) कवि चंपा से क्यों परेशान हो जाता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न : 4. निम्नलिखित वाक्यों के सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए ।

(क) हारे-गाढ़े का तात्पर्य है

(1) कठिन समय ☐

(2) हार का समय ☐

(3) विवाह का समय ☐

(ख) चंपा अपने बालम को संग-साथ रखना चाहती है क्योंकि

(1) कलकत्ता जाने के लिए उसके पास पैसे नहीं है । ☐

(2) कलकत्ता बहुत दूर है, उसे पत्र लिखना पड़ेगा । ☐

(3) कलकत्ता सुनसान जगह है । ☐

(ग) ''तुम कागद ही गोदा करते हो'' का अर्थ है ।

(1) कागज पर छेद करना ☐

(2) कागज पर लिखना ☐

(3) कागज को तोड़ना-मरोड़ना ☐

(घ) ''सब जन पढ़ना-लिखना सीखें'' किसने कहा

(1) चंपा ने ☐

(2) कवि ने ☐

(3) गांधी जी ने ☐

प्रश्न : 5. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए :-

अचरज

.....

.....

.....

ऊधम

.....

.....

.....

दैनिक

.....

.....

.....

परेशान

.....

.....

.....

ब्याह

.....

.....

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

   ক) বানান

   খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

   গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

पाठ 18 / পাঠ 18 }: समाचार पत्र

उत्तर पत्र / উত্তরপত্র }18

प्रश्न : 1. निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर समाचार बनाइए :-

(क) समुद्र में आया तूफान

(ख) कबड्डी मैच

(ग) सड़क दुर्घटना

.....

.....

.....

(घ) सफाई अभियान

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(ङ) मौसम

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(च) बाजार भाव

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न : 2. अपनी भाषा के दो और हिंदी भाषा के दो समाचार पत्रों के नाम लिखिए ।

अपनी भाषा के (1) .....

(2) .....

हिंदी भाषा के (1) .....

(2) .....

प्रश्न : 3. आपके क्षेत्र में अपनी भाषा और हिंदी भाषा का कौन-सा समाचार पत्र सबसे अधिक पढ़ा जाता है।

अपनी भाषा का .....

हिंदी भाषा का .....

प्रश्न : 4. समाचार पत्र पढ़ने का उपयोग क्या है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न : 5. समाचार पत्र में छपने वाले विज्ञापनों के बारे में आपके क्या विचार हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

   ক) বানান

   খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

   গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

पाठ 19 / पाठ 19 }: हम सब सुमन एक उपवन के — उत्तर पत्र / उत्तरपत्र }19

प्रश्न : 1. 'हम सब सुमन एक उपवन के' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न : 2. 'हम सब सुमन एक उपवन के' कविता के निम्नलिखित पदों की व्याख्या कीजिए :-

(1) एक हमारा माली, हम सब
रहते नीचे एक गगन के ।
हम सब सुमन एक उपवन के ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(2) एक सूत्र में बँधकर हमने
हार गले का बनना सीखा ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न : 3. निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए ।

(i) पवन के पलने में झूल-झूलकर कौन पला है ।

(क) माली ☐ (ख) कवि ☐ (ग) सुमन ☐

(ii) सबके लिए सुगंध हमारी का तात्पर्य है

(क) प्रेम बाँटना ☐ (ख) उपहार बाँटना ☐ (ग) फूल बाँटना ☐

प्रश्न : 4. पद्यांश की छूटी हुई पंक्ति लिखिए।

(1) एक हमारी धरती सबकी
..... ।

(2) मिली एक ही धूप हमें है
..... ।

(3) लेकिन हम सबसे मिलकर ही
..... ।

(4) कांटों में खिलकर हम सब ने
..... ।

(5) एक सूत्र में बंधकर हमने
..... ।

प्रश्न : 5. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो हिंदी पर्याय लिखिए :-

फूल ....

धरती ....

पवन ....

गगन ....

उपवन ....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

ক) বানান

খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর

प्रश्न : 1 नमूना के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों को जोड़कर एक वाक्य लिखिए। ध्यान रखें कि दोनों वाक्यों में व्यक्ति एक ही है।

नमूना : रामदास दफ्तर से लौटे। वे चारपाई पर लेट गए।
दफ्तर से लौटते ही रामदास चारपाई पर लेट गए।

(i) बच्चा स्कूल से आया। वह खेलने लगा।

....

(ii) चोर ने पुलिस को देखा। चोर भाग गया।

....

(iii) रीना ने दुकान में जलेबी देखी। वह पिता जी से पैसे माँगने लगी।

....

(iv) हमको टिकट मिला। हम सीट पर बैठ गए।

....

प्रश्न : 2 (क) निम्नलिखित हिंदी अनुच्छेद पढ़ें और इनके संक्षेपण तैयार करें :–

इस दुनिया में यही होता आया है कि सच बोलने वाला और इंसाफ की माँग करने वाला मारा जाता है। आज से हजारों साल पहले यूनान में एक दार्शनिक हुआ था। उसका नाम सुकरात था। उसकी बातें सीधी, सच्ची होती थीं। कुछ लोग उसकी बातें सही नहीं पाते थे इसके लिए उसको कानून के आदेश से जहर पीना पड़ा था। ईसा को अपने समय के सामाजिक और धार्मिक अनाचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाने के कारण सूली पर चढ़ना पड़ा था। सांप्रदायिकता को शांत करने और हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि सभी जातियों के लोगों में भाईचारा और आपसी प्रेम फैलाने के लिए गांधी जी को अपनी जान गँवानी पड़ी थी। अमरीका में वहाँ के काले लोगों को उनके रंग और जाति के कारण होने वाले दुर्व्यवहारों से बचाने और उन्हें समाज में उचित स्थान दिलाने के लिए मार्टिन लूथर किंग ने अहिंसात्मक आंदोलन चलाया था लेकिन लूथर किंग के अहिंसात्मक आंदोलन का कोई फल न हुआ और उनकी हत्या कर दी गई। आज संसार के सामने वही पुराना प्रश्न फिर खड़ा है कि "क्या दुनिया में सच बात कहने वालों और इंसाफ की माँग करने वालों का इसी प्रकार अंत होता रहेगा। जरा सोचिए, यदि इस प्रश्न का उत्तर 'हाँ' में है तो मनुष्य जाति का भविष्य कितना निराशापूर्ण होगा। लेकिन इससे यह भी न समझा जाए कि सच बात कहने वाले और न्याय माँगने वाले पैदा नहीं होंगे। होंगे, और जरूर होंगे।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(ख)

पर्यटकों के लिए भारत पृथ्वी का स्वर्ग है। भारत जैसी प्राकृतिक और भौगोलिक विविधता अन्य देशों में दुर्लभ है। इस देश के कई भाग ऐसे हैं जहाँ बहुत गर्मी पड़ती है और कुछ भाग ऐसे हैं जो बर्फ से ढके रहते हैं। दूर-दूर तक फैली हुई भारत की पर्वतश्रेणियाँ अपनी सुंदरता में निराली हैं। इस देश में नदियों, झीलों और सरोवरों की सुंदरता देखते ही बनती है। इसके अतिरिक्त भारत का समुद्र-तट बहुत विशाल और सुंदर है। यहाँ के अनेक स्थानों में सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य बड़ा ही मनोहर होता है। उदाहरण के लिए दार्जिलिंग, जगन्नाथपुरी आदि में सूर्योदय और द्वारका, माउंट आबू आदि का सूर्यास्त पर्यटकों के लिए बड़ा आकर्षक होता है। कन्याकुमारी में तो सूर्यास्त और सूर्योदय दोनों ही दर्शनीय हैं।

पर्यटकों के लिए हमारे देश में बहुत से आकर्षण हैं। कश्मीर तथा गोवा अपनी प्राकृतिक छटा और सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है। पर्यटकों का कहना है कि कश्मीर की घाटी जैसा सुंदर स्थान संसार में और कहीं नहीं है। बर्फीले पहाड़ों से घिरी इस घाटी के उत्तर में हिमालय की विशाल पर्वतमाला है। कश्मीर की दर्पण जैसी झीलें, चारों और फैली हरियाली, फूलों से लदी धरती, खुशबू से भरा वातावरण और कहीं नहीं मिलेगा। जबलपुर के पास नर्मदा नदी के किनारे भेड़ा घाट, संगमरमर की पहाड़ियाँ तथा धुआँधार जलप्रपात भी देखने के योग्य हैं।

ऐतिहासिक स्थलों में आगरे का विश्वप्रसिद्ध ताजमहल, दिल्ली में लाल किला, कुतुबमीनार और अशोक की लाट देखने योग्य है। दक्षिण भारत में विजयनगर तथा गोलकुंडा के किले भी देखने के योग्य हैं। महाराष्ट्र में अजंता और एलोरा की गुफाओं के भित्ति-चित्र अद्वितीय हैं।

भारत में वन्य-जीवन के प्रेमियों के लिए भी बहुत से सुंदर अभयारण्य हैं। जिनमें अनेक प्रकार के वन्य पशु-पक्षियों को उनके प्राकृतिक वातावरण में देखा जा सकता है। गिर के जंगलों के सिंह, बंगाल के बाघ और असम तथा मैसूर के हाथी पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न : 3 (क) दो कहानियों की रूपरेखाएँ नीचे दी गई हैं। इनको पूरी कहानी के रूप में लिखिए। उचित शीर्षक भी दीजिए।

शाम का समय ..... एक दार्शनिक ..... नाव में बैठना ..... नाव का उस पार बढ़ना ..... नाविक से पूछना ..... "जानते हो दर्शनशास्त्र क्या है ?" ..... नाविक का मना करना ..... दर्शनिक – "तुम्हारा एक चौथाई जीवन बेकार है।" ..... नाविक का मौन होना ..... "जानते हो संस्कृति क्या है ?" ..... नाविक का फिर मना करना ..... "तुम्हारा आधा जीवन व्यर्थ है ।" फिर पूछना, "जानते हो साहित्य क्या है ?" नाविक का फिर मजबूरी दरसाना ..... "तुम्हारा तीन चौथाई जीवन व्यर्थ है।" ..... अचानक बादल घुमड़ना ..... तेज वर्षा और आँधी ..... नाव का डगमगाना ..... नाविक का पूछना, "बाबूजी, तैरना जानते हो ?" दार्शनिक का उत्तर – "नहीं" ..... नाविक – "तब तो तुम्हारा पूरा जीवन बेकार है।"

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(ख) दो मित्र ..... दौलतराम अमीर, दयाराम गरीब दुकानदार ..... दयाराम का दौलतराम से वाराणसी चलने का आग्रह ..... दौलतराम का बार-बार टालना ..... एक दिन दोनों का वाराणसी प्रस्थान ..... मार्ग में एक गाँव ..... रात में एक झोंपड़ी में ठहरना ..... झोपड़ी में बुढ़िया उसका जवान बेटा और बेटे के दो छोटे बच्चे ..... सब बीमार ..... अगले दिन दयाराम का वहीं रुक जाना ..... दौलतराम का वाराणसी जाना ..... अनेक मंदिरों में देवी - देवताओं के दर्शन करना ..... एक महीने बाद वापस लौटना ..... उसी झोंपड़ी में रुकना ..... बुढ़िया से दयाराम के बारे में जानकारी लेना ..... बुढ़िया का दयाराम की भूरि-भूरि प्रशंसा करना ..... दौलतराम का सोचना ..... असली पुण्यात्मा तो दयाराम है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

মন্তব্য ও নির্দেশ

1. উন্নতি প্রয়োজন

   ক) বানান

   খ) ব্যাকরণ প্রসঙ্গে

   গ) গঠন রীতি

2. উত্তরপত্রের সাধারণ মূল্যায়ন

চমৎকার	অতি উত্তম	উত্তম	ভাল	মন্দ (উন্নতি প্রয়োজন)

মূল্যায়নকারীর নাম

মূল্যায়নকারীর তারিখসহ স্বাক্ষর